केन्द्रीय विद्यालय संगठन ,

सिलचर संभाग

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN,

SILCHAR REGION

हिन्दी-कोर (कोड सं.302)

HINDI-CORE (Code NO.302)

कक्षा-12 वीं / **CLASS** :XII

2024-25

न्यूनतम अध्ययन सामग्री

MINIMUM LEARNING MATERIAL

मुख्य संरक्षक:

श्रीमान पीआईटी राजा

उपायुक्त ,केन्द्रीय विद्यालय सगंठन -सिलचर संभाग

संरक्षक:

श्री सत्यवीर सिंह

सहायक उपायुक्त ,केन्द्रीय विद्यालय सगंठन -सिलचर संभाग

श्री अनंत कुमार सीत

सहायक उपायुक्त ,केन्द्रीय विद्यालय सगंठन -सिलचर संभाग

निर्माण एवं संयोजन – हिन्दी शिक्षक सिलचर संभाग

संयोजक एवं मार्गदर्शक : डॉ. हरपाल सिंह, प्राचार्य,पीएम श्री केंन्द्रीय विद्यालय मासिमपुर

पर्यवेक्षक : 1. श्री शिशपाल, स्नातकोत्तर शिक्षक(हिन्दी) पीएम श्री के.वि. करीमगंज

2. श्री अवनीश कुमार, स्नातकोत्तर शिक्षक(हिन्दी) पीएम श्री के.वि. मासिमपुर

3. श्री अजित कुमार सिंघल, स्नातकोत्तर शिक्षक(हिन्दी) पीएम श्री के.वि. सिलचर

4. श्री मुकेश कुमार, स्नातकोत्तर शिक्षक(हिन्दी) के.वि. उमरोई कैंट

सदस्य:

काव्य-खंड :

श्री राकेश कुमार पाण्डेय, स्नातकोत्तर शिक्षक(हिन्दी) के.वि. ओएनजीसी. अगरतला

श्री मुकेश कुमार, स्नातकोत्तर शिक्षक(हिन्दी) के.वि. उमरोई कैंट

गद्य-खंड :

1) श्री रामबच्चन यादव, स्नातकोत्तर शिक्षक(हिन्दी), पीएम श्री के.वि. कुंजबन

2) सुश्री निर्मला वर्मा, स्नातकोत्तर शिक्षिका(हिन्दी), के.वि. नेहू शिलांग

संपूरक पाठ्यक्रम :

1) श्री विकास बाबु, प्र. स्नातक शिक्षिका(हिन्दी), पीएम. श्री के. वि. एनआईटी अगरतला

2) सुश्री अम्बिका कुमारी, प्र. स्नातक शिक्षिका(हिन्दी), के.वि. कैलाशहर

अभिव्यक्ति एवं माध्यम:

1) श्री संजीव कुमार सिंह, स्नातकोत्तर शिक्षक(हिन्दी), के.वि. सी आर पी ऍफ़ अगरतला

2) श्री निम्बाराम , स्नातकोत्तर शिक्षक(हिन्दी), के.वि. आइजोल

विषय सूची/INDEX

क्रम सं.	पाठ्य विवरण	पृष्ठ सं.
	पाठ्यक्रम विनिर्देशन	3-4
1.	अपठित पद्यांश एवं गद्यांश	
2.	अभिव्यक्ति एवं माध्यम	5-23
	आरोह भाग - 2	23-49
3.	काव्य खण्ड	23-38
4.	गद्य खण्ड	38-49
5.	वितान	49-57

परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

हिंदी (आधार) (कोड सं. 302) कक्षा - 12वीं (2024-25)

- प्रश्न-पत्र तीन खण्डों- खंड क, ख, और ग में होगा।
- खंड - 'क ' में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे। सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।
- खंड - ख में अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्य पुस्तक के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे । प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगें।
- खंड - ग में आरोह भाग 2 तथा वितान भाग 2 पाठ्य पुस्तकों के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों के आंतरिक विकल्प दिए जाएँगें।

भारांक 100 **निर्धारित समय- 3 घंटे**

वार्षिक परीक्षा हेतु भार विभाजन

	खण्ड-क (अपठित बोध)	**18 अंक**
1	01 अपठित गद्यांश (लगभग 250 शब्दों का) परआधारित बोध, चिंतन, विश्लेषण पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे (बहुविकल्पीय प्रश्न 01अंकx03 प्रश्न=03अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 01 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 03 प्रश्न = 06 अंक)	10 अंक
2	01अपठित काव्यांश (लगभग 100 शब्दोंका) परआधारितबोध, सराहना, सौंदर्य चिंतन, विश्लेषण आदि पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछेजाएँगे। (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 01 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 02 प्रश्न = 04 अंक)	08 अंक
	खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक के आधार पर) पाठसंख्या 3, 4, 5, 11, 12 तथा 13 पर आधारित	22 अंक
3	दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 01 विषय परआधारित लगभग120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (06 अंक x 01 प्रश्न)	06 अंक
4	पाठ संख्या 3, 4, 5, 11 तथा 13 परआधारित (02 अंक x 04 प्रश्न = 08 अंक) (लगभग 40 शब्दोंमें), (04 अंक x 02 प्रश्न = 08 अंक) (लगभग 80 शब्दों में) (विकल्प सहित)	16 अंक
	खंड- ग	**40 अंक**

	(आरोह भाग-2 एवं वितान भाग-2 पाठ्य पुस्तकों के आधार पर)	
5	पठित काव्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
6	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
7	काव्य खंड परआधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
8	पठित गद्यांश परआधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01अंक x05 प्रश्न)	05 अंक
9	गद्य खंड परआधारित 03 प्रश्नों में से से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
10	गद्य खंड परआधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
11	वितान के पाठों परआधारित 03 में से 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग100 शब्दों में) (05 अंक x 02 प्रश्न)	10 अंक
12	(अ) श्रवण तथा वाचन (ब) परियोजना कार्य	10+10= 20 अंक
कुल अंक		**100 अंक**

सत्र 2024-25 हेतु निम्न अध्याय हटा दिए गए हैं

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	हटाए गए अध्याय	पृष्ठ संख्या	हटाए गए विषय/ अध्याय
1	आरोह भाग-2 काव्य खण्ड	सहर्ष स्वीकारा है	27-33	संपूर्ण अध्याय
		गज़ल	59-61	हटाए गए पाठ का अंश और उससे संबंधित अभ्यास प्रश्न
2	आरोह भाग-2 काव्य खण्ड	चार्ली चैपलिन यानी हम सब	118-127	संपूर्ण अध्याय
		नमक		संपूर्ण अध्याय
3	वितान भाग-2	डायरी के पन्ने	53-78	संपूर्ण अध्याय
4	अभिव्यक्ति और माध्यम	कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।		

अपठित पद्यांश एवं गद्यांश

प्र. सं	खंड - क (अपठित बोध)	18अंक
1.	निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-	10अंक
	'किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर उसकी आत्मा है।' यह उक्ति भारत के प्राचीन राष्ट्र के संदर्भ में और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। संस्कृति राष्ट्र के जीवन मूल्यों, आदर्शों, दर्शन आदि को मानसिक धरातल पर अभिव्यक्त करने का महत्त्वपूर्ण साधन है। भारत में इसके पीछे हजारों वर्षों के आचरण, व्यवहार, अनुभव, चिंतन, मनन आदि की पूंजी लगी हुई है। कालचक्र के सैकड़ों सुखद एवं दुखद घटनाक्रम के दौरान कसौटी पर खरे उतर कर उन्होंने अपनी सत्यता व विश्वसनीयता अनेक बार सिद्ध की है। त्याग, संयम, परहित एवं अहिंसा या जीवों पर दया आदि भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च मूल्यों में से है। संस्कृति एवं सभ्यता दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। अपने आयु, पद और अनुभव में बड़ों के प्रति आदर भाव, श्रद्धा व सम्मान रखना ही संस्कृति की आत्मा है, उसकी पहचान है। संस्कृति और उसके आदर्श एवं मूल्य एक दिन में निर्मित नहीं होते, वे हजारों वर्षों की अनुभूतियों तथा सिद्धातों के परिणाम होते हैं। इन आदर्शों व मूल्यों के आधार पर ही राष्ट्रीय संस्कृति निर्मित होती है। इसका निर्माण कार्य ही पर्याप्त नहीं, बल्कि उसका आचरण, व्यावहारिक ज़िंदगी में सहज रूप से अभिव्यक्त होना अर्थात उसका अंगीभाव हो जाना, संस्कृति कहलाता है। भारतीय संस्कृति का सर्वोच्च मूल्य त्याग है, यह मूल्य हमें पाश्चात्य संस्कृति तथा साम्यवादी संस्कृति की भोगवादी वृत्ति से दूर रखता है। इनकी इस भोगवादी संस्कृति ने आज संपूर्ण मानव जाति को विनाश के कगार पर पहुँचा दिया है और इसी प्रवृत्ति ने मनुष्य और प्रकृति के बीच एक खाई पैदा कर दी है भारतीय संस्कृति सर्वसमावेशक है, जीवमात्र में ईश्वर सत्ता की अनुभूति करने वाली है। भारतीय संस्कृति अपने सुखों के लिए दूसरों को नष्ट करने की बर्बरता नहीं रखती। भारतीय संस्कृति में विश्वास करने वाले लोग, राजा से भी अधिक उस संन्यासी को समादृत करते हैं, जो विश्व कल्याण के लिए संयम नियम का पालन करते हुए अपना सर्वस्वार्पण करते हैं।	
(क)	भारत में आचरण, व्यवहार, अनुभव, चिंतन और मनन आदि की पूंजी लगी हुई है' पंक्ति से आशय है? (अ)जीवन मूल्यों का महत्त्व (ब) ईश्वरीय सत्ता का योगदान (स) राष्ट्रीय संस्कृति की चेतना (द) त्याग का उदात्त रूप	1
(ख)	मनुष्य और प्रकृति के बीच खाई पैदा करने के महत्त्वपूर्ण कारण है- (अ)आधुनिकता(ब)भोगवादी दृष्टिकोण (स) प्रकृति के प्रति उदासीनता(द) लालची स्वभाव	1
(ग)	'संस्कृति के मूल में समाहित है।' इस कथन के मूलभाव हेतु निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए- (अ) एक राष्ट्र की आत्मा (ब) जीवन मूल्यों, दर्शन का आईना (स) पाश्चात्य जगत की भोगवादी संस्कृति (द)आधारभूत तत्वों का अवमूल्यन विकल्प (i) कथन (1) व (4) सही है। (ii) कथन (1) व (2) सही है। (iii) कथन (1), (2), (3) व (4) सही है। (iv) कथन (1) व (3) सही है।	1

(घ)	भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च मूल्य कौन-कौन से है?	1
(ड़)	संस्कृति और सभ्यता एक दूसरे के पूरक हैं। स्पष्ट कीजिए।	2
(च)	भारतीय संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति से किस प्रकार भिन्न है?	2
(छ)	राष्ट्रीय संस्कृति किन आदर्शों व मूल्यों के आधार पर निर्मित होती है? लिखिए।	2
2.	दिए गए पद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-	08अंक
	ले चल मांझी मझधार मुझे, दे दे बस अब पतवार मुझे । इन लहरों के टकराने पर, आता रह-रह कर प्यार मुझे ॥ मत रोक मुझे भयभीत न कर, मैं सदा कटीली राह चला । पथ -पथ मेरे पतझारों में, नव सुरभि भरा मधुमास पला ॥ फिर कहाँ डरा पाएगा यह, पगले जर्जर संसार मुझे । इन लहरों के टकराने पर, आता रह-रह कर प्यार मुझे ॥ मैं हूँ अपने मन का राजा, इस पार रहूँ, उस पार चलूँ । मैं मस्त खिलाड़ी हूँ ऐसा, जी चाहे जीतूँ या हार चलूँ ॥	मैं हूँ अबाध, अविराम, अथक, बंधन मुझको स्वीकार नहीं । मैं नहीं अरे ऐसा राही, जो बेबस-सा मन मार चलूँ ॥ कब रोक सकी मुझको चितवन, मदमाते कजरारे घन की । कब लुभा सकी मुझको बरबस, मधु-मस्त फुहारें सावन की ॥ जो मचल उठे अनजाने ही, अरमान नहीं मेरे ऐसे । राहों को समझा लेता हूँ सब बात सदा अपने मन की ॥ इन उठती - गिरती लहरों का, कर लेने दो श्रृंगार मुझे । इन लहरों के टकराने पर, आता रह-रह कर प्यार मुझे ।	
(क)	'इस पार रहूँ, उस पार चलूँ' - इस पंक्ति का आशय है - (अ) घर के अंदर रहे या बाहर रहे (ब) रुका रहे या चलना शुरू करे (स)इस लोक में रहूँ या परलोक में रहूँ (द) देश में रहे या विदेश में	1
(ख)	कवि को लहरों से टकराने में प्यार क्यों आता है? (अ)गर्मी में ठंडी लहरें उसे अच्छी लगती हैं| (ब)लहरों से टकराने में उसे कोई दर्द नहीं होता है | (स)उसे तैरना आता है । वह लहरों का आनंद लेता है । (द)वह लहर रूपी किसी भी संकट का सामना खुशी से करता है|	1
(ग)	"ले चल मांझी मझधार मुझे, दे दे बस अब पतवार मुझे" - कवि ऐसा क्यों कहता है? (अ)मांझी लहरों से डर गया है, इसलिए कवि स्वयं नाव चलाना चाहता है (ब) कवि मुसीबतों से स्वयं निपटना चाहता है (स)कवि मांझी के भरोसे नहीं रहना चाहता (द) कवि लहरों का आनंद लेना चाहता है	1
(घ)	किस पंक्ति में कवि पतझड़ को भी बसंत मान लेता है?	1
(ड़)	कविता के आधार पर कवि के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।	2
(च)	इस कविता का केंद्रीय भाव लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए।	2

अभिव्यक्ति एवं माध्यम

प्रकरण-3 विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

जनसंचार के प्रमुख माध्यम :- सबसे पहले प्रमुख जनसंचार माध्यम कौन-कौन से हैं? यह जान लेते हैं- जनसंचार माध्यमों में प्रिंट, टी.वी.,रेडियोऔर इंटरनेट प्रमुख है। जहाँ समाचारों को अखबारों में पढ़ा जाता है, वहीं टी.वी. पर देखा जाता है, रेडियोपर सुना जाता है और इंटरनेट पर समाचारों को पढ़ा, सुना या देखा जाता है अलग-अलग जनसंचार माध्यम और उनके लेखन के अलग-अलग तरीके है।

1. प्रिंट (मुद्रित) माध्यम

प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है। असल में आधुनिक युग की शुरुआत ही मुद्रण यानी छपाई के आविष्कार से हुई। हालाँकि मुद्रण की शुरुआत चीन से हुई, लेकिन आज हम जिस छापेखाने को देखते हैं, उसके आविष्कार का श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को जाता है। छापाखाना यानी प्रेस के आविष्कार ने दुनिया की तसवीर बदल दी।

यूरोप में पुनर्जागरण 'रेनेसाँ' की शुरुआत में छापेखाने की अह भूमिका थी। भारत में पहला छापाखाना सन 1556 में गोवा में खुला। इसे मिशनरियों ने धर्म-प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था।

प्रिंट (मुद्रित) माध्यम की खूबियाँ या विशेषताएँ

प्रिंट माध्यमों के वर्ग में अखबारों, पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि को शामिल किया जाता है।

प्रिंट माध्यमों के छपे शब्दों में स्थायित्व होता है।

हम उन्हें अपनी रुचि और इच्छा के अनुसार धीरे-धीरे पढ़ सकते हैं।

पढ़ते-पढ़ते कहीं भी रुककर सोच-विचार कर सकते हैं।

इन्हें बार-बार पढ़ा जा सकता है।

इसे पढ़ने की शुरुआत किसी भी पृष्ठ से की जा सकती है।

इन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रखकर संदर्भ की भाँति प्रयुक्त किया जा सकता है।

यह लिखित भाषा का विस्तार है, जिसमें लिखित भाषा की सभी विशेषताएँ निहित हैं।

प्रिंट (मुद्रित) माध्यम की सीमाएँ या कमियाँ

- निरक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम किसी काम के नहीं हैं।
- मुद्रित माध्यमों के लिए लेखन करने वालों को अपने पाठकों के भाषा-ज्ञान के साथ-साथ उनके शैक्षिक ज्ञान और योग्यता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है।
- पाठकों की रुचियों और जरूरतों का भी पूरा ध्यान रखना पड़ता है।
- ये रेडियो, टी०वी० या इंटरनेट की तरह तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते। ये एक निश्चित अवधि पर प्रकाशित होते हैं। जैसे अखबार 24 घंटे में एक बार या साप्ताहिक पत्रिका सप्ताह में एक बार प्रकाशित होती है।
- अखबार या पत्रिका में समाचारों या रिपोर्ट को प्रकाशन के लिए स्वीकार करने की एक निश्चित समय-सीमा होती है इसलिए मुद्रित माध्यमों के लेखकों और पत्रकारों को प्रकाशन की समय-सीमा का पूरा ध्यान रखना पड़ता है।

प्रिंट (मुद्रित) माध्यम में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें

- मुद्रित माध्यमों में लेखक को जगह (स्पेस) का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए। जैसे किसी अखबार या पत्रिका के संपादक ने अगर 250 शब्दों में रिपोर्ट या फ़ीचर लिखने को कहा है तो उस शब्द-सीमा का ध्यान रखना पड़ेगा। इसकी वजह यह है कि अखबार या पत्रिका में असीमित जगह नहीं होती।
- मुद्रित माध्यम के लेखक या पत्रकार को इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि छपने से पहले आलेख में मौजूद सभी गलतियों और अशुद्धयों को दूर कर दिया जाए क्योंकि एक बार प्रकाशन के बाद वह गलती या अशुद्ध वहीं चिपक जाएगी। उसे सुधारने के लिए अखबार या पत्रिका के अगले अंक का इंतजार करना पड़ेगा।
- भाषा सरल, सहज तथा बोधगम्य होनी चाहिए।
- शैली रोचक होनी चाहिए।
- विचारों में प्रवाहमयता एवं तारतम्यता होनी चाहिए।

2. रेडियो

रेडियो श्रव्य माध्यम है। इसमें सब कुछ ध्वनि, स्वर और शब्दों का खेल है। इन सब वजहों से रेडियो को श्रोताओं से संचालित माध्यम माना जाता है। रेडियो पत्रकारों को अपने श्रोताओं का पूरा ध्यान रखना चाहिए। दरअसल, रेडियो मूलत: एकरेखीय (लीनियर) माध्यम है और रेडियो समाचार बुलेटिन का स्वरूप, ढाँचा और शैली इस आधार पर ही तय होती है।

3. टेलीविजन

टी०वी० खबरों के विभिन्न चरण

किसी भी टी०वी० चैनल पर खबर देने का मूल आधार वही होता है जो प्रिंट या रेडियो पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रचलित है, यानी सबसे पहले सूचना देना। टी०वी० में भी ये सूचनाएँ कई चरणों से होकर दर्शकों के पास पहुँचती हैं। ये चरण हैं-

फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज-सबसे पहले कोई बड़ी खबर फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुँचाई जाती है। इसमें कम-से-कम शब्दों में महज सूचना दी जाती है।

ड्राई एंकर-इसमें एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहाँ, क्या, कब और कैसे हुआ। जब तक खबर के दृश्य नहीं आते तब तक एंकर दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारियों के आधार पर सूचनाएँ पहुँचाता है।

फोन-इन-इसके बाद खबर का विस्तार होता है और एंकर रिपोर्टर से फ़ोन पर बात करके सूचनाएँ दर्शकों तक पहुँचाता है। इसमें रिपोर्टर घटना वाली जगह पर मौजूद होता है और वहाँ से उसे जितनी ज्यादा-से-ज्यादा जानकारियाँ मिलती हैं, वह दर्शकों को बताता है।

एंकर-विजुअल-जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं, तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है, जो एंकर पढ़ता है। इस खबर की शुरुआत भी प्रारंभिक सूचना से होती है और बाद में कुछ वाक्यों पर प्राप्त दृश्य दिखाए जाते हैं।

एंकर-बाइट-बाइट यानी कथन। टेलीविजन पत्रकारिता में बाइट का काफ़ी महत्व है। टेलीविजन में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित बाइट दिखाई जाती है। किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही उस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखा और सुनाकर खबर को प्रामाणिकता प्रदान की जाती है।

लाइव-लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण। सभी टी०वी० चैनल कोशिश करते हैं कि किसी बड़ी घटना के दृश्य तत्काल दर्शकों तक सीधे पहुँचाए जा सकें। इसके लिए मौके पर मौजूद रिपोर्टर और कैमरामैन ओ०बी० वैन के जरिये घटना के बारे में सीधे दर्शकों को दिखाते और बताते हैं।

एंकर-पैकेज-एंकर-पैकेज किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का एक जरिया है। इसमें संबंधित घटना के दृश्य, उससे जुड़े लोगों की बाइट, ग्राफ़िक के जरिये जरूरी सूचनाएँ आदि होती हैं। टेलीविजन लेखन इन तमाम रूपों को ध्यान में रखकर किया जाता है।

4. इंटरनेट पत्रकारिता

इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर किसी भी रूप में खबरों, लेखों, चर्चा-परिचर्चाओं, बहसों, फ़ीचर, झलकियों, डायरियों के जरिये अपने समय की धड़कनों को महसूस करने और दर्ज करने का काम करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है।

अभ्यास हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्नः-

प्रश्न 1. प्रिंट माध्यम से आप क्या समझतेहैं?

उत्तर:- प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है। छापाखाना यानी प्रेस के आविष्कार ने दुनिया की तसवीर बदल दी। भारत में पहला छापाखाना सन् 1556 में गोवा में खुला। इसे मिशनरियों ने धर्मप्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था। तब से लेकर आज तक की मुद्रण तकनीक में बहुत बदलाव आया है और मुद्रित माध्यमों का विस्तार भी हुआ है। मुद्रित माध्यमों के तहत अखबार, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि हैं।

प्रश्न 2. उल्टा पिरामिड शैली से आप क्या समझते हैं?

उत्तर :- उलटा पिरामिड-शैली में समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है। इस शैली में किसी घटना/ विचार / समस्या का ब्योरा कालानुक्रम के बजाए सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरू होता है। तात्पर्य यह कि इस शैली में, कहानी की तरह क्लाइमेक्स अंत में नहीं बल्कि खबर के बिलकुल शुरू में आ जाता है। उलटा पिरामिड शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता। उलटा पिरामिड शैली के तहत समाचार को तीन हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है- इंट्रो, बॉडी और समापन। समाचार के इंट्रो या लीड को हिंदी में मुखड़ा भी कहते हैं। इस में खबर के मूल तत्व को शुरू की दो या तीन पंक्तियों में बताया जाता है। यह खबर का सबसे अहम हिस्सा होता है। इसके बाद बॉडी में समाचार के विस्तृत ब्योरे को घटते हुए महत्त्व क्रम में लिखा जाता है।

प्रश्न 3. इंटरनेट की पाँच खूबियाँ और पाँच खामियाँ लिखिए?

उत्तर - इंटरनेट की खूबियों निम्नलिखित है-

(i) यह मनोरंजन करता है तथा ज्ञान बढ़ाता है।

(ii) यह माध्यम और औज़ार दोनों का कार्य करता है।

(ii) खबरों के सत्यापन और पुष्टिकरण में इसका उपयोग होता है।

(iv) इंटरनेट एक स्थान पर रहकर विश्वभर का ज्ञान प्रदान करता है।

(v) चंद मिनटों में इंटरनेट विश्वव्यापी संजाल के भीतर से कोई भी पृष्ठभूमि खोजी जा सकती है।

इंटरनेट की खामियाँ निम्नलिखित हैं-

I. यह लत डालने वाला माध्यम है।

II. यह बच्चों को खेल कूद से दूर कर देता है।

III. इंटरनेट अश्लीलता, दुष्प्रचार व गंदगी को बढ़ावा देना है।
IV. यह एक महँगा माध्यम है।
V. यह अपव्यय का आधार है।
प्रश्न 4. जनसंचार के प्रचलित माध्यमों में से सबसे पुराना माध्यम क्या है? इसे स्थायी माध्यम क्यों कहा गया है?
उत्तर- जनसंचार के प्रचलित माध्यमों में से सबसे पुराना माध्यम प्रिंट मीडिया है। इसे मुद्रित माध्यम भी कहते हैं। जैसे- समाचार पत्र, पत्रिकाएँ आदि। मुद्रित माध्यम को स्थायी माध्यम इसलिए कहा गया है क्योंकि इसके छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है, इसे कभी भी और कितनी भी बार पढ़ा जा सकता है और इसे पढ़ते समय इस पर विचार-विमर्श भी किया जा सकता है। इसे कई महीनों सालों तक संभालकर रखा जा सकता है।
प्रश्न 5. मुद्रित माध्यमों हेतु लेखन करते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?
उत्तर :- 1. लेखन में भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शैली का ध्यान रखना ज़रूरी है। प्रचलित भाषा के प्रयोग पर ज़ोर रहता है।
2. समय-सीमाऔर आवंटित जगह के अनुशाशन का पालन करना हर हाल में जरूरी होता है।
3. लेखनऔर प्रकाशन के बीच गलतियों और अशुद्धियों को ठीक करना ज़रूरी होता है।
प्रश्न 6. रेडियो के लिए समाचार कॉपी तैयार करते हुए किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?
उत्तर- रेडियो के लिए समाचार कॉपी तैयार करते हुए कुछ बुनियादी बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।
(i) साफ-सुथरी और टाइट कॉपी की आवश्यकता होती है। रेडियो समाचार कानों के लिए यानी सुनने के लिए होते हैं, इसलिए उनके लेखन में इसका ध्यान रखना जरूरी हो जाता है।
(ii) प्रसारण के लिए तैयार की जा रही समाचार कॉपी को कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए। कॉपी के दोनों ओर पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए। एक लाइन में अधिकतम 12-13 शब्द होने चाहिए।
(iii) समाचार कॉपी में ऐसे जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्ताक्षर (एग्रीविएशस), अंक आदि नहीं लिखने चाहिए जिन्हें पढ़ने में जबान लड़खडाने लगे।
(iv) रेडियो समाचार में अत्यधिक आँकड़ों और का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, क्योंकि श्रोताओं के लिए उन्हें समझ पाना काफी कठिन होता है। आंकड़े तुलनात्मक हो तो बेहतर होता है।
प्रश्न 7. इंटरनेट पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?
उत्तर :- इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर यदि हम, किसी भी रूप में खबरों, लेखों, चर्चा-परिचर्चाओं, बहसों, फीचर, झलकियों, डायरियों के ज़रिये अपने समय की धड़कनों को महसूस करने और दर्ज करने का काम करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है।
रीडिफ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है जो कुछ गंभीरता के साथ इंटरनेट पत्रकारिता कर रही है। हिंदी में नेट पत्रकारिता 'वेबदुनिया' के साथ शुरू हुई।
'प्रभासाक्षी' नाम से शुरू हुआ अखबार, प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के लिहाज़ से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट बी.बी.सी. की है। अब माइक्रोसॉफट और वेब दुनिया ने यूनिकोड फौंट बनाए हैं।

प्रकरण-4 पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

फ़ीचर-लेखन में उलटा पिरामिड की बजाय फ़ीचर की शुरुआत कहीं से भी हो सकती है। जबकि विशेष रिपोर्ट के लेखन में तथ्यों की खोज और विश्लेषण पर जोर दिया जाता है। समाचार-पत्रों में विचारपरक लेखन के तहत लेख, टिप्पणियों और संपादकीय लेखन में भी विचारों और विश्लेषण पर जोर होता है।

पत्रकारीय लेखन क्या है?

परिभाषा- अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।
पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं-

1.पूर्णकालिक पत्रकार-इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन में कमकने वाले नाम बेनोग कर्मबारी होते हैं।
2.अंशकालिक पत्रकार-इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर एक निश्चित समयावधि के लिए कार्य करते हैं।
3.फ्रीलांसर पत्रकार-इस श्रेणी के पत्रकारों का संबंध किसी विशेष समाचार-पत्र से नहीं होता, बल्कि वे भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचार-पत्रों के लिए लिखते हैं।

साहित्यिक और पत्रकारीय लेखन में अंतर

पत्रकारीय लेखन का संबंध तथा दायरा समसामयिक और वास्तविक घटनाओं, समस्याओं तथा मुद्दों से होता है। यह साहित्यिकऔर सृजनात्मक लेखन-कविता, कहानी, उपन्यास आदि-इस मायने में अलग है कि इसका रिश्ता तथ्यों से होता है, न कि कल्पना से। पत्रकारीय लेखन साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन से इस मायने में भी अलग है कि यह अनिवार्य रूप से तात्कालिकता और अपने पाठकों की रुचियों तथा जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाने वाला लेखन है, जबकि साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन में लेखक को काफी छूट होती है।

समाचार कैसे लिखा जाता है :- समाचार-लेखन की विशेष शैली

उलटा पिरामिड शैली समाचार-लेखन की एक विशेष शैली है, जिसे उलटा पिरामिड शैली (इन्वर्टेड पिरामिड टी या स्टाइल) के नाम से जाना जाता है। यह समाचार-लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। यह शैली कहानी या कथा-लेखन की शैली के ठीक उलटी है, जिसमें क्लाइमेक्स बिलकुल आखिर में आता है। इसे 'उलटा पिरामिड शैली' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना यानी 'क्लाइमेक्स' पिरामिड के सबसे निचले उलटा पिरामिड में हिस्से में नहीं होती, बल्कि इस शैली में पिरामिड को उलट दिया जाता है।

हालाँकि इस शैली का प्रयोग 19वीं सदी के मध्य से ही शुरू हो गया था लेकिन इसका विकास अमेरिका में दौरान हुआ। उस समय संवाददाताओं को अपनी खबरें टेलीग्राफ़ संदेशों के ज् यूँ महँगी, अनियमित और दुर्लभ थीं। कई बार तकनीकी कारणों से सेवा ठप्प हो किसी घटना की खबर कहानी की तरह विस्तार से लिखने की बजाय संक्षेप में पिरामिड शैली का विकास हुआ और धीरे-धीरे लेखन और संपादन की सुविधा के की मानक (स्टैंडर्ड) शैली बन गई।

समाचार - लेखन और छह ककार :- किसी समाचार को लिखते हुए जिन छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है, वे हैं-

1. क्या हुआ? 2.किसके साथ हुआ? 3.कब हुआ? 4.कहाँ हुआ? 5.कैसे हुआ? 6.क्यों हुआ?

इस क्या, किसके (या कौन), कब, कहाँ, कैसे और क्यों को ही छह ककारों के रूप में जाना जाता है।
समाचार के मुखड़े तीन पंक्तियों में आमतौर पर तीन या चार ककारों -यानी पहले पैराग्राफ़ या शुरुआती दो (इंट्रो) को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है। ये चार ककार हैं- क्या, कौन, कब और कहाँ? इसके बाद समाचार की बॉडी में और समापन के पहले बाकी दो ककारों कैसे-' और क्योंका जवाब दिया जाता है। इस तरह छह ककारों -

क्या-के आधार पर समाचार तैयार होता है। इनमें से पहले चार ककार, कौन, कब और कहाँसूचनात्मक- और तथ्यों पर आधारित होते हैं जबकि बाकी दो ककारोंमें विवरणात्मक-कैसे और क्यों-, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर दिया जाता है।

फीचर

समकालीन घटना या किसी भी क्षेत्र विशेष की विशिष्ट जानकारी के सचित्र तथा मोहक विवरण को फ़ीचर कहा जाता है। इसमें तथ्यों को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसके संवादों में गहराई होती है। यह सुव्यवस्थित, सृजनात्मक व आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना तथा मनोरंजन करना होता है।फ़ीचर में विस्तार की अपेक्षा होती है। इसकी अपनी एक अलग शैली होती है। एक विषय पर लिखा गया फ़ीचर प्रस्तुति विविधता के कारण अलग अंदाज प्रस्तुत करता है। इसमें भूत, वर्तमान तथा भविष्य का समावेश हो सकता है। इसमें तथ्य, कथन व कल्पना का उपयोग किया जा सकता है। फ़ीचर में आँकड़े, फोटो, कार्टून, चार्ट, नक्शे आदि का उपयोग उसे रोचक बना देता है।

फीचर व समाचार में अंतर.

फ़ीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है। जबकि समाचार-लेखन में वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है।

फ़ीचर-लेखन में उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता। इसकी शैली कथात्मक होती है।

फ़ीचर-लेखन की भाषा सरल, रूपात्मक व आकर्षक होती है, परंतु समाचार की भाषा में सपाटबयानी होती है।

फ़ीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। ये आमतौर पर 200 शब्दों से लेकर 250 शब्दों तक के होते हैं, जबकि समाचारों पर शब्द-सीमा लागू होती है।

फ़ीचर का विषय कुछ भी हो सकता है, समाचार का नहीं।

फ़ीचर के प्रकार :- फ़ीचर के प्रकार निम्नलिखित हैं

समाचार फीचर, घटनापरक फीचर,खोजपरक फ़ीचर , व्यक्तिपरक फीचर, लोकाभिरुचि फ़ीचर, सांस्कृतिक फ़ीचर, साहित्यिक फीचर, विश्लेषण फीचर, विज्ञान फ़ीचर।

फीचर-लेखन संबंधी मुख्य बातें

(i)फ़ीचर को सजीव बनाने के लिए उसमें उस विषय से जुड़े लोगों की मौजूदगी जरूरी होती है।

(ii)फ़ीचर के कथ्य को पात्रों के माध्यम से बताना चाहिए।

(iii)कहानी को बताने का अंदाज ऐसा हो कि पाठक यह महसूस करें कि वे घटनाओं को खुद देख और सुन रहे हैं। (iv)फ़ीचर शोध रिपोर्ट नहीं है। फ़ीचर मनोरंजक व सूचनात्मक होना चाहिए।

(vi)इसे किसी बैठक या सभा के कार्यवाही विवरण की तरह नहीं लिखा जाना चाहिए।

(vii)फ़ीचर का कोई-न-कोई उद्देश्य होना चाहिए। उस उद्देश्य के इर्द-गिर्द सभी प्रासंगिक सूचनाएँ तथ्य और विचार गुंथे होने चाहिए।

(viii)फ़ीचर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित कथात्मक विवरण और विश्लेषण होता है।

(ix)फ़ीचर-लेखन का कोई निश्चित ढाँचा या फ़ॉर्मूला नहीं होता। इसे कहीं से भी अर्थात प्रारंभ, मध्य या अंत से शुरू किया जा सकता है।

(x)फ़ीचर का हर पैराग्राफ अपने पहले के पैराग्राफ से सहज तरीके से जुड़ा होना चाहिए तथा उनमें प्रारंभ से अंत तक प्रवाह व गति रहनी चाहिए।

(xi)पैराग्राफ छोटे होने चाहिए तथा एक पैराग्राफ में एक पहलू पर ही फोकस करना चाहिए।

विशेष रिपोर्ट - विशेष रिपोर्ट ऐसी रिपोर्ट होती है, जिसमे किसी घटना, समस्या या मुददे की गहरी छान-बीन की जाती है। उस से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों को इकट्ठा किया जाता है। तथ्यों के विश्लेषण के जरिए उसके नतीजे प्रभाव और कारणों को स्पष्ट किया जाता है।

विशेष रिपोर्ट के प्रमुख प्रकारः-

खोजी रिपोर्ट :- खोजी रिपोर्ट में रिपोर्टर मौलिक शोध और छानबीन के ज़रिये ऐसी सूचनाएँ या तथ्य सामने लाता है जो सार्वजनिक तौर पर पहले से उपलब्ध नहीं थीं। खोजी रिपोर्ट का इस्तेमाल आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।

इन डेप्थ रिपोर्ट :- इन-डेप्थ रिपोर्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है और उसके आधार पर किसी घटना, समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है।

विश्लेषणात्मक रिपोर्ट :- इसी तरह विश्लेषणात्मक रिपोर्ट में ज़ोर किसी घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों के विश्लेषण और व्याख्या पर होता है ।

विवरणात्मक रिपोर्ट :- विवरणात्मक रिपोर्ट में किसी घटना या समस्या के विस्तृत और बारीक विवरण को प्रस्तुत करने की कोशिश की जाती है।

विचार परक पत्रकारीय लेखन :- अखबारों में प्रकाशित होने वाले विचार पूर्ण लेखन से उनके वैचारिक रुझान का पता चलता है। उन्ही से अखबारों की छवि और पहचान होती है। विचार परक लेखन सम्पादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होते हैं। कुछ अखबारों में संपादकीय पृष्ठ के सामने भी विचार परक लेखन होते हैं। जिसमे लेख सम्पादकीय टिप्पणियाँ स्तम्भ लेखन आदि होते हैं।

सम्पादकीय लेखन :- संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को उस अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिए। अखवार किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते है। संपादकीय में किसी व्यक्ती विशेष का विचार नहीं होता। इसीलिए इसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जाता। संपादकीय लिखने का दायित्व अखबार में काम करने वाले संपादक और उनके सहयोगियों का होता है। आम तौर पर अखवारो में सहायक संपादक संपादकीय लिखते हैं। कोई बाहर का लेखक या पत्रकार संपादकीय नहीं लिख सकता।

आलेखः- सभी अखबार संपादकीय पृष्ठ पर सामयिक मुद्दोंपर वरिष्ठ पत्रकारों उन विषयों के विशेषज्ञों के लेख प्रकाशित होते हैं। लेख विशेष रिपोर्ट या फीचर से इस मामले में अलग है। उसमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है। लेकिन वे विचार तथ्यों और सूचनाओ पर आधारित होने चाहिए। लेख की शुरुआत में विषय के सबसे ताजा प्रसंग या घटना क्रम का विवरण दिया जाता है। इसके बाद तथ्यों की मदद से विश्लेषण और निष्कर्ष निकाला जाता है।

साक्षात्कार (इंटरव्यू):- पत्रकार एक तरह से साझात्कार के जरिये ही समाचार, फीचर, विशेष रिपोर्ट और अन्य कई तरह के पत्रकारी लेखन के लिए कच्चा माल इकट्ठा करते हैं। साक्षात्कार लिखने के दो तरीके है । पहला साक्षात्कार को जबाब-सवाल के जरिए लिख सकते हैं। दूसरा उसे आलेख की तरह लिख सकते हैं।

स्तंभ लेखन : - कुछ महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय लेखक अपने खास वैचारिक रूझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक जीवन शैली विकसित हो जाती है। ऐसी लेखकों की लो प्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा दे देते हैं। स्तंभ का विषय चुनने और उसमें अपना विचार व्यक्त करने को स्तंभकार को पूरी छूट होती है। वास्तव में स्तंभ लेखन नियमित विचारों की एक श्रृंखला होती है।

प्रकरण-5 विशेष लेखन-स्वरूप और प्रकार

अभ्यास हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्नः-

प्रश्न 1. विशेष लेखन और विशेष संवाद दाता किसे कहते हैं ?

उत्तरः विशेष लेखन किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन है, जिसमें विषय से संबंधित विस्तृत सूचनाएँ प्रदान की जाती हैं। जिन रिपोर्टरों द्वारा विशेषीकृत रिपोर्टिंग की जाती है, उन्हें विशेष संवाददाता कहते है

प्रश्न 2. डेस्क क्या है ?

उत्तरः समाचार पत्र, पत्रिकाओं, टीवी और रेडियो चैनलों में अलग-अलग विषयों पर विशेष लेखन के लिए निर्धारित स्थल को डेस्क कहते हैं और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का भी अलग समूह होता है। यथा-व्यापार तथा कारोबार के लिए अलग तथा खेल की खबरों के लिए अलग डेस्क निर्धारित होता है।

प्रश्न 4. बीट रिपोर्टर की रिपोर्ट कब विश्वसनीय मानी जाती है?

उत्तर- बीट रिपोर्टर को अपने बीट (क्षेत्र) की प्रत्येक छोटी-बड़ी जानकारी एकत्र करके कई स्रोतों द्वारा पुष्टि कर के विशेषज्ञता हासिल करना चाहिए। तब उसकी खबर विश्वसनीय मानी जाती है।

प्रश्न 5. विशेष लेखन की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : विशेष लेखन की भाषा-शैली सामान्य लेखन से अलग होती है। इसमें संवाददाता को संबंधित विषय की तकनीकी शब्दावली का जान होना आवश्यक होता है, साथ ही यह भी आवश्यक होता है कि वह पाठकों को उस शब्दावली से परिचित कराए जिससे पाठक रिपोर्ट को समझ सकें। विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती।

प्रश्न 7. विशेष लेखन क्यों किया जाता है?

उत्तर -विशेष लेखन इसलिए किया जाता है, क्योंकि इस से समाचार-पत्रों में विविधता आती है। पाठकों की व्यापक रुचियों को ध्यान में रखते हुए उनकी जिज्ञासा शांत करते हुए मनोरंजन करने के लिए विशेष लेखन किया जाता है।

प्रश्न 11. समाचार पत्रों और दूसरे जनसंचार माध्यमों को सामान्य समाचारों से अलग हटकर विशेष क्षेत्रों या विषयों के बारे में भी निरंतर और पर्याप्त जानकारी क्यों देनी पड़ती है?

उत्तर- एक समाचार पत्र या पत्रिका तभी संपूर्ण लगती है जब उसमें विभिन्न विषयों और क्षेत्रों के बारे में घटने वाली घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों के बारे में नियमित रूप से जानकारी दी जाए। इससे समाचार पत्रों में एक विविधता आती है। पाठकों की रुचियाँ बहुत व्यापक होती हैं और वे साहित्य से लेकर विज्ञान तक तथा कारोबार से लेकर खेल तक सभी विषयों पर पढ़ना चाहते हैं। इसलिए समाचार पत्रों और दूसरे जन संचार माध्यमों को सामान्य समाचारों से अलग हटकर विशेष क्षेत्रों या विषयों के बारे में भी निरंतर और पर्याप्त जानकारी देनी पड़ती है।

प्रश्न 12. बीट किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- खबरें भी कई तरह की होती हैं-राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फ़िल्म, कृषि, कानून, विज्ञान या किसी भी और विषय से जुड़ी हुई। संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ यह है कि उसका कार्यक्षेत्र अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करना है। अखबार की ओर से वह इनकी रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार और जवाबदेह भी है।

प्रश्न 13. विशेष लेखन क्या है? और इसमें पत्रकार को क्या ध्यान रखना होता है?
उत्तर- विशेष लेखन अर्थात किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग नहीं है। यह बीट रिपोर्टिंग से आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है जिसमें न सिर्फ़ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी आपका पूरा अधिकार होना चाहिए। सामान्य बीट रिपोर्टिंग के लिए भी एक पत्राकार को काफी तैयारी करनी पड़ती है। उदाहरण के तौर पर जो पत्राकार राजनीति में दिलचस्पी रखते हैं या किसी खास राजनीतिक पार्टी को कवर करते है तो पत्राकार को उस पार्टी के भीतर गहराई तक अपने संपर्क बनाने चाहिए और खबर हासिल करने के नए-नए स्रोत विकसित करने चाहिए। किसी भी स्रोत या सूत्र पर आँख मूँद कर भरोसा नहीं करना चाहिए और जानकारी की पुष्टि कई और स्रोतों के ज़रिये भी करनी चाहिए। यानी उस पत्राकार को ज्यादा से ज़्यादा समय अपने क्षेत्र के बारे में हर छोटी बड़ी जानकारी इकट्टी करने में बिताना पड़ता है तभी वह उस बारे में विशेषज्ञता हासिलकर सकता है और उसकी रिपोर्ट या खबर विश्वसनीय मानी जाती है।
प्रश्न 15. बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता का दर्जा क्यों दिया जाता है?
उत्तर- मान लीजिए शेयर बाजार में भारी गिरावट आती है तो उस बीट पर रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता उसकी एक तथ्यात्मक रिपोर्ट तैयार करेगा, जिसमें सभी ज़रूरी सूचनाएँ और तथ्य शामिल होंगे। लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता इसका विश्लेषण करके यह स्पष्ट करने की कोशिश करेगा कि बाजार में गिरावट क्यों और किन कारणों से आई है और इसका आम निवेशकों पर क्या असर पड़ेगा। यही कारण है कि बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता का दर्जा दिया जाता है।
प्रश्न 18. पत्रकारिता में विशेषज्ञता को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर - पत्रकारिता में विशेषज्ञता का अर्थ थोड़ा अलग होता है। यहाँ विशेषज्ञता से हमारा तात्पर्य एक तरह की पत्रकारीय विशेषज्ञता से है। पत्रकारीय विशेषज्ञता का अर्थ यह है कि व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि उस विषय या क्षेत्र में घटने वाली घटनाओं और मुद्दों की आप सहजता से व्याख्या कर सकें और पाठकों के लिए उनके मायने स्पष्ट कर सकें।

प्रकरण-11 कैसे करे कहानी का नाट्य रूपान्तर

अभ्यास हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्नः-
प्रश्न 1. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्यों को कैसे बाँटा जाता है?
उत्तर- कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्यों को कहानी की संरचना के अनुसार बाँटा जाता है। इसमें मुख्यतः तीन भाग होते हैं: प्रारंभ मध्य और अंत प्रारंभ में पत्रों और स्थान का परिचय दिया जाता है वहीं माध्यमिक कहानी की मुख्य समस्या या संघर्ष दिखाया जाता है और कहानी का अंत या समापन समस्या का समाधान और निष्कर्ष को लिए हुए होता है
इस प्रकार कहानी की संपूर्ण पटकथा को समय और स्थान के आधार पर विभिन्न दृश्यों में बाँटा जा सकता है। कथावस्तु के आधार पर दृश्यों को ऐसे बाँटा जाता है कि कहानी आगे बड़े दृश्य का एक-दूसरे से संबंध आवश्यक है। एक दृश्य दूसरे दृश्य की भूमिका तैयार कर मंच से प्रस्थान करता है। दृश्य को भाव अभिव्यक्ति के आधार पर भी बाँटा जाना चाहिए। सफल नाटक वही होता है जिनमें प्रत्येक दृश्य कहानी के विकास के साथ मेल खाता है और पात्रों के संवाद व मंच सज्जा के अनुसार तैयार किया जाता है।

प्रश्न 2. कहानी और नाटक एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। कैसे?
उत्तर- कहानी और नाटक वास्तव में एक ही सिक्के के दो पहलू हैं क्योंकि दोनों साहित्य की विधाएँ हैं और मानव जीवन, भावनाओं, तथा सामाजिक मुद्दों को प्रस्तुत करती हैं। कहानी और नाटक दोनों में पात्रों, भावनाओं और घटनाओं का चित्रण होता है। कहानी और नाटक दोनों में संवाद होते हैं, लेकिन नाटक में संवाद अधिक महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि अभिनय के माध्यम से उन्हें मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। कहानी और नाटक में आरंभ, मध्य और अंत की संरचना होती है, जिससे घटनाओं का क्रमबद्ध विकास होता है। दोनों का उद्देश्य पाठकों या दर्शकों तक किसी विचार, संदेश या अनुभव को पहुँचाना होता है। अंतर यह है कि कहानी केवल पढ़ने के लिए होती है, जबकि नाटक का उद्देश्य अभिनय द्वारा दृश्य रूप में कहानी को प्रस्तुत करना होता है।
प्रश्न 3. कहानी लिखने के मुख्य चरणों पर प्रकाश डालिए।
उत्तर- कहानी किसी भी समाज का दर्पण होता है। किसी विशेष परिस्थिति में, किसी विशेष घटना के साथ किसी विशेष परिवेश में लिखी कहानी का एक उद्देश्य होता है। कहानी लिखने के लिए सबसे पहले कथावस्तु की आवश्यकता होती है। कथा में मुख्य पात्रों की भूमिका घटना के आधार पर लिखी जाती है। घटनाओं की क्रमबद्धता कहानी को गति प्रदान करती है। मानव संवेदनाओं के मिले-जुले मिश्रण में लिखी कहानी सफल कहानी मानी जाती है, जिसमें हास्य, व्यंग्य, करुणा, दर्द, उद्देश्य व संदेश निहित होता है।

प्रश्न 4. कहानी और नाटक में क्या-क्या असमानताएँ होती हैं?
उत्तर- गद्य साहित्य की विधाओं में कहानी और नाटक दोनों प्रमुख विधाएँ हैं। वैसे तो कहानी और नाटक दोनों को पढ़ने पर मस्तिष्क में दोनों चित्र उभरते हैं परंतु इनमें बहुत अंतर होता है। कहानी का संबंध मात्र लेखक और पाठक से होता है जबकि नाटक का संबंध पटकथा पात्र निर्देशक दर्शक इत्यादि से होता है। कहानी कही जाती है, नाटक दर्शाए जाते हैं। कहानी में मात्र पुस्तक या कथा कहने वाले की आवश्यकता होती है, किंतु नाटक में मंच, लाइट, पात्र, मेकअप अभिनेता, निर्देशक इत्यादि की आवश्यकता होतीहै, नाटक के दृश्यों की छाप अधिक समय तक दर्शकों के मस्तिष्क पर रहती है। कहानी मस्तिष्क पटल पर समय के साथ धुंधली पड़ जाती है।

प्रश्न 5. कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के मुख्य सोपान या चरण कौन-कौन से हैं?
उत्तर- कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के अनेक चरण हैं। प्रत्येक पायदान का अपना महत्व है। कथावस्तु को देशकाल के आधार पर बाँटा जाता है उसके बाद कहानी में घटित होने वाली घटनाओं के अनुसार दृश्यों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। दृश्य नाटक को गति प्रदान करने वाले होने चाहिए। एक दृश्य दूसरे दृश्य की भूमिका तैयार करने वाला होना चाहिए अर्थात दृश्यों में तारतम्यता होनी चाहिए। फिर कहानी से संबंधित संवादों को लिखा जाता है। संवाद भाषा की कहानी के आधार पर होना चाहिए। जिस देश में कहानी लिखी गई हो, वैसी ही भाषा का चयन संवादों के लिए किया जाना चाहिए। ध्वनि व प्रकाश योजना भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नाटक की सफलता में मंच संचालन, मंच सज्जा इत्यादि नाटक के मुख्य चरण होते हैं, तभी कहानी का नाट्य रूपांतरण संपूर्ण ढंग से पूर्ण हो सकता है।
प्रश्न 6. कहानी और नाटक में मुख्य अंतर को पाटते हुए कहानी के नाट्य रूपांतरण में आने वाली समस्याओं का चित्रण कीजिए?

उत्तर- कहानी को नाटक में बदलते समय मुख्य अंतर यह है कि कहानी में वर्णन अधिक होता है, जबकि नाटक में संवाद और दृश्य प्रमुख होते हैं। इसे पाटते समय कुछ समस्याएँ आती हैं:
संवादों का अभाव: कहानी में वर्णन अधिक होता है, जिसे संवादों में ढालना कठिन होता है।
दृश्य सीमाएँ: कहानी में घटनाएँ कई जगहों पर हो सकती हैं, लेकिन नाटक में सीमित दृश्यों में यह दिखाना चुनौतीपूर्ण होता है।
समय-संयम: नाटक का समय सीमित होता है, इसलिए कहानी को संक्षिप्त करना पड़ता है।
भावनाओं की प्रस्तुति: कहानी की गहराई को संवाद और अभिनय के जरिए सटीकता से व्यक्त करना मुश्किल होता है।
इन समस्याओं का समाधान संवाद लेखन, दृश्य सज्जा, और कहानी को संक्षिप्त करने से किया जाता है।
प्रश्न 7. कहानी के नाट्य रूपांतरण की प्रक्रिया क्या है?
उत्तर- कहानी और नाटक गद्य साहित्य की अलग-अलग विधाएँ हैं, जिसमें एक समरूपता यह है कि दोनों में कथा के साथ ही विस्तार होता है। अकसर कहानी में संवाद नहीं होते परंतु नाटक की तो संवादों के बिना कल्पना ही नहीं की जा सकती। पहले कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए कथावस्तु को विभिन्न दृश्यों में बाँटकर उसका मंचीय प्रस्तुतीकरण तैयार करना चाहिए। दृश्यों के बाद पात्रों का चयन व पात्रों के संवादों का लेखन आरंभ होता है। कथावस्तु के अनुसार दृश्य, नाटक को गति प्रदान करते हैं। घटनाओं का दृश्यों में परिवर्तन ही नाटक की रूपरेखा तैयार करता है।
प्रश्न 8. कहानी में कथावस्तु की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण हैं?
उत्तर- कहानी में कथावस्तु सबसे महत्वपूर्ण तत्व होती है, क्योंकि यह कहानी की मूल संरचना और घटनाओं का क्रम निर्धारित करती है। कथावस्तु ही कहानी का विषय, पात्रों के बीच का संघर्ष, घटनाओं का विकास, और अंत में समाधान प्रस्तुत करती है। यह कहानी को रोचक और प्रभावी बनाती है तथा पाठक को बांधे रखती है। कथावस्तु के बिना कहानी में दिशा, उद्देश्य और प्रभाव का अभाव हो जाता है।
प्रश्न 9. कहानी के पात्र नाट्य रूपांतरण में किस प्रकार परिवर्तित किए जा सकते हैं?
उत्तर- कहानी के पात्र नाट्य रूपांतरण में निम्न प्रकार परिवर्तित किए जा सकते हैं-
नाट्य रूपांतरण करते समय कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता का नाटक के पात्रों से मेल होना चाहिए।
पात्रों की भाव-भंगिमाओं तथा उनके व्यवहार का भीउचित ध्यान रखना चाहिए।
पात्र घटनाओं के अनुरूप मनोभावों को प्रस्तुत करने वाले होने चाहिए।
पात्र अभिनय के अनुरूप होने चाहिए।
पात्रों का मंच के साथ मेल होना चाहिए।

प्रश्न 10. कहानी लिखते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है?
उत्तर- कहानी लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान रखना आवश्यक है-
दी गई रूपरेखा अथवा संकेतों के आधार पर ही कहानी का विस्तार करें।
कहानी में विभिन्न घटनाओं और प्रसंगों को संतुलित विस्तार दें। किसी प्रसंग को न अत्यंत संक्षिप्त लिखें, न अनावश्यक रूप से विस्तृत ।
कहानी का आरंभ आकर्षक होना चाहिए ताकि पाठक का मन उसे पढ़ने में रम जाए।
कहानी की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा प्रवाहमयी होनी चाहिए। उसमें क्लिष्ट शब्द तथा लंबे वाक्य न हों।
कहानी का उपयुक्त एवं आकर्षक शीर्षक होना चाहिए।

कहानी का अंत सहज ढंग से होना चाहिए। यहाँ ध्यान देने की बात है कि कहानी रोचक और स्वाभाविक हो। घटनाओं का पारस्परिक संबंध हो, भाषा सरल हो और कहानी से कोई न कोई उपदेश मिलता हो। अंत में, कहानी को एक अच्छा शीर्षक या नाम दे देना चाहिए।

प्रश्न 11. 'कहानी का केंद्र-बिंदु कथानक होता है।' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कहानी में प्रारंभ से अंत तक घटित सभी घटनाओं को कथानक कहते हैं। कथानक कहानी का प्रथम और महत्वपूर्ण तत्व होता है। यह कहानी का मूलाधार होता है। इसे कहानी का प्रारंभिक नक्शा भी कहते हैं जिस प्रकार कोई मकान बनाने से पहले उसका नक्शा बनाया जाता है, उसी प्रकार कहानी लिखने से पहले उसका कथानक लिखा जाता है। कथानक ही कहानी का केंद्र बिंदु होता है। सामान्यतः कथानक किसी घटना, अनुभव अथवा कल्पना पर आधारित होता है। कभी कहानीकार की बुद्धि में पूरा कथानक आता है और कभी कहानी का एक सूत्र आता है। केवल एक छोटा-सा प्रसंग अथवा पात्र कहानीकार को आकर्षित करता है। इसलिए कोई एक प्रसंग भी कहानी का कथानक हो सकता है और कोई एक छोटी-सी घटना भी कथानक की प्रमुख घटना हो सकती है। उसके बाद कहानीकार उस घटना अथवा प्रसंग का कल्पना के आधार पर विस्तार करता है। यह सत्य है कि कहानीकार की कल्पना कोरी कल्पना नहीं होती। यह कोई असंभव कल्पना नहीं होती, बल्कि ऐसी कल्पना होती है, जो संभव हो सके। कल्पना के विस्तार के लिए लेखक के पास जो सूत्र होता है, उसके माध्यम से ही कल्पना आगे बढ़ती है। यह सूत्र लेखक को एक परिवेश, पात्र और समस्या प्रदान करता है। उनके आधार पर लेखक संभावनाओं पर विचार करता है और एक ऐसा काल्पनिक ढाँचा तैयार करता है, जो संभव हो सके और लेखक के उद्देश्यों से भी मेल खा सके। सामान्यतः कथानक में प्रारंभ, मध्य और अंत के रूप में कथानक का पूर्ण स्वरूप होता है। संपूर्ण कहानी कथानक के इर्द-गिर्द घूमती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कथानक कहानी का केंद्र-बिंदु होता है।

प्रश्न 12. कहानी और नाटक में क्या-क्या समानताएँ हैं?

कहानी	नाटक
(i) कहानी का केंद्रबिंदु कथानक होता है।	(i) नाटक का केंद्रबिंदु कथानक होता है।
)ii) इसमें एक कहानी होती है।	(ii) नाटक में भी एक कहानी होती है।
(iii) इसमें पात्र होते हैं।	(iii) नाटक में भी पात्र होते हैं।
(iv) इसमें परिवेश होते हैं।	(iv) नाटक में भी परिवेश होता है।
(v) इसमें क्रमिक विकास होता है।	(v) नाटक का भी क्रमिक विकास होता है।
(vi) इसमें संवाद होते हैं।	(vi) नाटक में भी संवाद होते हैं।
(vii) इसमें पात्रों के मध्य द्वंद्व होता है।	(vii) नाटक में भी पात्रों के मध्य दुबंदूव होता है।
(vii) इसमें एक उद्देश्य निहित होता है	(viii) नाटक में भी एक उद्देश्य निहित होता है।
(ix) कहानी का चरमोत्कर्ष होता है।	(ix) नाटक का भी चरमोत्कर्ष होता है।

प्रश्न 13. 'कहानीकार द्वारा कहानी के प्रसंगों या मानसिक द्वंद्वों के विवरण के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति में काफी समस्या आती है।' इस कथन के संदर्भ में नाट्य-रूपांतरण की किन्हीं तीन चुनौतियों का उल्लेख कीजिए?

उत्तर- नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार हैं-

(i) सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिकद्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति में करने में समस्या आती है।

(ii) पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है।
(iii) संवादों को नाटकीय रूप प्रदान
(iv) संगीत ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है। (v) कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है।

प्रश्न 14. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन कैसे करते हैं?
अथवा
कहानी का नाट्य रूपातंरण करते समय दृश्य विभाजन किन आधारों पर किया जाता है?
उत्तर- कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन निम्न प्रकार से करते हैं-
कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते हैं।
प्रत्येक दृश्य कथानक के अनुसार बनाया जाता है।
एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक दृश्य में लिया जाता है।
दूसरे स्थान और समय पर घट रही घटना को अलगदृश्यों में बाँटा जाता है।
दृश्य विभाजन करते समय कथाक्रम और विकास का भी ध्यान रखा जाता है।

प्रश्न 15. कहानी और नाटक के समान तत्वों का उल्लेख करते हुए बताइए कि दोनों में क्या अंतर है?
उत्तर- कहानी और नाटक के समान तत्व कहानी और नाटक दोनों का केंद्र बिंदु कथानक होता है। दोनों में ही एक कहानी, पात्र, परिवेश एक उद्देश्य और संवाद होते हैं। कहानी और नाटक दोनों का क्रमिक विकास होता है।
कहानी और नाटक में अंतर :-

कहानी	नाटक
(i) कहानी का संबंध लेखक और पाठक से होता है	(i) जबकि नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, दर्शकऔर श्रोताओं से होता है।
(ii) कहानी कही या पढ़ी जाती है	(ii) जबकि नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है।
(iii) कहानी को आरंभ, मध्य और अंत के आधार पर बाँटा जाता है,	(iii) जबकि नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है।
(iv) कहानी में मंच सज्जा, संगीत तथा प्रकाश का कोई महत्व नहीं है	(iv) जबकि नाटक में मंच सज्जा, संगीत तथा प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्व होता है।

प्रश्न 16. कहानी का अर्थ स्पष्ट कीजिए और उसके इतिहास पर प्रकाश डालिए?
उत्तर- किसी घटना पात्र एवं समस्या का क्रमबद्ध वर्णन कहानी कहलाता है। जिसमें परिवेश हो, कथा का क्रमिक विकास हो, कथा में चरम उत्कर्ष का बिंदु हो उसे कहानी कहा जाता है। कहानी का इतिहास उतना ही पुराना है जितना पुराना मानव इतिहास है। कहानी मानव स्वभाव की प्रकृति का हिस्सा है। कहानी कहने की आदिम कला का धीरे-धीरे विकास हुआ। आदिम समय में भी कथावाचक कहानी सुनाते थे। कहानी सुनाते- सुनाते उसमें कल्पना का समावेश होने लगा था।

प्रश्न 17. कहानी लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
उत्तर- कहानी लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-
(i) कहानी का आरंभ आकर्षक होना चाहिए ताकि पाठक का मन उसमें पूरी तरह रम जाए।
(ii) कहानी में विभिन्न घटनाओं और प्रसंगों को संतुलित विस्तार देना चाहिए। किसी प्रसंग को न तो संक्षिप्त

लिखा जाए और न ही अनावश्यक रूप से विस्तृत किया जाए।
(iii) कहानी की भाषा सरल, सहज व स्वाभाविक होनी चाहिए। उसमें कठिन शब्द व लंबे वाक्य नहीं होने चाहिए।
प्रश्न 18. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
उत्तर- (i)कथानक के अनुसार ही दृश्य दिखाए जाने चाहिए।
(ii)नाटक के दृश्य बनाने से पहले उसका खाका तैयार करना चाहिए।
(iii)नाटकीय संवादों का कहानी के मूल संवादों के साथ मेल होना चाहिए।
(iv)कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण में एक निश्चित स्थान मिलना चाहिए।
(v)संवाद सहज, सरल, संक्षिप्त, सटीक, प्रभावशैली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।
(vi)संवाद अधिक लंबे और ऊबाऊ नहीं होने चाहिए।
प्रश्न 19. नाटक के प्रमुख तत्व कौन से हैं ? नाटक के तत्व बताते हुए किसी एक तत्व की व्याख्या कीजिए।
उत्तर :- (i) कथावस्तु (ii) पात्र एवं चरित्र-चित्रण
(iii) संवाद (iv) भाषा शैली
(v) देशकाल एवं वातावरण (vi) अभिनेयता
संवाद :- संवाद नाटक के प्राण होते हैं। संवाद छोटे-छोटे और पात्रों के अनुकूल होने चाहिएँ। संवाद नाटक की पृष्ठभूमि के अनुकूल होने चाहिएँ। संवाद नाटक की गति को आगे बढ़ाने वाले होने चाहिएँ।
प्रश्न 20. कहानी का नाट्य-रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन किस प्रकार किया जाता है ?
उत्तर- कहानी का नाट्य-रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन इस प्रकार किया जाता है -
(i) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते हैं।
(ii) प्रत्येक दृश्य कथानक के अनुसार होना चाहिए।
(iii) एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक दृश्य में लिया जाता है।
(iv) दूसरे स्थान और समय पर घट रही घटना को अलग दृश्यों में बांटा जाता है।
(v)कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।
(vi)कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।
(vii)ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।
(viii)कथावस्तु के अनुरूप मंच सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।
(ix)पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है।
(x)संवादों को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।

प्रकरण-12 कैसे बनता हैं रेडियो नाटक

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. दृश्य श्रव्य माध्यमों की तुलना में श्रव्य माध्यम की क्या सीमाएं हैं? इन सीमाओं को किस तरह पूरा किया जा सकता है?
उत्तर - दृश्य श्रव्य माध्यमों की तुलना में श्रव्य माध्यम की निम्नलिखित सीमाएं हैं-
दृश्य श्रव्य माध्यम में हम नाटक को अपनी आंखों से देख भी सकते हैं और पात्रों के संवादों को सुन भी सकते हैं परन्तु केवल श्रव्य माध्यम में हम सुन सकते हैं उसे देख नहीं सकते।
दृश्य श्रव्य माध्यम में हम पत्रों के हाव भाव देखकर उनकी दशा का अनुमान लगा सकते हैं परन्तु श्रव्य माध्यम में ऐसा कर पाना कठिन होता है।

दृश्य श्रव्य माध्यम में पात्रों के सुंदर वस्त्रों को देखा जा सकता है और पात्रों के सौंदर्य को देख सकते हैं परन्तु श्रव्य माध्यम में हम इनकी केवल कल्पना ही कर सकते हैं।
दृश्य श्रव्य माध्यम में किसी भी दृश्य तथा वातावरण को देखकर उस जगह का आनंद उठा सकते हैं परन्तु श्रव्य माध्यम में हर दृश्य को प्रस्तुत करने के लिए ध्वनि व् संगीत की सहायता ली जाती है।
दृश्य श्रव्य माध्यमों की तुलना में श्रव्य माध्यम में समय की सूचना तथा पात्रों के चरित्र का उद्घाटन भी संवादों के माध्यम से ही होता है।
दृश्य श्रव्य माध्यमों की तुलना में श्रव्य माध्यम की सभी सीमाओं को ध्वनि व् संगीत के माध्यम से ही पूरा किया जा सकता है।

प्रश्न 2. रेडियो के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें लिखिए।
उत्तर - रेडियो के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें -
नाट्य आंदोलन के विकास में रेडियो नाटक की अहम भूमिका रही है!
सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो एक दृश्य माध्यम नहीं, श्रव्य माध्यम है।
रेडियो की प्रस्तुति संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से होती है।
फिल्म की तरह रेडियो में एक्शन की गुंजाइश नहीं होती।
चूँकि रेडियो नाटक की अवधि सीमित होती है इसलिए पात्रों की संख्या भी सीमित होती है क्योंकि सिर्फ आवाज़ के सहारे पात्रों को याद रख पाना मुश्किल होता है।
पात्र सबंधी विविध जानकारी संवाद एवं ध्वनि संकेतों से उजागर होती है।

प्रश्न 3. रेडियो नाटक की कहानी चुनते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए?
उत्तर- कहानी मौलिक हो या चाहे किसी और स्रोत से ली हुई। उसमें निम्न बातों का ध्यान शरूर रखना होगा:-
कहानी ऐसी न हो जो पूरी तरह से एक्शन अर्थात हरकत पर निर्भर करती हो क्योंकि रेडियो पर बहुत ज्यादा एक्शन सुनाना उबाऊ हो सकता है।
रेडियो नाटक की अवधि 15 मिनट से 30 मिनट होती है। श्रव्य माध्यम में नाटक या वार्ता जैसे कार्यक्रमों के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15-30 मिनट ही होती है।
पात्रों की संख्या सीमित हो। श्रोता सिर्फ़ आवाज के सहारे चरित्रों को याद रख पाता है, ऐसी स्थिति में रेडियो नाटक में यदि बहुत श्यादा किरदार हैं तो उनके साथ एक रिश्ता बनाए रखने में श्रोता को दिक्कत होगी। 15 मिनट की अवधि वाले रेडियो नाटक में पात्रों की अधिकतम संख्या 5-6 हो सकती है।

प्रश्न 4. रेडियो नाटक की क्या अवधारणा है?
उत्तर :- रेडियो श्रव्य माध्यम है। कुछ दशक पूर्व तक टेलीविज़न और कंप्यूटर नहीं थे। सिनेमाहॉल और थियेटर थे, पर उनकी संख्या बहुत कम थी। ऐसी स्थिति में रेडियो ही मनोरंजन का सस्ता और सुलभ साधन था।
नाटक का रंगमंच से सीधा संबध है परंतु रेडियो नाटक रंगमंच के लिए या मंचन के लिए नहीं लिखा जाता। श्रव्य माध्यम (रेडियो) पर इस नाटक का प्रसारण होता है। यह दृश्य से वंचित हो जाता है।

प्रश्न 5. रेडियो नाटक का क्या महत्व है ?

उत्तरः- प्रसिद्ध साहित्यकार रचना के साथ-साथ रेडियो के नाटक भी लिखते थे। हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के नाट्य आंदोलन के विकास में रेडियो नाटक बेहद अहम रहे है। हिंदी के कई नाटक जो रंगमंच पर अभिनीत किए गए, अत्यंत सफ़ल रहे। इनमे धर्मवीर भारती द्वारा रचित 'अंधायुग' और मोहन राकेश का 'आषाढ़ का एक दिन' इसके श्रेष्ठ उदाहरण है।

प्रश्न 6. रेडियो नाटक के लिए कहानी लिखते समय किन किन तथ्यों का ध्यान रखा जाना अपेक्षित है?

उत्तर:-रेडियो नाटक के लिए कहानी स्वरचित हो या किसी अन्य स्रोत से ली गई हो उसमे निम्नलिखित तथ्यों को अवश्य दृष्टिगत रखना चाहिए :

कहानी पूरी तरह से एक्शन पर आधारित नहीं होनी चाहिए, क्योकि रेडियो पर अधिक ध्वनि आधारित एक्शन उबाऊ हो सकता है। अतः मात्र घटना प्रधान कथा का चयन नहीं करना चाहिए।

रेडियो नाटक की अवधि 15-30 मिनट की होनी चाहिए।

यदि कहानी लम्बी है तो वह एक धारावाहिक के रूप में प्रस्तुत की जा सकती है। जिसकी हर कड़ी की अवधि 15 मिनट या 30 मिनट की हो सकती है।

रेडियो नाटक में पात्रो की संख्या सीमित होनी चाहिए।

प्रश्न 7. सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या समानताएँ होती हैं?

उत्तर- सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में अनेक समानताएँ हैं जो इस प्रकार है-

रेडियो नाटक	सिनेमा और रंगमंच
.1रेडियो नाटक में भी एक ही कहानी होती है।	.1सिनेमा और रंगमंच में एक कहानी होती है।
.2इनमें कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता है।	.2इसमें भी कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता है।
.3इसमें भी चरित्र होते हैं। (पात्र)	.3इसमें भी चरित्र होते हैं। (पात्र)
.4इनमें पात्रों के आपसी संवाद होते हैं।	.4इसमें भी पात्रों के आपसी संवाद होते हैं।
.5इनमें पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और अंत में समाधान।	.5इसमें भी पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और समाधान प्रस्तुत किया जाता है।
.6इनमें पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है।	.6इनमें भी पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है।

प्रश्न 8. सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या असमानताएँ हैं?

उत्तर-सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में अनेक समानताएँ होते हुए भी कुछ असमानताएँ हैं जो इस प्रकार है-

सिनेमा और रंगमंच	रेडियो नाटक
.1सिनेमा और रंगमंच दृश्य माध्यम है।	.1रेडियो नाटक एक श्रव्य माध्यम है।
.2इनमें मंचसज्जा का बहुत -सज्जा और वस्त्र-महत्त्व होता है।	.2इसमें इनका कोई महत्त्व नहीं होता।
.3इनमें पात्रों की भावभंगिमाएँ विशेष महत्त्व - रखती हैं।	.3इसमें भावभंगिमाओं की कोई आवश्यकता नहीं - होती।
.4इनमें कहानी को पात्रों की भावनाओं को अभिनय के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।	.4इसमें कहानी को ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है।

प्रश्न 9. रेडियो नाटक की कहानी में किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है ?

उत्तर- रेडियो नाटक में कहानी संवादों तथा ध्वनि प्रभावों पर ही आधारित होती है। इसमें कहानी का चयन करते समय अनेक बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार है :-

1. कहानी एक घटना प्रधान न हो- रेडियो नाटक की कहानी केवल एक ही घटना पर आधारित नहीं होनी चाहिए क्योंकि ऐसी कहानी श्रोताओं को थोड़ी देर में ही ऊबाऊ बना देती है जिसे श्रोता कुछ देर पश्चात् सुनना पसंद नहीं करते इसलिए रेडियो नाटक की कहानी में अनेक घटनाएँ होनी चाहिए।
2. अवधि सीमा- सामान्य रूप से रेडियो नाटक की अवधि पंद्रह से तीस मिनट तक हो सकती है। रेडियो नाटक की अवधि इससे अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि रेडियो नाटक को सुनने के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15 से 30 मिनट तक की होती है, इससे ज्यादा नहीं। दूसरे रेडियो एक ऐसा माध्यम है जिसे मनुष्य अपने घर में अपनी इच्छा अनुसार सुनता है। इसलिए रेडियो नाटक की अवधि सीमित होनी चाहिए।
3. पात्रों की सीमित संख्या- रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए। इसमें पात्रों की संख्या 5-6 से अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि इसमें श्रोता केवल ध्वनि के सहारे ही पात्रों को याद रख पाता है। यदि रेडियो नाटक में अधिक पात्र होंगे तो श्रोता उन्हें नहीं रख सकेंगे। इसलिए रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए।

प्रश्न 10. रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का क्या महत्त्व है?
अथवा
रेडियो नाटक की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए?
उत्तर- रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का विशेष महत्त्व है जो इस प्रकार हैं-
रेडियो नाटक में पात्रों से संबंधित सभी जानकारियाँ संवादों के माध्यम से मिलती हैं।
पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ संवादों के द्वारा ही उजागर होती हैं
नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता है।
इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है।
संवादों के माध्यम से ही रेडियो नाटक का उद्देश्य स्पष्ट होता है।
संवादों के द्वारा ही श्रोताओं को संदेश दिया जाता है

प्रकरण-13 नए और अप्रत्याचित विषयों पर लेखन

सारांश :- जिन विषयों पर आपने कभी आशा नहीं की हो, उन पर लेखन कार्य करना ही अप्रत्याशित विषय पर लेख है। वास्तविक अर्थों में अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुघड़ ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है। अप्रत्याशित विषयों पर लेखन क्या है। ऐसे विषय जिसकी आपने कभी आशा भी न की हो उस पर लेखन कार्य करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है।
प्रश्नः1 अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से क्या लाभ हैं?
उत्तर : अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से निम्नलिखित लाभ हैं:
ये आपकी मौलिक रचना होगी।
इसमें आप अपने विचारों को किसी तर्क, विचार के माध्यम से पुष्ट करने की कोशिश करेंगे।
इससे आपके लेखन कौशल में अत्यधिक विकास होगा।
इससे भाषा पर आपकी अच्छी पकड़ बनेगी।
अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुघड़ ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है।

प्रश्नः 2 अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के कुछ नियम बताइए ।

अथवा

नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में कौन-कौन सी बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तरः अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के कुछ नियम इस प्रकार हैं :-

अप्रत्याशित विषयों के लेखन में 'मैं' शैली का प्रयोग करना चाहिए।

विषय पर लिखने से पहले लेखक को अपने मस्तिष्क में उसकी एक उचित रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

विवरणऔर विवेचन सुसंबद्ध और सुसंगत हो।

भाषायी शुद्धता पर विशेष ध्यान दें।

मौलिकता और रचनात्मकता दिखाएं।

प्रभावी भाषा और प्रवाह को बनाएंगे।

कथन या विचारों की पुनरावृत्ति न हो।

विषय से जुड़े तथ्यों से उचित तालमेल होना चाहिए।

विचार विषय से सुसम्बद्ध तथा संगत होने चाहिए।

जिस विषय पर लिखना है लेखक को उसकी संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

लेखन का प्रारंभ जितना रुचिकर और आकर्षक होगा, उसका स्वरुप भी उतना ही प्रभावी होगा।

अप्रत्याशित विषयों पर लिखते समय लेखक को विषय से हटकर अपनी विद्वता को प्रकट नहीं करना चाहिए।

प्रश्नः 3 नए औरअप्रत्याशित विषयों पर लेखन में आनेवाली कठिनाइयों और उनके निवारण का उल्लेख कीजिए ।

उत्तरः नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है :

विषय से जुड़ी जानकारियों और तथ्यों का अभाव।

शब्द-भण्डार के अल्पज्ञान के कारण मन के विचारों को शब्दबद्ध करने की कठिनाई।

लेखन की बनी बनाई लीक छोड़कर कुछ नया करने में आत्मविश्वास की कमी।

पठन-पाठन का अभ्यास न होना।

लेखन का अभ्यास न होने से शुद्ध और समय-सीमा में लिखने की असमर्थता।

भाषा के प्रति उपेक्षा या अरूचि से वाक्य-निर्माण या लेखन दोषपूर्ण होना।

निवारण -

पत्र-पत्रिकाओं, समाचारपत्रका अध्ययन, अपने आस-पास हो रही घटनाओं की जानकारी रखें।

अपनी बात को बिना झिझक परन्तु समुचित ढंग से प्रकट करने का आत्मविश्वास हो तो लेखन में आने वाली कठिनाइयाँ आसान हो जाएंगी।

अध्ययन और श्रवण केसाथ-साथ समुचित लेखन का भी अभ्यास आवश्यक है अन्यथा मन में विचारों की प्रचुरता होने के बाद भी समय-सीमा में लिखना संभव नहीं होता।

समय-सीमा, शुद्धता, स्वच्छता आदि मानकों के साथ लेखन का अभ्यास करें।

प्रश्न 4. रटंत से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर-किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा तैयार की गई पठनीय सामग्री को ज्यों का त्यों याद करना और उसे दूसरे के सामने प्रस्तुत करना रटंत कहलाता है।

प्रश्नः 5. रटंत की बुरी लत से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर-स्टंत को बुरी लत इसलिए कहा जाता है क्योंकि जिस विद्यार्थी अथवा व्यक्ति को यह लत लग जाती है, उसके भावों की मौलिकता खत्म हो जाती है। इसके साथ-साथ उसकी चिंतनशक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है और वह किसी विषय को अपने तरीके से सोचने की क्षमता खो देता है। वह सदैव दूसरों के लिखे पर आश्रित हो जाता है। उसे अपनी बुद्धि तथा चिंतन शक्ति पर विश्वास नहीं रहता ।

प्रश्न 6. नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर-जिन विषयों पर आपने कभी आशा नहीं की हो, उन पर लेखन कार्य करना ही अप्रत्याशित विषय पर लेख है। वास्तविक अर्थों में अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुघड़ ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है।

प्रश्न 7. नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में क्या-क्या बाधाएँ आती हैं ?

उत्तर-नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में अनेक बाधाएँ आती हैं जो इस प्रकार है- सामान्य रूप से लेखक आत्मनिर्भर होकर अपने विचारों को लिखित रूप देने का अभ्यास नहीं करता। लेखक में मौलिक प्रयास तथा अभ्यास करने की प्रवृत्ति का अभाव होता है। लेखक के पास विषय से संबंधित सामग्री और तथ्यों का अभाव होता है। लेखक की चिंतन शक्ति मंद पड़ जाती है। लेखक के बौद्धिक विकास के अभाव में विचारों की कमी हो जाती है।अप्रत्याशित विषयों पर लेखन करते समय शब्दकोश की कमी हो जाती है।

काव्य-खंड

नोट- बोर्ड परीक्षा में काव्य खंड से तीन प्रकार के प्रश्न आएंगे ।

1.पठित काव्यांश पर आधारित पाँच बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक वाले

2. पठित काव्यांश पर आधारित तीन में से कोई दो प्रश्न लगभग 40 शब्दों में 02 अंक वाले

3.काव्य खंड पर आधारित तीन में से कोई दो प्रश्न लगभग 60 शब्दों में 03 अंक वाले

आत्मपरिचय, दिन जल्दी जल्दी ढलता है -
हरिवंश राय बच्चन

आत्मपरिचय

सारांश - कवि का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा-मीठा तो होता ही है। संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं। दुनिया अपने व्यंग्य-बाण तथा शासन-प्रशासन से चाहे जितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता। क्योंकि उसकी अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है। कवि अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने द्विधात्मक और द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता चलता है। कवि कहता है कि यद्यपि वह सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है। वह अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है। वह संसार से मिले प्रेम व स्नेह की परवाह नहीं करता क्योंकि संसार उन्हीं लोगों की जयकार करता है जो उसकी इच्छानुसार व्यवहार करते हैं। वह अपनी धुन में रहने वाला व्यक्ति है। वह निरर्थक कल्पनाओं में विश्वास नहीं रखता क्योंकि यह संसार कभी भी किसी की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर पाया है। कवि सुख-दुख, यश-अपयश, हानि-लाभ आदि द्वंद्वात्मक परिस्थितियों में एक जैसा रहता है। यह संसार मिथ्या है, अत: यहाँ स्थायी वस्तु की कामना करना व्यर्थ है। कवि संतोषी प्रवृत्ति का है। वह अपनी वाणी के जरिये अपना आक्रोश व्यक्त करता है। उसकी व्यथा शब्दों के माध्यम से प्रकट होती है तो संसार उसे गाना

मानता है। संसार उसे कवि कहता है, परंतु वह स्वयं को नया दीवाना मानता है। वह संसार को अपने गीतों, द्वंद्वों के माध्यम से प्रसन्न करने का प्रयास करता है। कवि सभी को सामंजस्य बनाए रखने के लिए कहता है।

विशेष-

1. कवि ने स्वयं के निजी प्रेम को स्वीकार किया है।
2. संसार के स्वार्थी स्वभाव पर टिप्पणी की है।
3. 'स्नेह-सुरा' व 'साँसों के तार' में रूपक अलंकार है।
4. 'जग-जीवन', 'स्नेह-सुरा' में अनुप्रास अलंकार है।
5. खड़ी बोली का स्वाभाविक प्रयोग है।
8. श्रृंगार रस की सरस अभिव्यक्ति हुई है।
9. 'मैं' शैली के प्रयोग से कविता का सौन्दर्य बढ़ गया।

एक गीत

भावार्थ - कवि ने 'निशा-निमंत्रण' से उद्धृत इस गीत में प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश की है। कवि का मानना है कि किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों में गति भर सकता है अन्यथा हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने को अभिशिप्त हो जाते हैं। कवि गीत का आशय स्पष्ट करते हुए कहता है कि साँझ घिरते ही पथिक लक्ष्य की ओर तेजी से कदम बढ़ाने लगता है। उसे रास्ते में रात होने का भय होता है। जीवन-पथ पर चलते हुए जब व्यक्ति अपने लक्ष्य के निकट होता है तो उसकी उत्सुकता और बढ़ जाती है। पक्षी भी बच्चों की चिंता करके तेजी से पंख फड़फड़ाने लगते हैं। अपनी संतान से मिलने की चाह में हर प्राणी आतुर हो जाता है। आशा व्यक्ति के जीवन में नई चेतना भर देती है। जिनके जीवन में कोई आशा नहीं होती, वे शिथिल हो जाते हैं। उनका जीवन नीरस हो जाता है। उनके भीतर उत्साह समाप्त हो जाता है।

2 और 3 अंक वाले

प्रश्न 1.कविता एक ओर जगजीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ - विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है?

उत्तर: कवि ने जीवन का आशय जगत से लिया है अर्थात् वह जगतरूपी जीवन का भार लिए घूमता है। कहने का भाव है कि कवि ने अपने जीवन को जगत का भार माना है। इस भार को वह स्वयं वहन करता है। वह अपने जीवन के प्रति लापरवाह नहीं है। लेकिन वह संसार का ध्यान नहीं करता। उसे इस बात से कोई मतलब नहीं है कि संसार या उसमें रहने वाले लोग क्या करते हैं। इसलिए उसने अपनी कविता में कहा है कि मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ। अर्थात् मुझे इस संसार से कोई या किसी प्रकार का मतलब नहीं है।

प्रश्न 2. जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं' - कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर: दाना का आशय है जानकार लोग अर्थात् सबकुछ जानने वाले और समझने वाले लोग। कवि कहता है कि संसार में दोनों तरह के लोग होते हैं - ज्ञानी और अज्ञानी, अर्थात् समझदार और नासमझ दोनों ही तरह के लोग इस संसार में रहते हैं। जो लोग प्रत्येक काम को समझबूझ कर करते हैं वे 'दाना' होते हैं, जबकि बिना सोचे-विचारे काम करने वाले लोग नादान होते हैं। अतः कवि ने दोनों में अंतर बताने के लिए ही ऐसा कहा है।

प्रश्न 3. बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?

उत्तर: बच्चे से यहाँ आशय चिड़ियों के बच्चों से है। जब उनके माँ-बाप भोजन की खोज में उन्हें छोड़कर दूर चले जाते हैं तो वे दिनभर माँ-बाप के लौटने की प्रतीक्षा करते हैं। शाम ढलते ही वे सोचते हैं कि हमारे माता-पिता

हमारे लिए दाना, तिनका, लेकर आते ही होंगे। वे हमारे लिए भोजन लाएँगे। हमें ढेर सारा चुग्गा देंगे ताकि हमारा पेट भर सके। बच्चे आशावादी हैं। वे सुबह से लेकर शाम तक यही आशा करते हैं कि कब हमारे माता-पिता आएँ और वे कब हमें चुग्गा दें। वे विशेष आशा करते हैं कि हमें ढेर सारा खाने को मिलेगा साथ ही हमें बहुत प्यार-दुलार भी मिलेगा।

प्रश्न -4 'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता'-पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।

उत्तर- इस कविता में कवि ने 'और' शब्द का प्रयोग तीन अर्थों में किया है। इस शब्द की अपनी ही विशेषता है जिसे विशेषण के रूप में प्रयुक्त किया गया है। मैं और में इसमें और शब्द का अर्थ है कि मेरा अस्तित्व बिल्कुल अलग है। में तो कोई अन्य ही अर्थात् विशेष व्यक्ति हूँ। और जग' में और शब्द से आशय है कि यह जगत भी कुछ अलग ही है। यह जगत भी मेरे अस्तित्व की तरह कुछ और है। तीसरे 'और' का अर्थ है के साथ। कवि कहता है कि जब मैं और मेरा अस्तित्व बिलकुल अलग है। यह जगत भी बिलकुल अलग है तो मेरा इस जगत के साथ संबंध कैसे बन सकता है। अर्थात् मैं औरयह संसार परस्पर नहीं मिल सकते क्योंकि दोनों का अलग ही महत्व है।

प्रश्न 5 शीतल वाणी में आग-के होने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर: शीतल वाणी में आग कहकर कवि ने विरोधाभास की स्थिति पैदा की है। कवि कहता है कि यद्यपि मेरे द्वारा कही हुई बातें शीतल और सरल हैं। जो कुछ मैं कहता हूँ वह ठंडे दिमाग से कहता हूँ, लेकिन मेरे इस कहने में बहुत गहरे अर्थ छिपे हुए हैं। मेरे द्वारा कहे गए हर शब्द में संघर्ष हैं। मैंने जीवन भर जो संघर्ष किए उन्हें जब मैं कविता का रूप देता हूँ तो वह शीतल वाणी बन जाती है। मेरा जीवन मेरे दुखों के कारण मन ही मन रोता है लेकिन कविता के द्वारा जो कुछ कहता हूँ उसमें सहजता रूपी शीतलता होती है।

प्रश्न 6.'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'-की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर: 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' - वाक्य की कई बार आवृत्ति कवि ने की है। इससे आशय है कि जीवन बहुत छोटा है। जिस प्रकार सूर्य उदय होने के बाद अस्त हो जाता है ठीक वैसे ही मानव जीवन है। यह जीवन प्रतिक्षण कम होता जाता है। प्रत्येक मनुष्य का जीवन एक न एक दिन समाप्त हो जाएगा। हर वस्तु नश्वर है। कविता की विशेषता इसी बात में है। कि इस वाक्य के माध्यम से कवि ने जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत किया है। चाहे राहगीर को अपनी मंजिल पर पहुँचना हो या चिड़ियों को अपने बच्चों के पास। सभी जल्दी से जल्दी पहुँचना चाहते हैं। उन्हें डर है कि यदि दिन ढल गया तो अपनी मंजिल तक पहुँचना असंभव हो जाएगी।

(2)पतंग - आलोक धन्वा

भावार्थ- 'पतंग' कविता कवि के 'दुनिया रोज बनती है' व्यंग्य संग्रह से ली गई है। इस कविता में कवि ने बालसुलभ इच्छाओं और उमंगों का सुंदर चित्रण किया है। बाल क्रियाकलापों एवं प्रकृति में आए परिवर्तन को अभिव्यक्त करने के लिए इन्होंने सुंदर बिंबों का उपयोग किया है। पतंग बच्चों की उमंगों का रंग-बिरंगा सपना है जिसके जरिये वे आसमान की ऊँचाइयों को छूना चाहते हैं तथा उसके पार जाना चाहते हैं।

कवि कहता है कि भादों के बरसते मौसम के बाद शरद ऋतु आ गई। इस मौसम में चमकीली धूप थी तथा उमंग का माहौल था। बच्चे पतंग उड़ाने के लिए इकट्ठे हो गए। मौसम साफ़ हो गया तथा आकाश मुलायम हो गया। बच्चे पतंगें उड़ाने लगे तथा सीटियाँ व किलकारियाँ मारने लगे। बच्चे भागते हुए ऐसे लगते हैं मानो उनके शरीर में कपास लगे हों। उनके कोमल नरम शरीर पर चोट व खरोंच अधिक असर नहीं डालती। उनके पैरों में बेचैनी होती है जिसके कारण वे सारी धरती को नापना चाहते हैं। वे मकान की छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं

मानी छतें नरम हों। खेलते हुए उनका शरीर रोमांचित हो जाता है। इस रोमांच मैं वे गिरने से बच जाते हैं। बच्चे पतंग के साथ उड़ते-से लगते हैं। कभी-कभी वे छतों के खतरनाक किनारों से गिरकर भी बच जाते हैं। इसके बाद इनमें साहस तथा आत्मविश्वास बढ़ जाता है।

2 और 3 अंक वाले

प्रश्न 1. बच्चों को कपास की तरह कोमल और उनके पैरों को बेचैन' क्यों कहा गया है? 'पतंग' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर: कवि ने बच्चों को कपास के समान नाजुक व कोमल होते हैं। वे निष्कपट होते हैं। उनके पैर बेचैन होते हैं तथा पतंगों के पीछे भागते हैं। पृथ्वी भी उनके पास घूमती हुई प्रतीत होती है।

प्रश्न 2 सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर: प्रकृति में परिवर्तन निरंतर होता रहता है। जब तेज़ बौछारें अर्थात् बरसात का मौसम चला गया, भादों के महीने की गरमी भी चली गई। इसके बाद आश्विन का महीना शुरू हो जाता है। इस महीने में प्रकृति में अनेक परिर्वन आते हैं

सुबह के सूरज की लालिमा बढ़ जाती है। सुबह के सूरज की लाली खरगोश की आँखों जैसी दिखती है।

शरद ऋतु का आगमन हो जाता है। गरमी समाप्त हो जाती है।

प्रकृति खिली-खिली दिखाई देती है।

आसमान नीला व साफ़ दिखाई देता है।

फूलों पर तितलियाँ मँडराती दिखाई देती हैं।

सभी लोग खुले मौसम में आनंदित हो रहे हैं।

प्रश्न 3 . सोचकर बताएँ कि पतंग के लिए सबसे हलकी और रंगीन चीज़, सबसे पतला कागज़, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया है?

उत्तर: कवि ने पतंग के लिए अनेक विशेषणों का प्रयोग किया है। पतंग का निर्माण रंगीन कागज़ से होता है। इंद्रधनुष के समान यह अनेक रंगों की होती है। इसका कागज़ इतना पतला होता है कि बूंद लगते ही फट जाता है। यह बाँस की पतली कमानी से बनती है। कवि इनके माध्यम से बाल सुलभ चेष्टाओं का अंकन करता है। पतंग भी बालमन की तरह कल्पनाशील, कोमल व हलकी होती है।

प्रश्न 4. बिंब स्पष्ट करें -

उत्तर: कवि ने इस कविता में दृश्य बिंब का सार्थक व स्वाभाविक प्रयोग किया है। उन्होंने बच्चों के भावानुरूप बिंब का प्रयोग किया है। पाठक भी कवि की संवेदनाओं को शीघ्र ग्रहण कर लेता है। इस अंश के निम्नलिखित बिंब हैं -

तेज बौछारें - गतिशील दृश्य बिंब

सवेरा हुआ - स्थिर दृश्य बिंब

खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा - स्थिर दृश्य बिंब

पुलों को पार करते हुए - गतिशील दृश्य बिंब

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए - गतिशील दृश्य बिंब

घंटी बजाते हुए जोर - जोर से - श्रव्य बिंब

चमकीले इशारों से बुलाते हुए - गतिशील दृश्य बिंब

आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए - स्पर्श दृश्य बिंब
पतंग ऊपर हठ सके - गतिशील दृश्य बिंब
प्रश्न 5 . जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास - कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है?
उत्तर: कपास से बच्चों को गहरा संबंध है। दोनों में काफ़ी समानताएँ हैं। कपास जैसे सफ़ेद होती है, वैसे ही बच्चे भी सफ़ेद अर्थात् गोरे होते हैं। कपास की तरह ही बच्चे भी कोमल और मुलायम होते हैं। कपास के रेशे की तरह ही उनकी भावनाएँ। होती हैं। वास्तव में बच्चों की कोमल भावनाओं का और उनकी मासूमियत का प्रतीक है।
प्रश्न 6 . आपके जीवन में शरद ऋतु क्या मायने रखती है?
उत्तर: जीवन में प्रत्येक ऋतु का अपना महत्त्व है। समय के अनुसार सभी ऋतुएँ आती हैं और जाती हैं। इनमें से शरद ऋतु का अपना अलग ही महत्त्व है। इस ऋतु में प्रकृति नई-नई लगने लगती है। हर कोई इस प्राकृतिक खूबसूरती का आनंद लेना चाहता है।

(3) कविता के बहाने - कुँवर नारायण

भावार्थ - 'कविता के बहाने' कविता कवि के कविता-संग्रह 'इन दिनों' से ली गई है। आज के समय में कविता के अस्तित्व के बारे में संशय हो रहा है। यह आशंका जताई जा रही है कि यांत्रिकता के दबाव से कविता का अस्तित्व नहीं रहेगा। ऐसे में यह कविता, कविता की अपार संभावनाओं को टटोलने का एक अवसर देती है। 'कविता के बहाने' कविता एक यात्रा है जो चिड़िया और फूल से लेकर बच्चे तक की है। एक ओर प्रकृति है दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा। कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है, फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है, लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य-सभी उपकरण मात्र हैं। इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन खुद-ब-खुद टूट जाते हैं। वह सीमा चाहे घर की हो, भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो।

बात सीधी थी पर'

सारांश - बात सीधी थी पर' कविता में कुँवर नारायण ने यह स्पष्ट किया है कि जब भी कवि कोई रचना करने लगता है तो उसे अपनी बात को सहज भाव से कह देना चाहिए, न कि तर्क-जाल में उलझाकर अपनी बात को उलझा देना चाहिए। आडंबरपूर्ण शब्दावली से युक्त रचना कभी भी प्रभावशील तथा प्रशंसनीय नहीं होती। इसके लिए कवि ने पेंच का उदाहरण दिया है।पेंच को यदि सहजता से पेचकस से कसा जाए वह कस जाती है। यदि उसके साथ जबरदस्ती की जाए तो उसकी चूड़ियाँ घिस कर मर जाती हैं और उसे ठोंककर वहीं दबाना पड़ता है। इसी प्रकार से अपनी अभिव्यक्ति में यदि कवि सहज भाषा का प्रयोग नहीं करता तो उसकी रचना प्रभावोत्पादक नहीं बन पाती। सही बात को सही शब्दों के माध्यम से कहने से ही रचना प्रभावशाली बनती है।

02 और 03अंक वाले प्रश्न

प्रश्न 1 इस कविता के बहाने बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने क्या है?
उत्तर: इसका अर्थ है-भेदभाव, अंतर व अलगाववाद को समाप्त करके सभी को एक जैसा समझना। जिस प्रकार बच्चे खेलते समय धर्म, जाति, संप्रदाय, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब आदि का भेद नहीं करते, उसी प्रकार कविता को भी किसी एक वाद या सिद्धांत या वर्ग विशेष की अभिव्यक्ति नहीं करनी चाहिए। कविता शब्दों का खेल है। कविता का कार्य समाज में एकता लाना है।

प्रश्न 2.'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता है?

अथवा

'कविता के बहाने उसकी उड़ान और उसके खिलने का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कवि ने बताया कि चिड़िया एक जगह से दूसरी जगह उड़ती है। इसी प्रकार कविता भी हर जगह पहुँचती है। उसमें कल्पना की उड़ान होती है। कवि फूल खिलने की बात करता है। दूसरे शब्दों में, कविता का आधार प्राकृतिक वस्तुएँ हैं। वह लोगों को अपनी रचनाओं से मुग्ध करती है।

प्रश्न 3.कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर: कविता और बच्चों के क्रीड़ा-क्षेत्र का स्थान व्यापक होता है। बच्चे खेलते-कूदते समय काल, जाति, धर्म, संप्रदाय आदि का ध्यान नहीं रखते। वे हर जगह, हर समय व हर तरीके से खेल सकते हैं। उन पर कोई सीमा का बंधन नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल है। शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य आदि उपकरण मात्र हैं। इनमें नि:स्वार्थता होती है। बच्चों के सपने असीम होते हैं, इसी तरह कवि की कल्पना की भी कोई सीमा नहीं होती।

प्रश्न 4. बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है; कैसे?

उत्तर: 'बात' का अर्थ है-भाव, भाषा उसे प्रकट करने का माध्यम है। दोनों का चोली-दामन का साथ है, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। इसका कारण यह है कि मनुष्य शब्दों के चमत्कार में उलझ जाता है। वह इसे गलतफहमी का शिकार हो जाता है कि कठिन तथा नए शब्दों के प्रयोग से वह अधिक अच्छे ढंग से अपनी बात कह सकता है। भाव को कभी भाषा का साधन नहीं बनाना चाहिए।

प्रश्न 5 . बात से जुड़े कई मुहावरे प्रचलित हैं। कुछ मुहावरों का प्रयोग करते हुए लिखें।

उत्तर:

बातें बनाना-बातें बनाना कोई तुमसे सीखे।

बात का बतंगड़ बनाना-कालू यादव का काम बात का बतंगड़ बनाना है।

बात का धनी होना-मोहन की इज्जत है क्योंकि वह अपनी बात का धनी है।

बात रखना-सोहन ने मजदूर नेता की माँग मानकर उसकी बात रख ली।

बात बढ़ाना-सुमन, अब सारी बातें यहीं खत्म करो क्योंकि बात बढ़ाने से तनाव बढ़ता है।

प्रश्न 6 .'बात सीधी थी पर कविता में कवि क्या कहता है? अथवा कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कविता 'बात सीधी थी पर' कुँवर नारायण जी के कोई दूसरा नहीं संग्रह में संकलित है। कविता में कथ्य और माध्यम के द्वंद्व उकेरते हुए भाषा की सहजता की बात की गई है। हर बात के लिए कुछ खास शब्द नियत होते हैं ठीक वैसे ही जैसे हर पेंच के लिए एक निश्चित खाँचा होता है। अब तक जिन शब्दों को हम एक-दूसरे को पर्याय के रूप में जानते रहे हैं उन सब के भी अपने विशेष अर्थ होते हैं। अच्छी बात या अच्छी कविता का बनना सही बात का सही शब्द से जुड़ना होता है और जब ऐसा होता है तो किसी दबाव या अतिरिक्त मेहनत की जरूरत नहीं होती वह सहूलियत के साथ हो जाता है।

<u>कैमरे में बंद अपाहिज - रघुवीर सहाय</u>

भावार्थ - 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता 'लोग भूल गए हैं' काव्य-संग्रह से संकलित है। इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती को झेल रहे व्यक्ति की पीड़ा के साथ-साथ दूर-संचार माध्यमों के चरित्र को भी रेखांकित किया है। किसी की पीड़ा को दर्शक वर्ग तक पहुँचाने वाले व्यक्ति को उस पीड़ा के प्रति स्वयं संवेदनशील होने और

दूसरों को संवेदनशील बनाने का दावेदार होना चाहिए। इस कविता में दूरदर्शन (मीडिया) के लोग स्वयं को शक्तिशाली बताते हैं तथा दूसरे को कमजोर मानते हैं। वे शारीरिक चुनौती झेलने वाले से पूछते हैं कि क्या आप अपाहिज हैं? तो आप अपाहिज क्यों हैं? क्या आपको इससे दुख होता है? ऊपर से वह दुख भी जल्दी बताइए क्योंकि समय नहीं है। प्रश्नकर्ता इन सभी प्रश्नों के उत्तर अपने हिसाब से चाहता है। इतने प्रश्नों से विकलांग घबरा जाता है। प्रश्नकर्ता अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उसे रुलाने की कोशिश करता है ताकि दर्शकों में करुणा का भाव जगा सके। इसी से उसका उद्देश्य पूरा होगा। वह इसे सामाजिक उद्देश्य कहता है, परंतु 'परदे पर वक्त की कीमत है' वाक्य से उसके व्यापार की पोल खुल जाती है।

2 और 3 अंक वाले

प्रश्न 1. 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है-विचार कीजिए। ('कैमरे में बंद अपाहिज' में निहित क्रूरता को उजागर कीजिए।

उत्तर: यह कविता मानवीय करुणा तो प्रस्तुत करती ही है साथ ही इस कविता में उन लोगों की बनावटी करुणा का वर्णन भी मिलता है जो दुख दरिद्रता को बेचकर यश प्राप्त करना चाहते हैं। एक अपाहिज व्यक्ति के साथ झूठी सहानुभूति जताकर उसकी करुणा का सौदा करना चाहते हैं। एक अपाहिज की करुणा को पैसे के लिए टी.वी. पर दर्शाना वास्तव में क्रूरता की चरमसीमा है।

प्रश्न 2. हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर: 'हम समर्थ शक्तिमान' पंक्ति के माध्यम से मीडिया की ताकत व कार्यक्रम संचालकों की मानसिकता का पता चलता है। मीडिया कमी या मीडिया-संचालक अपने प्रचार-प्रसार की ताकत के कारण किसी का भी मजाक बना सकते हैं तथा किसी को भी नीचे गिरा सकते हैं। चैनल के मुनाफ़े के लिए संचालक किसी की करुणा को भी बेच सकते हैं। कार्यक्रम का निर्माण व प्रस्तुति संचालकों की मर्जी से होता है।

'हम एक दुर्बल को लाएँगे'पंक्ति में लाचारी का भाव है। मीडिया के सामने आने वाला व्यक्ति कमजोर होता है। मीडिया के अटपटे प्रश्नों से संतुलित व्यक्ति भी विचलित हो जाता है। अपंग या कमजोर व्यक्ति तो रोने लगता है। यह सब कुछ उसे कार्यक्रम-संचालक की इच्छानुसार करना होता है।

प्रश्न 3 .यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगेंगे? तो उससे प्रश्नकर्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा?

उत्तर: यदि साक्षात्कार देने वाला अपंग व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रो देंगे तो प्रश्नकर्ता सहानुभूति प्राप्त करने में सफल हो जाएगा। उसका यह भी उद्देश्य पूरा हो जाएगा कि हमने सामाजिक कार्यक्रम दिखाया है। एक ऐसा कार्यक्रम जिसमें अपंग व्यक्ति की व्यथा का मार्मिक चित्रण हुआ है। उस व्यक्ति की सोच और वेदना का हू-ब-हू चित्र हमने दिखाया है।

प्रश्न 4 .'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है?

उत्तर: इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति व्यावसायिक नजरिया प्रस्तुत किया है। परदे पर जो कार्यक्रम दिखाया जाता है, उसकी कीमत समय के अनुसार होती है। दूरदर्शन व कार्यक्रम-संचालक को जनता के हित या पीड़ा से कोई मतलब नहीं होता। वे अपने कार्यक्रम को कम-से-कम समय में लोकप्रिय करना चाहते हैं। अपंग की पीड़ा को कम करने की बजाय अधिक करके दिखाया जाता है ताकि करुणा को 'नकदी' में बदला जा सके। संचालकों की सहानुभूति भी बनावटी होती है।

प्रश्न 5 . कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रश्नकर्ता क्या सोचता है?

उत्तर: प्रश्नकर्ता सोचता है कि यदि अपंग व्यक्ति के साथ-साथ दर्शक भी रो देंगे तो उनकी सहानुभूति हमारे चैनल को मिल जाएगी। तब हम इसी प्रकार के और कार्यक्रम दिखाया करेंगे, जिस कारण हमें खुब फायदा मिलेगा। हमारा चैनल

प्रश्न 6 . कवि ने किस क्रूरता का चित्रण किया है?

उत्तर: कवि ने इस कविता के माध्यम से मानवीय क्रूरता का चित्रण किया है। वह क्रूरता जो करुणा के मुखौटे में छिपी है। यही मुखौटा ओढ़कर टी.वी. वाले अपाहिज तक का मजाक उड़ाते हैं। उससे झूठी सहानुभूति रखते हैं। उससे ऐसे-ऐसे प्रश्न पूछते हैं कि मानवीयता भी शर्मसार हो जाए।

प्रश्न 7 . "हम दूरदर्शन ... कमरे में' का काव्य-सौंदर्य बताइए।

उत्तर: पहला पद कविता के मूल भाव को स्पष्ट करता है। 'हम' शब्द का प्रयोग करके कवि ने इसके काव्य सौंदर्य में अभिवृद्धि की है। यद्यपि कवि ने कुछ विशेष शब्दों का विशेष अर्थों में प्रयोग किया तब भी भाषा में कठिनता नहीं है। 'हम' शब्द के माध्यम से कवि ने पत्रकारों और मीडिया के लोगों की जमात का वर्णन किया है। इस पद का प्रत्येक शब्द अर्थ की गंभीरता लिए हुए है। खड़ी बोली है। मुक्त छंद है।

उषा - शमशेर बहादुर सिंह

भावार्थ - प्रस्तुत कविता 'उषा' में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित होने वाली प्रकृति का शब्द-चित्र उकेरा है। कवि कहता है कि सूर्योदय से पहले आकाश का रंग गहरे नीले रंग का होता है तथा वह सफेद शंख की नीली आभा से युक्त दिखाई देता है। आकाश का रंग ऐसा लगता है मानो किसी गृहिणी ने राख से चौका लीप दिया हो। सूर्य के ऊपर उठने पर लाली फैलती है तो ऐसा लगता है जैसे काली सिल पर किसी ने केसर मल कर उसे धो दिया हो या किसी ने स्लेट पर लाल खड़िया चाक से लिखकर उसे मिटा दिया हो। नीले आकाश में सूर्य ऐसा लगता है मानो नीले जल में स्नान करती हुई किसी गोरी युवती का शरीर झिलमिला रहा है। सूर्योदय होते ही उषा का यह जादुई प्रभाव समाप्त हो जाता है।

2 अंक वाले प्रश्न-

प्रश्न 1 कवि ने नीले जल में झिलमिलाते गौर वर्ण शरीर किसे कहा है ?

उत्तर -कवि ने नीले आकाश में चमकते सूरज को नीले जल में झिलमिलाते गौर वर्ण वाली नवयुवती कहा है |

प्रश्न 2 उषा का जादू कब टूटता है ?

उत्तर- सूर्योदय होने पर उषा का जादू टूटने लगता है | सूयोदय से पूर्व आकाश में क्षण-क्षण परिवर्तन हो रहे थे | अब वे स्थिर हो जाते हैं |

3 अंक वाले प्रश्न-

प्रश्न -1 उषा कविता में गाँव की सुबह का गतिशील चित्रण कैसे किया गया है ?

उत्तर -कविता में निम्नलिखित उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का सुंदर शब्दचित्र है -

- राख से लीपा हुआ चौका
- बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से ...
- स्लेट पर या लाल खडिया चाक मल दी हो किसी ने
- नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो

प्रश्न- 2 उषा कविता में कवि ने भोर के नभ की तुलना किससे की है और क्यों ?

उत्तर- कविता में कवि ने भोर के नभ की तुलना राख से लीपे हुए चौके से की है, क्योंकि भोर का नभ श्वेत वर्ण और नीलिमा का मिश्रित रूप लिए हुए है । उसमें ओस की नमी भी है अत: वह गीले चौके के समान प्रतीत होता है ।

प्रश्न- 3 कवि ने प्रात:कालीन आसमान की तुलना किससे की है ?

उत्तर-कवि ने प्रात:कालीन आसमान की तुलना अनेक नए उपमानों से की है जैसे-

- राख से लीप हुआ चौका
- काली सिल,नीला शंख
- स्लेट पर लाल खडिया चाक

प्रश्न- 4 कवि काली सिल और लाल केसर के माध्यम से क्या कहना चाहता है ?

उत्तर- कवि के अनुसार काली सिल पर लाल केसर को रगड़ देने से उसमें लाली युक्त लालिमा दिखाई देने लगती है | इस प्रकार भोर के समय आसमान अन्धकार के कारण काला और उषा की लालिमा से युक्त होने पर काली सिल पर लाल केसर रगड़ने के सामान दिखाई देता है |

बादल-राग : सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

भावार्थ-सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता 'बादल राग' में बादलों को मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत किया गया है | इस कविता के ज़रिए निराला ने बादलों को पीड़ित, विद्रोही, और क्रांतिकारी के रूप में दिखाया है | कविता में बादलों की तुलना दमित और शोषित समाज से की गई है | बादलों की गर्जन और बिजली की चमक को क्रांति के आह्वान के रूप में देखा जा सकता है | इस कविता के ज़रिए निराला ने प्रकृति के रौद्र रूप के ज़रिए सामाजिक परिवर्तन की ज़रूरत पर बल दिया है | इस कविता में निराला की प्रयोगधर्मी शैली और गहन भावनात्मकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है |

2 अंक वाले प्रश्न-

प्रश्न 1:- कविता में बादल किस का प्रतीक है? और क्यों?

उत्तर :- बादल क्रांति का प्रतीक है। इन दोनों के आगमन के उपरांत विश्व हरा-भरा, समृद्ध और स्वस्थ हो जाता है।

प्रश्न 2:-सुख को अस्थिर क्यों कहा गया है?

उत्तर :-सुख सदैव बना नहीं रहता अतः उसे अस्थिर कहा जाता है।

प्रश्न 3 :-विप्लवी बादल की युद्ध रूपी नौका की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर :-बादलों के अंदर आम आदमी की इच्छाएँ भरी हुई हैं।जिस तरह से युद्ध नौका में युद्ध की सामग्री भरी होती है।युद्ध की तरह बादल के आगमन पर रणभेरी बजती है। सामान्यजन की आशाओं के अंकुर एक साथ फूट पड़ते हैं।

प्रश्न 4 :-बादल के बरसने का गरीब एवं धनी वर्ग से क्या संबंध जोड़ा गया है?

उत्तर:-बादल के बरसने से गरीब वर्ग आशा से भर जाता है एवं धनी वर्ग अपने विनाश की आशंका से भयभीत हो उठता है ।

3 अंक वाले प्रश्न-

प्रश्न 1 :-'छोटे ही हैं शोभा पाते' में निहित लाक्षणिकता क्या है ?

उत्तर:-बचपन में मनुष्य निश्चिंत होता है। निर्धन मनुष्य उस बच्चे के समान है जो क्रांति के समय भी निर्भय होता है और अंतत: लाभान्वित होता है।

प्रश्न 2 :- पूंजीपतियों की अट्टालिकाओं को आतंक भवन क्यों कहा गया है ?
उत्तर :- कवि पूंजीपतियों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि पूंजीपति लोग ऊँची-ऊँची इमारतों में रहते हैं और ये सारी उम्र गरीबों, किसानों, और मज़दूरों पर अत्याचार करते हैं और उनका शोषण करते हैं| इसलिए कवि के लिए पूंजीपतियों के रहने के घर आतंक भवन हैं|

प्रश्न 3 :- कवि ने किसान का जो शब्द-चित्र दिया है उसे अपने शब्दों में लिखिए |
उत्तर :- किसान के जीवन का रस शोषकों ने चूस लिया है ,आशा और उत्साह की संजीवनी समाप्त हो चुकी है |शरीर से भी वह दुर्बल एवं खोखला हो चुका है | क्रांति का बिगुल उसके हृदय में आशा का संचार करता है |वह खिलखिला कर बादल रूपी क्रांति का स्वागत करता है
प्रश्न 4 :- रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष -किसके लिए कहा गया है और क्यों ?
उत्तर :- पूंजीपतियों के लिए कहा गया है क्योंकि उनके पास अपार धन है, परन्तु उसका सामाजिक उपयोग नहीं हो रहा है, वह तालों में बन्द है। अपार धन होने पर भी वे संतुष्ट नहीं हैं |
प्रश्न 5 :- बादल किस का प्रतीक है ? क्यों?
उत्तर :- बादल क्रांति का प्रतीक है |जिस प्रकार बादल प्रकृति ,किसान और आम आदमी के जीवन में आनंद का उपहार ले कर आता है उसी प्रकार क्रांति निर्धन शोषित वर्ग के जीवन में समानता का अधिकार व संपन्नता ले कर आती है |

कवितावली (उत्तर कांड से), लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप (लंका कांड) - तुलसीदास
भावार्थ - पहले कवित्त में कवि ने पेट की आग को सबसे बड़ा बताया है। मनुष्य सारे काम इसी आग को बुझाने के उद्देश्य से करते हैं चाहे वह व्यापार, खेती, नौकरी, नाच-गाना, चोरी, गुप्तचरी, सेवा-टहल, गुणगान, शिकार करना या जंगलों में घूमना हो। इस पेट की आग को बुझाने के लिए लोग अपनी संतानों तक को बेचने के लिए विवश हो जाते हैं। यह पेट की आग समुद्र की बड़वानल से भी बड़ी है। अब केवल रामरूपी घनश्याम ही इस आग को बुझा सकते हैं।
दूसरे कवित्त में कवि अकाल की स्थिति का चित्रण करता है। इस समय किसान खेती नहीं कर सकता, भिखारी को भीख नहीं मिलती, व्यापारी व्यापार नहीं कर पाता तथा नौकरी की चाह रखने वालों को नौकरी नहीं मिलती। लोगों के पास आजीविका का कोई साधन नहीं है। वे विवश हैं। वेद-पुराणों में कही और दुनिया की देखी बातों से अब यही प्रतीत होता है कि अब तो भगवान राम की कृपा से ही कुशल होगी। वह राम से प्रार्थना करते हैं कि अब आप ही इस दरिद्रता रूपी रावण का विनाश कर सकते हैं।
सवैये में कवि ने भक्त की भक्ति की गहनता में उपजे भक्त-हृदय के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण किया है। वे कहते हैं कि चाहे कोई मुझे धूत(त्यागा हुआ) कहे, अवधूत (साधु) कहे, कोई राजपूत या जुलाहा कहे, किंतु मैं किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करने वाला और न किसी की जाति बिगाड़ने वाला हूँ। मैं तो केवल अपने प्रभु राम का गुलाम हूँ। जिसे जो अच्छा लगे, वही कहे। मैं माँगकर खा सकता हूँ तथा मस्जिद में सो सकता हूँ किंतु मुझे किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। मैं तो सब प्रकार से भगवान राम को समर्पित हूँ।

लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप (लंका कांड) - तुलसीदास
भावार्थ - युद्ध में लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम की सेना में हाहाकार मच गया। सब वानर सेनापति इकट्ठे हुए तथा लक्ष्मण को बचाने के उपाय सोचने लगे। सुषेण वैद्य के परामर्श पर हनुमान हिमालय से संजीवनी बूटी

लाने के लिए चल पड़े। लक्ष्मण को गोद में लिटाकर राम व्याकुलता से हनुमान की प्रतीक्षा करने लगे। आधी रात बीत जाने के बाद राम अत्यधिक व्याकुल हो गए। वे विलाप करने लगे कि तुम मुझे कभी भी दुखी नहीं देख पाते थे। मेरे लिए ही तुमने वनवास स्वीकार किया। अब वह प्रेम मुझसे कौन करेगा? यदि मुझे तुम्हारे वियोग का पता होता तो मैं तुम्हें कभी साथ नहीं लाता। संसार में सब कुछ दुबारा मिल सकता है, परंतु सहोदर भाई नहीं। तुम्हारे बिना मेरा जीवन पंखरहित पक्षी के समान है। अयोध्या जाकर मैं क्या जवाब दूँगा? लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए भाई को गँवा आया। तुम्हारी माँ को मैं क्या जवाब दूँगा? तभी हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आए। वैद्य ने दवा बनाकर लक्ष्मण को पिलाई और उनकी मूर्च्छा ठीक हो गई। राम ने उन्हें गले से लगा लिया। वानर सेना में उत्साह आ गया। रावण को यह समाचार मिला तो उसने परेशान होकर कुंभकरण को उठाया। कुंभकरण ने जगाने का कारण पूछा तो रावण ने सीता के हरण से युद्ध तक की सारी बात बताई तथा बड़े-बड़े वीरों के मारे जाने की बात कही। कुंभकरण ने रावण को बुरा-भला कहा और कहा कि तुमने साक्षात ईश्वर से वैर लिया है और अब अपना कल्याण चाहते हो! राम साक्षात हरि तथा सीता जी जगदंबा हैं। उनसे वैर लेना कभी कल्याणकारी नहीं हो सकता।

2 अंक वाले प्रश्न-

प्रश्न-1 पेट भरने के लोग क्या-क्या कार्य करते हैं?

उत्तर- पेट भरने के लिये लोग धर्म, अधर्म, ऊँच-नीच सभी प्रकार के कार्य करते हैं। विवशता के कारण बेटा-बेटी को भी बेच देते हैं।

प्रश्न=-2 कवि के अनुसार पेट की आग कौन बुझा सकता है?

उत्तर- कवि के अनुसार पेट की आग ईश्वर-कृपा रूपी घनश्याम ही बुझा सकता है।

प्रश्न-3 पेट की आग किसे कहा गया है? यह आग कैसी है?

उत्तर- पेट की आग भूख को कहा गया है। यह आग समुद्र की आग से भी भयंकर है।

प्रश्न-4 कविता में कवि ने दरिद्रता की तुलना किससे की है और क्यों?

उत्तर- तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना रावण से की है क्योंकि गरीबी रूपी रावण ने पूरी दुनिया को दबा कर रखा है।

प्रश्न-5 सवैया छंद में कवि किस पर व्यंग्य करता है और क्यों?

उत्तर- कवि ने धर्म,जाति,सम्प्रदाय के नाम पर राजनीति करने वालों पर व्यंग्य किया है क्योंकि समाज के इन ठेकेदारों के व्यवहार में ऊँच-नीच,जाति-पाँति आदि के द्वारा समाज की समरसता कहीं खो गई है।

प्रश्न-6 राम ने लक्ष्मण की किन -किन विशेषताओं का वर्णन किया है ?

उत्तर - राम ने लक्ष्मण की निम्नलिखित विशेषताओं का वर्णन किया है -

क) वे राम को दुखी नहीं देख सकते थे |

ख) उनका स्वभाव कोमल था |

ग) उन्होंने राम के लिए माता - पिता को छोड़ दिया तथा वन के कष्ट सहे |

प्रश्न-7 संसार में क्या-क्या दोबारा मिल सकता है और क्या नहीं ?

उत्तर - संसार में धन, मकान , पुत्र , पत्नी और परिवार आदि आते -जाते रहते हैं , परन्तु लक्ष्मण जैसा भाई दोबारा नहीं मिल सकता है |

प्रश्न-8 काव्यांश के आधार पर राम के व्यक्तित्व पर टिप्पणी कीजिए |

उत्तर - इस काव्यांश में राम को एक आम मानव जैसा दिखाया गया है | वे लक्ष्मण के प्रति स्नेह और प्रेम - भाव को व्यक्त करते हैं तथा संसार के हर सुख से ज्यादा सगे भाई को महत्व देते हैं |

प्रश्न-9 भाई के बिना जीवन की तुलना किनसे की गई है ?

उत्तर - भाई के बिना जीवन की तुलना पंख रहित पक्षी , मणि रहित साँप , सूंड रहित हाथी से की गई है | लक्ष्मण राम को अत्यधिक प्रिय थे, अत: उनकी मूर्च्छा पर वे व्याकुल हो उठे |

प्रश्न-10 रावण की बातों पर कुम्भकरण ने क्या प्रतिक्रया जताई ?

उत्तर- रावण ने जब सीता हरण से लेकर सारी कथा सुनाई तो कुम्भकरण बिलखने लगे | उसने कहा - '' हे मूर्ख ! जगत जननी का हरण करके तू अब अपना कल्याण चाहता है | तेरा भला नहीं हो सकता |

3 अंक वाले प्रश्न-

प्रश्न-1 तुलसीदास जी अपने युग की आर्थिक स्थिति को भली-भाँति समझते थे।उस समय की आर्थिक स्थिति का वर्णन कीजिये।

उत्तर- तुलसीदास के समय मे आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी।किसानों के पास खेती के लिये साधन नहीं थे,न व्यापारी के पास व्यापार,भिखारी को भीख नही मिलती थी।वे धन प्राप्ति के उपायों के बारे में सोचते रहते थे।वे अपने संतानों तक को बेच देते थे।भुखमरी और बेरोजगारी का साम्राज्य फैला हुआ था।

प्रश्न-2 पेट की आग का शमन ईश्वर-भक्ति का मेघ कर सकता है?क्या तुलसीदास का यह काव्य-सत्य इस समय का भी युग-सत्य हो सकता है?

उत्तर- पेट की आग का शमन ईश्वर-भक्ति का मेघ ही कर सकता है।तुलसीदास का यह काव्य-सत्य आज भी कुछ हद तक सत्य हो सकता है किंतु मनुष्य को निष्ठापूर्वक कार्य करते रहना चाहिये।दोनों मे से एक भी पक्ष असंतुलित हुआ तो फल नहीं मिलेगा।

प्रश्न-3 तुलसी ने यह कहने की ज़रूरत क्यों समझी ?

धूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपूतु कहौ जोलहा कहौ कोऊ
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब काहूकी जाति बिगार न सोऊ।

इस सवैया में 'काहू के बेटा सों बेटी न ब्याहब' कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता ?

उत्तर-तुलसीदास जाति-पाँति से दूर थे। वे इनमें विश्वास नहीं रखते थे। उनके अनुसार व्यक्ति के कर्म ही उसकी जाति बनाते हैं। यदि वे काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब कहते हैं तो उसका सामाजिक अर्थ यही होता कि मुझे बेटा या बेटी किसी में कोई अंतर नहीं दिखाई देता। यद्यपि मुझे बेटी या बेटा नहीं ब्याहने, लेकिन इसके बाद भी मैं बेटा-बेटी की कद्र करता हूँ।

प्रश्न-4 धूत कहौ' वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?

अथवा

'धूत कहौ .....' 'छंद के आधार पर तुलसीदास के भक्त-हृदय की विशेषता पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर-तुलसीदास ने इस छंद में अपने स्वाभिमान को व्यक्त किया है। वे सच्चे रामभक्त हैं तथा उन्हीं के प्रति समर्पित हैं। उन्होंने किसी भी कीमत पर अपना स्वाभिमान कम नहीं होने दिया और एकनिष्ठ भाव से राम की अराधना की। समाज के कटाक्षों का उन पर कोई प्रभाव नहीं है। उनका यह कहना कि उन्हें किसी के साथ कोई वैवाहिक संबंध स्थापित नहीं करना, समाज के मुँह पर तमाचा है। वे किसी के आश्रय में भी नहीं रहते। वे भिक्षावृत्ति से अपना जीवन-निर्वाह करते हैं तथा मस्जिद में जाकर सो जाते हैं। वे किसी की परवाह नहीं करते

तथा किसी से लेने-देने का व्यवहार नहीं रखते। वे बाहर से सीधे हैं, परंतु हृदय में स्वाभिमानी भाव को छिपाए हुए हैं।

प्रश्न-5 भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर-लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर-लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम को जिस तरह विलाप करते दिखाया गया है, वह ईश्वरीय लीला की बजाय आम व्यक्ति का विलाप अधिक लगता है। राम ने अनेक ऐसी बातें कही हैं जो आम व्यक्ति ही कहता है, जैसे-यदि मुझे तुम्हारे वियोग का पहले पता होता तो मैं तुम्हें अपने साथ नहीं लाता। मैं अयोध्या जाकर परिवारजनों को क्या मुँह दिखाऊँगा, माता को क्या जवाब दूँगा आदि। ये बातें ईश्वरीय व्यक्तित्व वाला नहीं कह सकता क्योंकि वह तो सब कुछ पहले से ही जानता है। उसे कार्यों का कारण व परिणाम भी पता होता है। वह इस तरह शोक भी नहीं व्यक्त करता। राम द्वारा लक्ष्मण के बिना खुद को अधूरा समझना आदि विचार भी आम व्यक्ति कर सकता है। इस तरह कवि ने राम को एक आम व्यक्ति की तरह प्रलाप करते हुए दिखाया है जो उसकी सच्ची मानवीय अनुभूति के अनुरूप ही है। हम इस बात से सहमत हैं कि यह विलाप राम की नर-लीला की अपेक्षा मानवीय अनुभूति अधिक है।

प्रश्न-6 शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया हैं?

उत्तर- शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव इसलिए कहा गया है क्योंकि जब सभी लोग मूर्च्छित लक्ष्मण के वियोग में करुणा में डूबे थे तो हनुमान ने साहस किया। उन्होंने वैद्य द्वारा बताई गई संजीवनी लाने का प्रण किया। जब हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आ गए, तो सुषेण वैद्य ने तुरंत दवा तैयार कर के लक्ष्मण को पिलाई| लक्ष्मण के उठने से राम का शोक समाप्त हो गया और सेना में उत्साह की लहर दौड़ गई| हनुमान के आने से शोकग्रस्त माहौल में उत्साह की लहर दौड़ गई |

प्रश्न-7 जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई ।
बरु अपजस सहतेऊँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।
भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित हैं?

उत्तर- भाई के शोक में डूबे राम ने कहा कि मैं अवध क्या मुँह लेकर जाऊँगा? वहाँ लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए प्रिय भाई को खो दिया। वे कहते हैं कि नारी की रक्षा न कर पाने का अपयश में सह लेता, किन्तु भाई की क्षति का अपयश सहना मुश्किल है। नारी की क्षति कोई विशेष क्षति नहीं है। राम के इस कथन से नारी की निम्न स्थिति का पता चलता है। उस समय पुरुष-प्रधान समाज था। नारी को पुरुष के बराबर अधिकार नहीं थे। उसे केवल उपभोग की चीज समझा जाता था। उसे असहाय व निर्बल समझकर उसके आत्मसम्मान को चोट पहुँचाई जाती थी।

प्रश्न-8 क्या तुलसी युग की समस्या वर्तमान में समाज में भी विद्यमान हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- तुलसी ने लगभग 500 वर्ष पहले जो कुछ कहा था, वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अपने समय की मूल्य हीनता, नारी की स्थिति, आर्थिक दुरवस्था का चित्रण किया है। इनमें अधिकतर समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। नारी के प्रति नकारात्मक सोच आज भी विद्यमान है। अभी भी जाति व धर्म के नाम पर भेदभाव होता है। इसके विपरीत, कृषि, वाणिज्य, रोजगार की स्थिति आदि में बहुत बदलाव आया है। इसके बाद भी तुलसी युग की अनेक समस्याएँ आज भी हमारे समाज में विद्यमान हैं।

रुबाइयाँ-फिराक गोरखपुरी

भावार्थ- फ़िराक गोरखपुरी की 'रुबाइयाँ' में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखता है। इस रचना में कवि ने वात्सल्य वर्णन किया है। एक माँ अपने घर के आँगन में अपने चाँद के टुकड़े को अपने हाथों पर झूला झुलाती है तो कभी उसे प्यार से गोद में भर लेती है। कभी-कभी वह माँ उस बच्चे को हवा में उछाल भी लेती है। माँ के इस प्यार-दुलार भरे खेल से बच्चा भी बहुत खुश होता है और खिलखिला कर हँस देता है। माँ अपने छोटे बच्चे को हिलते-डुलते साफ-सुथरे पानी से नहलाती है। नहाने से उसके अस्त-व्यस्त हुए बालों को कंघी कर धीरे-धीरे प्यार से सुलझाती व सँवारती है और जब माँ अपने बच्चे को अपने घुटनों के बीच पकड़ कर के कपड़े पहनाती है तो बच्चा कितने प्यार से अपनी माँ के चेहरे को देखता है। दीपावली की शाम को अपने साफ-सुथरे व पुताई किये हुए या रंग रोगन किये हुए, सुन्दर सजे घर में माँ अपने बच्चे के लिए चीनी मिट्टी से बने खिलौने व जगमगाते हुए दिये लेकर आयी है। शाम को जब वह अपने पूरे घर में दिये जलाती है तो कुछ दिए बच्चे के द्वारा बनाए छोटे से मिट्टी के घर में भी जला देती है। छोटा बच्चा अपने आँगन में मचल रहा है और जिद कर रहा है। उस बच्चे का मन चाँद को देख कर ललचाया हुआ है और वह उस आकाश के चाँद को पाने की जिद्द कर रहा है। बच्चे की इस जिद्द पर माँ बच्चे को एक आईना पकड़ा देती है। और फिर उस दर्पण में चाँद का प्रतिबिम्ब दिखाकर बच्चे को समझा देती है कि देखो, आकाश का चाँद शीशे में उतर आया है। रक्षाबंधन की सुबह आनंद व मिठास की सौगात है। रक्षाबंधन के दिन सुबह के समय आकाश में हल्के-हल्के बादल छाए हुए हैं। और जिस तरह उन बादलों के बीच बिजली चमक रही हैं ठीक उसी तरह राखी के लच्छे भी चमक रहे हैं और बहिन बड़े ही प्यार से उस चमकती राखी को अपने भाई की कलाई पर बाँधती है।

2 अंक वाले प्रश्न -

प्रश्न-1 माँ बच्चे के प्रति अपना प्यार कैसे प्रकट करती है?

उत्तर- माँ बच्चे को हवा में झुला कर, उसे नहला कर, उसके उलझे बालों को कंघी से सुलझा कर तथा कपड़े पहना कर अपने प्यार को प्रकट करती है।

प्रश्न-2 बच्चे के ठुनकने और जिदयाये में कौन-सी चेष्टाएँ प्रदर्शित होती हैं ?

उत्तर- बच्चे के ठुनकने और जिदयाये में उसका बाल-सुलभ हठ एवं मनपसंद वस्तु प्राप्त करने की चेष्टा प्रदर्शित होती है| वह अपनी मनपसंद वस्तु चाँद लेने के लिए हठ कर रहा है और आँगन में ठुनक रहा है |

प्रश्न-3 बच्चा माँ से किस चीज की माँग कर रहा है? माँ उसे कैसे शांत करती है ?

उत्तर- बच्चा अपनी माँ से आसमान में निकले चाँद की माँग कर रहा है क्योंकि वह चाँद को देखकर उसकी सुन्दरता से प्रभावित होकर उस पर ललचा रहा है और उसे पाना चाहता है और माँ ने बच्चे को आईना देकर चाँद का प्रतिबिम्ब आइने में दिखाकर शांत कर दिया |

3 अंक वाले प्रश्न -

प्रश्न -1 शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कह कर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

उत्तर - शायर यह भाव व्यंजित करना चाहता है कि जो संबंध बादलों की घटा का बिजली के साथ है वही संबंध भाई का बहन के साथ है। राखी के लच्छे बिजली की चमक की तरह रिश्तों की पवित्रता को व्यंजित करते हैं। राखी की चमक संबंधों के उत्साह को प्रकट करती है।

प्रश्न-2 रुबाइयाँ छंद में किस रस की प्रधानता है? तर्क सहित उत्तर दें।

उत्तर- रुबाइयाँ छंद में वात्सल्य रस की प्रधानता है। बालक चंद्रमा को पाने के लिए रूठ जाता है और माँ उसके हाथ में आईना देकर कहती है, देख आईने में चाँद उतर आया है। वह बच्चे को बहलाती है। यहाँ माँ -बच्चे के स्नेह का सुंदर चित्रण किया गया है।

छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख - उमाशंकर जोशी

भावार्थ- इस कविता में कवि ने खेती के रूप में कवि-कर्म के हर चरण को बाँधने की कोशिश की है। कवि को कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है। इस खेत में किसी अंधड़ अर्थात भावनात्मक आँधी के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज रचना, विचार और अभिव्यक्ति का हो सकता है। यह कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और इस प्रक्रिया में स्वयं गल जाता है। उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंतत: कृति एक पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है जो कृषि-कर्म के लिहाज से पुष्पित पल्लवित होने की स्थिति है। साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा फूटती है, वह क्षण में होने वाली रोपाई का ही परिणाम है। पर यह रस-धारा अनंत काल तक चलने वाली कटाई से कम नहीं होती। खेत में पैदा होने वाला अन्न कुछ समय के बाद समाप्त हो जाता है, किंतु साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

बगुलों के पंख - उमाशंकर जोशी

भावार्थ - यह कविता सुंदर दृश्य बिंब युक्त कविता है जो प्रकृति के सुंदर दृश्यों को हमारी आँखों के सामने सजीव रूप में प्रस्तुत करती है। सौंदर्य का अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कवियों ने कई युक्तियाँ अपनाई हैं जिनमें से सर्वाधिक प्रचलित युक्ति है-सौंदर्य के ब्यौरों के चित्रात्मक वर्णन के साथ अपने मन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का वर्णन। कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुलों को देखता है। वे कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं। इस नयनाभिराम दृश्य में कवि सब कुछ भूलकर उसमें खो जाता है। वह इस माया से अपने को बचाने की गुहार लगाता है, लेकिन वह स्वयं को इससे बचा नहीं पाता।

2 अंक वाले प्रश्न

प्रश्न-1 छोटा मेरा खेत कविता में खेत की तुलना कागज के पन्ने से क्यों की गई है ?

उत्तर-एक में बीज से फसल स्वरूप लेती है, तो दूसरे में रचना रूपी फसल होती है। यही कारण है कि छोटे चौकोने खेत को कागज़ के पन्ने के समान बताया गया है

प्रश्न-2 छोटा मेरा खेत कविता में कल्पना को रसायन क्यों कहा गया है?

उत्तर- 'कल्पना' को रसायन इसलिए कहा गया है क्योंकि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक नई वस्तु को सृजित करती है बिना किसी मौजूदा वस्तु के । इसलिए, इसे सृजन का मूलभूत तत्त्व कहा जाता है।

प्रश्न-3 'बगुलों के पंख' कविता में 'नभ में पाँती बँधे बगुलों के पंख' मनुष्य को क्या संदेश देते हैं ?

उत्तर: 'पाँती बँधे' से कवि का तात्पर्य एकता से है। जिस प्रकार ऊँचे आकाश में बगुले पंक्ति बाँधकर एक साथ चलते हैं, उसी प्रकार मनुष्य को भी एकजुट रहना चाहिए। बगुलों की पंक्ति हमें 'एकता में शक्ति है' का भाव सिखाती है।

3 अंक वाले प्रश्न

प्रश्न-1 छोटा मेरा खेत कविता का मूल भाव क्या है?

उत्तर- उमा शंकर जोशी ने छोटा मेरा खेत कविता में कवि और कृषक की भूमिका की तुलना की है। यहाँ कवि पन्ने को खेत कहता है। पन्ना का अर्थ है -कागज़, जिस पर हम लिखते हैं । दूसरे शब्दों में, जिस प्रकार एक किसान अपनी भूमि को जोतता है, उसी प्रकार एक कवि कागज पर कविता रचता है।

प्रश्न-2 रस का अक्षय पात्र क्या है?

उत्तर- रस का अक्षय पात्र से कवि ने रचना कर्म को अविनाशी व कालजई बताया है । कवि की रचनाएँ हमेशा अमर रहती हैं । पाठकों को हमेशा अच्छा संदेश देती है तथा जीवन में सही मार्ग दिखाती हैं । बार-बार पढ़े जाने पर भी कविता का रस समाप्त नहीं होता ।

प्रश्न-3 कवि को खेत का रूपक अपनाने की जरूरत क्यों पड़ी?

उत्तर- बहुत चिंतन के बाद कोई विचार उत्पन्न होता है तथा कल्पना के सहारे उसे विकसित किया जाता है। इसी प्रकार खेती में बीज बोने से लेकर फसल की कटाई तक बहुत परिश्रम किया जाता है। इसलिए कवि को खेत का रूपक अपनाने की जरूरत पड़ी।

प्रश्न-4 'बगुलों के पंख' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- इस कविता में सौंदर्य की नयी परिभाषा प्रस्तुत की गई है तथा मानव-मन पर इसके प्रभाव को बताया गया है। आकर्षक दृश्य के प्रभाव को कोई रोके। वह इस दृश्य के प्रभाव से बचना चाहता है, परंतु यह दृश्य तो कवि की आँखों को चुराकर ले जा रहा है। आकाश में उड़ते पंक्तिबद्ध बगुलों के पंखों में कवि की आँखें अटककर रह जाती हैं।

आरोह (गद्य खण्ड)

भक्तिन - महादेवी वर्मा

सारांश- भक्तिन जिसका वास्तविक नाम लक्ष्मी था पाठ की लेखिका 'महादेवी वर्मा' की सेविका है | बचपन में ही भक्तिन की माँ की मृत्यु हो गयी | सौतेली माँ ने पाँच वर्ष की आयु में विवाह तथा नौ वर्ष की आयु में गौना कर भक्तिन को ससुराल भेज दिया | ससुराल में भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया, इस वजह से उसे सास और जिठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ती थी | सास और जिठानियाँ आराम फरमाती थीं और भक्तिन तथा उसकी नन्हीं बेटियों को घर और खेतों का सारा काम करना पडता था ।भक्तिन का पति उसे खूब प्रेम करता था | अपने पति के स्नेह के बल पर भक्तिन ने ससुराल वालों से अलग होकर अपना अलग घर बसा लिया और सुख से रहने लगी । परंतु दुर्भाग्यवश अल्पायु में ही भक्तिन के पति की मृत्यु हो गई | ससुराल वाले भक्तिन की दूसरी शादी कर उसे घर से निकालकर उसकी संपत्ति हड़पने की साजिश करने लगे| ऐसी परिस्थिति में भक्तिन ने अपने केश मुंडा लिए और संन्यासिन बन गई | भक्तिन स्वाभिमानी, संघर्षशील, कर्मठ और दृढ संकल्प वाली स्त्री है जो पितृसत्तात्मक मान्यताओं और छल-कपट से भरे समाज में अपने और अपनी बेटियों के हक की लड़ाई लड़ती है।घर गृहस्थी सँभालने के लिए अपनी बड़ी बेटी और दामाद को घर जँवाई के रूप में अपने घर रख लिया परंतु दुर्भाग्य ने यहाँ भी भक्तिन का पीछा नहीं छोड़ा । अचानक ही उसके दामाद की भी मृत्यु हो गयी| भक्तिन के जेठ-जिठौतोंने साजिश रचकर भक्तिन की विधवा बेटी का विवाह जबरदस्ती अपने तीतरबाज साले से करा दिया| पंचायत द्वारा कराया गया यह संबंध दुखदायी रहा | दोनों माँ-बेटी का मन घर-गृहस्थी से उचट गया, निर्धनता आ गयी । लगान न चुका पाने के कारण जमींदार ने भक्तिन को दिन भर धूप में खड़ा रखा| अपमानित भक्तिन पैसा कमाने के लिए गाँव छोड़कर शहर आ जाती है और महादेवी की सेविका बन जाती है| भक्तिन के मन में महादेवी के प्रति बहुत आदर, सम्मान और समर्पण का भाव है| वह छाया के समान महादेवी के साथ रहती है| वह रात-रात भर जागकर चित्रकारी या लेखन जैसे कार्य में व्यस्त अपनी मालकिन की सेवा का अवसर ढूँढ लेती है| महादेवीभक्तिन को नहीं बदल पायी पर भक्तिन ने महादेवी को बदल दिया| भक्तिन के हाथ का मोटा-देहाती खाना खाते-खाते महादेवी का स्वाद बदल गया । भक्तिन ने महादेवी को देहात के किस्से-कहानियाँ, किंवदंतियाँ आदि कंठस्थ करा दीं | स्वभाव से महाकंजूस होने पर भी भक्तिनपाई-पाई कर जोड़ी हुई राशि को सहर्ष महादेवी को समर्पित कर देती है| जेल के नाम से थर-थर काँपने वाली भक्तिन अपनी

मालकिन के साथ जेल जाने के लिए बड़े लाटसाहब तक से लड़ने को भी तैयार हो जाती है| भक्तिन, महादेवी के जीवन पर छा जाने वाली एक ऐसी सेविका है जिसे लेखिका नहीं खोना चाहती।

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश 1.

भक्तिन का दुर्भाग्य भी उससे कम हठी नहीं था, इसी से किशोरी से युवती होते ही बड़ी लड़की भी विधवा हो गई । भइयहू से पार न पा सकने वाले जेठों और काकी को परास्त करने के लिए कटिबद्ध जिठौतों ने आशा की एक किरण देख पाई । विधवा बहिन के गठबंधन के लिए बड़ा जिठौत अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया, क्योंकि उसका विवाह हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता । भक्तिन की लड़की भी माँ से कम समझदार नहीं थी, इसी वजह से उसने वर को नापसंद कर दिया । बाहर के बहनोई का आना चचेरे भाईयों के लिए सुविधाजनक नहीं था,अत: यह प्रस्ताव जहाँ का तहाँ रह गया । तब वे दोनों माँ-बेटी खूब मन लगाकर अपनी संपत्ति की देख-भाल करने लगीं और 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की कहावत चरितार्थ करने वाले वर के समर्थक उसे किसी-न-किसी प्रकार पति की पदवी पर अभिषिक्त करने का उपाय सोचने लगे ।

(i)गद्यांश के आधार पर भक्तिन का दुर्भाग्य किसे कहा गया है?

(क) उसके पति का असमय मर जाना (ख) उसकी बेटी का असमय विधवा हो जाना

(ग) उसके द्वारा तीन-तीन कन्याओं को जन्म दिया जाना (घ) उसके पिता की अकाल मृत्यु हो जाना

(ii)भक्तिन का जिठौत अपने साले से चचेरी बहन का विवाह क्यों करवाना चाहता था?

(क) युवावस्था में ही बहन के विधवा हो जाने के कारण (ख) चचेरी बहन को वैधव्य के दुख से बचाने के लिए

(ग) चचेरी बहन का घर फिर से बसाने की इच्छा के कारण (घ) अपनी चाची की जायदाद को पाने के लिए

(iii)भक्तिन के जेठों और जिठौतों को भक्तिन के दामाद के मरने पर आशा की कौन-सी किरण दिखाई दी?

(क) अपनी पसंद के वर से चचेरी बहन का विवाह करने की (ख) भक्तिन का आत्मसम्मान नष्ट करना

(ग) भक्तिन और उसकी बेटियों पर अपना हक जताने की (घ) भक्तिन और उसकी बेटियों को अपने साथ रखने की

(iv) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानप्रवकपढिए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कथन (A) : विधवा बहन द्वारा वर को नापसंद किए जाने पर जिठौतों ने अपनी पसंद का वर उस पर थोप दिया ।

कारण (R): क्योंकि वे सम्मति के लिए रिश्तों की मान-मर्यादा तक तोड़ने को आतुर थे ।

(क) कथन (A) गलत है तथा कारण (R) सही है । (ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ही गलत है ।

(ग) कथन (A) सही है तथा कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है ।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन की सही व्याख्या करता है ।

(v)गद्यांशके आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I)भक्तिन के जेठ और जिठौत संपत्ति हड़पने को तैयार थे । (II)) जेठ और जिठौत बहुत ही अच्छे स्वभाव के थे

(III)जेठ और जिठौत विधवा बहन का पुनर्विवाह करवाने को तैयार थे ।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं?

(क) I और III (ख) केवल III (ग) केवल II (घ) केवल I

उत्तरमाला	(i) ख	ii) घ	(iii) ग	(iv) घ	(v) क

पाठ पर आधारित प्रश्नोतर (2 व 3 अंक वाले)

प्रश्न 1.भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी?भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया ?

उत्तर -भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था और देवी लक्ष्मी धन- दौलत, सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य की देवी मानी जाती है। लेकिन अपने नाम के उलट लक्ष्मी तो बहुत ही गरीब महिला थी। लक्ष्मी नाम को सुनकर लोग उसका मजाक ना उड़ाएँ । इसीलिए वह अपना वास्तविक नाम लोगों से छुपाती थी और वह नहीं चाहती थी कि कोई भी उसे लक्ष्मी नाम से पुकारे।भक्तिन के गले में कंठी माला और उसके आचार, व्यवहार व स्वभाव को देखते हुए उसे भक्तिन नाम लेखिका महादेवी वर्मा ने दिया।

प्रश्न 2. लेखिका ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन क्यों रखा?

उत्तर-घुटा हुआ सिर, गले में कंठी माला और भक्तों की तरह सादगीपूर्ण वेशभूषा देखकर महादेवी वर्मा ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन रख दिया | यह नाम उसके व्यक्तित्व से पूर्णत: मेल खाता था |

प्रश्न 3. भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में विभाजित किया गया है?

उत्तर- भक्तिन के जीवन को चार भागों में बाँटा गया है-

पहला परिच्छेद-भक्तिन का बचपन, माँ की मृत्यु, विमाता के द्वारा भक्तिन का बाल-विवाह करा देना ।

द्वितीय परिच्छेद-भक्तिन का वैवाहिक जीवन, सास तथा जिठानियों का अन्यायपूर्ण व्यवहार, परिवार से अलगौझा कर लेना ।

तृतीय परिच्छेद- पति की मृत्यु, विधवा के रूप में संघर्षशील जीवन।

चतुर्थ परिच्छेद- महादेवी वर्मा की सेविका के रूप में ।

प्रश्न 4. 'भक्तिन' पाठ के आधार पर भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में किये जाने वाले भेदभाव का उल्लेख कीजिए |

उत्तर: भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में भेदभाव किया जाता है| लड़कियों को खोटा सिक्का या पराया धन माना जाता है| भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया, इसी वजह से उसे सास और जिठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ती थी| सास और जिठानियाँ आराम फरमाती थी क्योंकि उन्होंने लड़के पैदा किए थे और भक्तिन तथा उसकी नन्हीं बेटियों को घर और खेतों का सारा काम करना पड़ता था| भक्तिन और उसकी बेटियों को रूखा-सूखा मोटा अनाज खाने को मिलता था जबकि उसकी जिठानियाँ और उनके काले-कलूटे बेटे दूध-मलाई राब-चावल की दावत उड़ाते थे ।

प्रश्न 5. भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर- भक्तिन के साथ रहकर महादेवीवर्मा की जीवन-शैली सरल हो गयी । वे अपनी सुख-सुविधाओं की चाह को छिपाने लगीं और असुविधाओं को सहने लगीं। भक्तिन ने उन्हें देहाती भोजन खिलाकर उनका स्वाद बदल दिया। भक्तिन मात्र एक सेविका न होकर महादेवी की अभिभावक और आत्मीय बन गयी।भक्तिन, महादेवी के जीवन पर छा जाने वाली एक ऐसी सेविका है जिसे लेखिका नहीं खोना चाहती।

प्रश्न 6. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गई, कैस? सोदाहरण लिखिए।
उत्तर - भक्तिन देहाती महिला थी। शहर में आकर उसने स्वयं में कोई परिवर्तन नहीं किया। ऊपर से वह दूसरों को भी अपने अनुसार बना लेना चाहती है, पर अपने मामले में उसे किसी प्रकार का हस्तक्षेप पसंद नहीं था। उसने लेखिका का मीठा खाना बिल्कुल बंद कर दिया। उसने गाढ़ी दाल व मोटी रोटी खिलाकर लेखिका की स्वास्थ्य संबंधी चिंता दूर कर दी। अब लेखिका को रात को मकई का दलिया, सवेरे मट्ठा, तिल लगाकर बाजरे के बनाए हुए ठंडे पुए, ज्वार के भुने हुए भुट्टे के हरे-हरे दानों की खिचड़ी व सफेद महुए की लपसी मिलने लगी। इन सबको वह स्वाद से खाने लगी। इसके अतिरिक्त उसने महादेवी को देहाती भाषा भी सिखा दी। इस प्रकार महादेवी भी देहाती बन गई।

जैनेन्द्र कुमार - " बाज़ार दर्शन "

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश 1.

बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है , वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।
निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए -
(i)किसका जादू आँख की राह काम करता है?
(क) जादूगर का (ख)बं गाल का (ग) बाज़ार का (घ) काला जादू
(ii)उपर्युक्त गद्यांश का मुख्य प्रतिपाद्य (उद्देश्य) क्या हो सकता है?
(क) बाज़ार के उपयोग का विवेचन(ख) बाज़ार से लाभ (ग) बाज़ार न जाने की सलाह (घ) बाज़ार जाने की सलाह
(iii)बाज़ार का सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। कारण है?
(क) लालच के कारण (ख) मोह के कारण (ग) बाज़ार के जादू के कारण (घ) व्यक्ति के कारण
(iv)आप को किस स्थिति में बाज़ार जाना चाहिए?
(क) जब मन खाली हो (ख) जब मन खाली न हो (ग) जब मन बंद हो (घ) जब मन में नकार हो
(v)ग्राहक पर बाज़ार के जादू का प्रभाव पड़ने का कारण है?
(क) ग्राहक का मन खाली होना (ख) ग्राहक का मन भरा हुआ होना
(ग) ग्राहक के साथ उसकी पत्नी होना (घ) ग्राहक गरीब होना

उत्तरमाला	(i) ग	ii) क	(iii) ग	(iv) ख	(v) क

पाठ पर आधारित प्रश्नोतर (2 व 3 अंक वाले)

प्रश्न 1. बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता हैं?
उत्तर - जब बाज़ार का जादू चढ़ता है तो व्यक्ति फिजूल की खरीददारी करता है। वह उस सामान को भी खरीद लेता है जिसकी उसे ज़रूरत नहीं होती है । वास्तव में जादू का प्रभाव गलत या सही की पहचान खत्म कर देता है। लेकिन जब यह जादू उतरता है तो उसे पता चलता है कि बाज़ार की चकाचौंध ने उसे मूर्ख बनाया है। जादू के उतरने पर वह केवल आवश्यकता का ही सामान खरीदता है ताकि उसका पालन-पोषण हो सके।
प्रश्न 2 . 'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते है अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमे है ?
उत्तर-'बाज़ारूपन' से तात्पर्य है कि बाज़ार की चकाचौंध में खो जाना। केवल बाज़ार पर ही निर्भर रहना। वे व्यक्ति ऐसे बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं जो हर वह सामान खरीद लेते हैं जिनकी उन्हें ज़रूरत भी नहीं होती। वे फिजूल में सामान खरीदते रहते हैं अर्थात् वे अपना धन और समय नष्ट करते हैं। लेखक कहता है कि बाज़ार की सार्थकता तो केवल ज़रूरत का सामान खरीदने में ही है तभी हमें लाभ होगा।
प्रश्न 3 - अर्थशास्त्र, अनीतिशास्त्र कब बन जाता है?
उत्तर- जब बाजार में कपट और शोषण बढ़ने लगे, खरीददार अपनी पर्चेचिंग पावर के घमंड में दिखावे के लिए खरीददारी करें | मनुष्यों में परस्पर भाईचारा समाप्त हो जाए| खरीददार और दुकानदार एक दूसरे को ठगने की घात में लगे रहें , एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखाई दे तो बाजार का अर्थशास्त्र, अनीतिशास्त्र बन जाता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना है।
प्रश्न4-भगतजी बाजार और समाज को किस प्रकार सार्थकता प्रदान कर रहे हैं?
उत्तर- भगतजी के मन में सांसारिक आकर्षणों के लिए कोई तृष्णा नहीं है। वे संचय, लालच और दिखावे से दूर रहते हैं। बाजार और व्यापार उनके लिए आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र है। भगतजी के मन का संतोष और निस्पृह भाव, उनको श्रेष्ठ उपभोक्ता और विक्रेता बनाते हैं।
प्रश्न 5 भगत जी के व्यक्तित्व के सशक्त पहलुओं का उल्लेख कीजिए |
उत्तर-निम्नांकित बिंदु उनके व्यक्तित्व के सशक्त पहलू को उजागर करते हैं।
पंसारी की दुकान से केवल अपनी जरूरत का सामान (जीरा और नमक) खरीदना।
निश्चित समय पर चूरन बेचने के लिए निकलना।
छह आने की कमाई होते ही चूरन बेचना बंद कर देना।
बचे हुए चूरन को बच्चों को मुफ़्त बाँट देना।
सभी काजय-जय राम कहकर स्वागत करना।
बाजार की चमक-दमक से आकर्षित न होना।
समाज को संतोषी जीवन की शिक्षा देना।

धर्मवीर भारती " काले मेघा पानी दे"

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश 1.

एक बात देखी है कि अगर तीस - चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच - छह से अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर जमीन में क्यारियाँ बनाकर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं

कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है , जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा। यही तो गांधी जी महाराज कहते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए -

(i)किसान के उदाहरण मे लेखक का आशय है?

(क) त्याग केलिए कुछ प्राप्त करना (ख)कुछ प्राप्ति के लिए त्याग करना

(ग) किसान की इच्छा, कुछ भी पहले करे (घ) त्याग बड़ा है, प्राप्ति से

(ii)'पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे' - कथन में भारतीय-संस्कृति की कौन-सी विशेषता निहित है?

(क) 'ईशावास्यमिदंसर्वम्' अर्थात् ईश्वर हर जगह है (ख) 'चरैवेति' अर्थात् चलते रहो, कर्म करते रहो

(ग) 'तेनत्यक्तेनभुञ्जीथा' अर्थात् संयमकेसाथभोगकरो (घ) 'यथा राजा तथा प्रजा' अर्थात् प्रजा राजा का अनुसरण करती है

(iii)उपर्युक्त गद्यांश किसका कथन है ?

(क) लेखक का (ख) जीजी का (ग) ऋषि-मुनियों का (घ)कोई भी नहीं

(iv)यथा राजा तथा प्रजा' इससे लेखक का क्या अभिप्राय है?

(क) जैसा राजा वैसी प्रजा (ख) प्रजा राजा का अनुकरण करती है

(ग) लोकतंत्र में बेईमान प्रजा बेईमान को शासन सौंपती है (घ) जनता हमेशा जनार्दन होती है

(v)पानी को गली में बोने से अभिप्राय है ?

(क) पानी के व्यर्थ में मेंढक मंडली पर फेंकना (ख) पानी का स्वयं उपयोग न करना

(ग) पानी का अधिक महत्त्वपूर्ण न होना (घ) पानी का दान करना

उत्तर	(i) ख	(ii) ग	(iii) ख	(iv) क	(v) घ

पाठ पर आधारित प्रश्नोतर (2 व 3 अंक वाले)

प्रश्न1-इन्दर सेना घर-घर जाकर पानी क्यों माँगती थी?

उत्तर- गाँव के लोग बारिश के लिए भगवान इंद्र से प्रार्थना किया करते थे। जब पूजा-पाठ,व्रत आदि उपाय असफ़ल हो जाते थे तो भगवान इंद्र को प्रसन्न करने के लिए गाँव के किशोर, बच्चे कीचड़ में लथपथ होकर गली-गली घूमकर लोगों से पानी माँगते थे।

प्रश्न2-इन्दरसेना को लेखक मेढक-मंडली क्यों कहता है, जीजी के बार-बार कहने पर भी वह इन्दरसेना पर पानी फेंकने को राजी क्यों नहीं होता ?

उत्तर- इन्दरसेना का कार्य आर्यसमाजी विचारधारा वाले लेखक को अंधविश्वास लगता है, उसका मानना है कि यदि इंदरसेना देवता से पानी दिलवा सकती है तो स्वयं अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेती? पानी की कमी होने पर भी लोग घर में एकत्र किये हुए पानी को इंदरसेना पर फ़ेंकते हैं। लेखक इसे पानी की निर्मम बरबादी मानता है।

प्रश्न3- रूठे हुए लेखक को जीजी ने किस प्रकार समझाया?

उत्तर- जीजी ने लेखक को प्यार से लड्डू-मठरी खिलाते हुए निम्न तर्क दिए-

त्याग का महत्त्व- कुछ पाने के लिए कुछ देना पड़ता है।

दान की महत्ता- ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है। जो चीज अपने पास भी कम हो और अपनी आवश्यकता को भूलकर वह चीज दूसरों को दान कर देना ही त्याग है |
इंद्रदेव को जल का अर्ध्य चढ़ाना- इंदरसेना पर पानी फ़ेंकना पानी की बरबादी नहीं बल्कि इंद्रदेव को जल का अर्ध्य चढ़ाना है।
पानी की बुवाई करना- जिस प्रकार किसान फ़सल उगाने के लिए जमीन पर बीज डालकर बुवाई करता है वैसे ही पानी वाले बादलों की फ़सल पाने के लिए इन्दर सेना पर पानी डाल कर पानी की बुवाई की जाती है।

प्रश्न4-नदियों का भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है ?
उत्तर- गंगा भारतीय समाज में सबसे पूज्य सदानीरा नदी है। जिसका भारतीय इतिहास में धार्मिक, पौराणिक और सांस्कृतिक महत्व है | वह भारतीयों के लिए केवल एक नदी नहीं अपितु माँ है, स्वर्ग की सीढ़ी है, मोक्षदायिनी है। उसमें पानी नहीं अपितु अमृत तुल्य जल बहता है। भारतीय संस्कृति में नदियों के किनारे मानव सभ्यताएँ फली-फूली हैं| बड़े-बड़े नगर, तीर्थस्थान नदियों के किनारे ही स्थित हैं ऐसे परिवेश मेंभारतवासी सबसे पहले गंगा मैया की जय ही बोलेंगे। नदियाँ हमारे जीवन का आधार हैं, हमारा देश कृषि प्रधान है। नदियों के जल से ही भारत भूमि हरी-भरी है । नदियों के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते, यही कारण है कि हम भारतीय नदियों की पूजा करते हैं |
प्रश्न4-आजादी के पचास वर्षों के बाद भी लेखक क्यों दुखी है, उसके मन में कौन से प्रश्न उठ रहे हैं?
उत्तर- आजादी के पचास वर्षों बाद भी भारतीयों की सोच में सकारात्मक बदलाव न देखकर लेखक दुखी है। उसके मन में कई प्रश्न उठ रहे हैं-
क्या हम सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र हैं?
क्या हम अपने देश की संस्कृति और सभ्यता को समझ पाए हैं?
राष्ट्र निर्माण में हम पीछे क्यों हैं, हम देश के लिए क्या कर रहे हैं?

हम स्वार्थ और भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हैं, त्याग में विश्वास क्यों नहीं करते ?

सरकार द्वारा चलाई जा रही सुधारवादी योजनाएँ गरीबों तक क्यों नहीं पहुँचती है?

फणीश्वरनाथ रेणु - पहलवान की ढोलक

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश 1.

एक बार वह 'दंगल' देखने श्यामनगर मेला गया। पहलवानों की कुश्ती और दाँव-पेंच देखकर उससे नहीं रहा गया। जवानी की मस्ती और ढोल की ललकारती हुई आवाज ने उसकी नसों में बिजली उत्पन्न कर दी। उसने बिना कुछ सोचे-समझे दंगल में 'शेर के बच्चे' को चुनौती दे दी। 'शेर के बच्चे' का असल नाम था चाँद सिंह। वह अपने गुरु पहलवान बादल सिंह के साथ पंजाब से पहले-पहल श्यामनगर मेले में आया था। सुंदर जवान, अंग-प्रत्यंग से सुंदरता टपक पड़ती थी। तीन दिनों में ही पंजाबी और पठान पहलवानों के गिरोह के अपनी जोड़ी और उम्र के सभी पट्ठों को पछाड़कर उसने 'शेर के बच्चे' की टायटिल प्राप्त कर ली थी। इसलिए वह दंगल के मैदान में लंगोट लगाकर एक अजीब किलकारी भरकर छोटी दुलकी लगाया करता था। देशी नौजवान पहलवान

उससे लड़ने की कल्पना से भी घबराते थे। अपनी टायटिल को सत्य प्रमाणित करने के लिए ही चाँद सिंह बीच-बीच में दहाड़ता फिरता था।

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए -

(i)प्रथम पंक्ति में 'वह' कौन है?

(क) चाँद सिंह (ख) बादल सिंह (ग) लुट्टन सिंह

(घ) शेर का बच्चा

(ii)लुट्टन को कुश्ती की प्रेरणा किससे मिली?

(क) दर्शकों से (ख) ढोल से (ग) भाइयों से (घ) गुरु से

(iii)'बिजली उत्पन्न होना' मुहावरे का आशय है?

(क) बिजली का उत्पादन होना (ख) जोश आना (ग) उजाला होना

(घ) उपर्युक्त सभी

(iv)शेर के बच्चे की टायटल किसने प्राप्त की?

(क) चाँद सिंह (ख) बादल सिंह (ग) लुट्टन सिंह

(घ) कोई नहीं

(v)चाँद सिंह अपने टायटिल को सत्य प्रमाणित करने के लिए क्या करता था?

(क) शेर की तरह दहाड़ता था (ख) छोटी दुलकी लगाया करता था (ग) शेर जैसा लड़ता था

(घ) सभी कथन सत्य है

उत्तर	(i) ग	(ii) ख	(iii) ख	(iv) क	(v) ख

पाठ पर आधारित प्रश्नोतर (2 व 3 अंक वाले)

प्रश्न1- लुट्टन को पहलवान बनने की प्रेरणा कैसे मिली ?

उत्तर- लुट्टन जब नौ साल का था तो उसके माता-पिता का देहांत हो गया था | सौभाग्य से उसकी शादी हो चुकी थी| अनाथ लुट्टन को उसकी विधवा सास ने पाल-पोसकर बड़ा किया | उसकी सास को गाँव वाले परेशान करते थे| लोगों से बदला लेने के लिए उसने पहलवान बनने की ठानी| धारोष्ण दूध पीकर, कसरत कर उसने अपना बदन गठीला और ताकतवर बना लिया | कुश्ती के दाँवपेंच सीखकर लुट्टन पहलवान बन गया |

प्रश्न2- रात के भयानक सन्नाटे में लुट्टन की ढोलक क्या करिश्मा करती थी?

उत्तर- रात के भयानक सन्नाटे मेंलुट्टन की ढोलक महामारी से जूझते लोगों को हिम्मत बँधाती थी | ढोलक की आवाज से रात की विभीषिका और सन्नाटा कम होता था| महामारी से पीड़ित लोगों की नसों में बिजली सी दौड़ जाती थी, उनकी आँखों के सामने दंगल का दृश्य साकार हो जाता था और वे अपनी पीड़ा भूल खुशी-खुशी मौत को गले लगा लेते थे। इस प्रकार ढोल की आवाज, बीमार-मृतप्राय गाँववालों की नसों में संजीवनी शक्ति को भर बीमारी से लड़ने की प्रेरणा देती थी।

प्रश्न3- लुट्टन ने सर्वाधिक हिम्मत कब दिखाई ?

उत्तर- लुट्टन सिंह ने सर्वाधिक हिम्मत तब दिखाई जब दोनों बेटों की मृत्यु पर वह रोया नहीं बल्कि हिम्मत से काम लेकर अकेले उनका अंतिम संस्कार किया| यही नहीं, जिस दिन पहलवान के दोनों बेटे महामारी की चपेट में आकर मर गए पर उस रात को भी पहलवान ढोलक बजाकर लोगों को हिम्मत बँधा रहा था| श्यामनगर के दंगल में पूरा जनसमुदाय चाँद सिंह के पक्ष में था चाँद सिंह को हराते समय लुट्टन ने हिम्मत दिखाई और बिना हताश हुए दंगल में चाँद सिंह को चित कर दिया |

प्रश्न4- लुट्टन सिंह राज पहलवान कैसे बना?

उत्तर- श्यामनगर के राजा कुश्ती के शौकीन थे। उन्होंने दंगल का आयोजन किया। पहलवान लुट्टन सिंह भी दंगल देखने पहुँचा । चांदसिंह नामक पहलवान जो शेर के बच्चे के नाम से प्रसिद्ध था, कोई भी पहलवान उससे भिड़ने की हिम्मत नहीं करता था। चाँदसिंह अखाड़े में अकेला गरज रहा था। लुट्टन सिंह ने चाँदसिंह को चुनौती दे दी और चाँदसिंह से भिड़ गया।ढ़ोल की आवाज सुनकर लुट्टन की नस-नस में जोश भर गया।उसने चाँदसिंह को चारों खाने चित कर दिया। राजासाहब ने लुट्टन की वीरता से प्रभावित होकर उसे राजपहलवान बना दिया।

प्रश्न5- पहलवान की अंतिम इच्छा क्या थी ?

उत्तर- पहलवान की अंतिम इच्छा थी कि उसे चिता पर पेट के बल लिटाया जाए क्योंकि वह जिंदगी में कभी चित नहीं हुआ था| उसकी दूसरी इच्छा थी कि उसकी चिता को आग देते समय ढोल अवश्य बजाया जाए |

प्रश्न6- ढोल की आवाज और लुट्टन के में दाँवपेंच संबंध बताइए-

उत्तर- ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँवपेंच में संबंध -

चट धा, गिड़ धा→ आजा भिड़ जा |

चटाक चट धा→ उठाकर पटक दे |

चट गिड़ धा→मत डरना |

धाक धिना तिरकट तिना→ दाँव काटो , बाहर हो जाओ |

धिना धिना, धिक धिना→ चित करो

हजारी प्रसाद द्विवेदी-शिरीष के फूल

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश 1.

जहाँ बैठ के यह लेख लिख रहा हूँ उसके आगे-पीछे, दायें-बायें, शिरीष के अनेक पेड़ हैं। जेठ की जलती धूप में, जबकि धरित्रीनिधूम अग्निकुंड बनी हुई थी, शिरीष नीचे से ऊपर तक फूलों से लद गया था। कम फूल इस प्रकार की गरमी में फूल सकने की हिम्मत करते हैं। कर्णिकार और आरग्वध (अमलतास) की बात मैं भूल नहीं रहा हूँ। वे भी आस-पास बहुत हैं। लेकिन शिरीष के साथ आरग्वध की तुलना नहीं की जा सकती। वह पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है, वसंत ऋतु के पलाश की भाँति। कबीरदास को इस तरह पंद्रह दिन के लिए लहक उठना पसंद नहीं था। यह भी क्या कि दस दिन फूले और फिर खंखड़-के-खंखड़-'दिन दस फूला फूलिके, खंखड़भयापलास!' ऐसे दुमदारों से तो लंडूरे भले। फूल है शिरीष। वसंत के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक जो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है।

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए -

(i)लेखक जहाँ बैठकर लिख रहे हैं, वहाँ कैसा वातावरण है?

(क) शिरीष के पेड़ हरियाली से लहक रहे हैं (ख) धरती बिना धुएं का अग्निकुंड बनी हुई है

(ग) विकल्प क और ख सही है (घ)विकल्प क और ख गलत है

(ii)लेखक शिरीष के फूल की क्या विशेषता बताता है?

(क) पूरे समय खिलता रहता है (ख) सबसे ज्यादा खुशबू देता है (ग) आषाढ और भादो तक खिलता है (घ) कोई नहीं

(iii) 'वह पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है, वसंत ऋतु के पलाश की भाँति'- पंक्ति में 'वह' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(क) शिरीष के लिए (ख) पलाश के लिए (ग) अमलताश के लिए (घ) आरवग्ध के लिए

(iv)किसे पन्द्रह दिन के लिए लहकना पसंद नहीं था?

(क) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ख) कबीरदास (ग) कालिदास (घ) तुलसीदास

(v)शिरीष किस ऋतु में लहकता है?

(क) शीत (ख) ग्रीष्म (ग) वर्षा (घ) पतझड़

उत्तर	(i) ग	(ii) ग	(iii) घ	(iv) ख	(v) ख

पाठ पर आधारित प्रश्नोतर (2 व 3 अंक वाले)

प्रश्न1-सिद्ध कीजिए कि शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है ?

उत्तर- शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है| जब पृथ्वी अग्नि के समान तप रही होती है वह तब भी कोमल फूलों से लदा लहलहाता रहता है|बाहरी गरमी, धूप, वर्षा आँधी, लू उसे प्रभावित नहीं करती। इतना ही नहीं वह लंबे समय तक खिला रहता है | शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यशील रहने तथा अपनी अजेय जिजीविषा के साथ निस्पृह भाव से प्रचंड गरमी में भी अविचल खड़ा रहता है।

प्रश्न२-आरग्वध (अमलतास) की तुलना शिरीष से क्यों नहीं की जा सकती ?

उत्तर- शिरीष के फूल भयंकर गरमी में खिलते हैं और आषाढ़ तक खिलते रहते हैं जबकि अमलतास का फूल केवल पन्द्रह-बीस दिनों के लिए खिलता है | उसके बाद अमलतास के फूल झड़ जाते हैं और पेड़ फिर से ठूँठ का ठूँठ हो जाता है | अमलतास अल्पजीवी है | विपरीत परिस्थितियों को झेलता हुआ ऊष्ण वातावरण को हँसकर झेलता हुआ शिरीष दीर्घजीवी रहता है | यही कारण है कि शिरीष की तुलना अमलतास से नहीं की जा सकती |

प्रश्न३-शिरीष के फलों को राजनेताओं का रूपक क्यों दिया गया है?

उत्तर- शिरीष के फल उन बूढ़े, ढीठ और पुराने राजनेताओं के प्रतीक हैं जो अपनी कुर्सी नहीं छोड़ना चाहते | अपनी अधिकार-लिप्सा के लिए नए युवा नेताओं को आगे नहीं आने देते | शिरीष के नए फलों को जबरदस्ती पुराने फलों को धकियाना पड़ता है | राजनीति में भी नई युवा पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी को हराकर स्वयं सत्ता सँभाल लेती है |

प्रश्न४- काल देवता की मार से बचने का क्या उपाय बताया गया है?

उत्तर- काल देवता कि मार से बचने का अर्थ है- मृत्यु से बचना | इसका एकमात्र उपाय यह है कि मनुष्य स्थिर न हो| गतिशील, परिवर्तनशील रहे | लेखक के अनुसार जिनकी चेतना सदा ऊर्ध्वमुखी (आध्यात्म की ओर) रहती है, वे टिक जाते हैं |

प्रश्न५- गाँधीजी और शिरीष की समानता प्रकट कीजिए |

उत्तर- जिस प्रकार शिरीष चिलचिलाती धूप, लू, वर्षा और आँधी में भी अविचल खड़ा रहता है, अनासक्त रहकर अपने वातावरण से रस खींचकर सरस, कोमल बना रहता है, उसी प्रकार गाँधी जी ने भी अपनी आँखों के सामने आजादी के संग्राम में अन्याय, भेदभाव और हिंसा को झेला | उनके कोमल मन में एक ओर निरीह जनता के प्रति असीम करुणा जागी वहीं वे अन्यायी शासन के विरोध में डटकर खड़े हो गए |

बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर -श्रम विभाजन और जाति प्रथा

पाठ का सारांश - इस पाठ के अंतर्गत समाज में प्रचलित जाति प्रथा को गलत ठहराकर कार्य कुशलता के आधार पर श्रम विभाजन को आवश्यक बताया गया है , क्योंकि जाति के आधार पर श्रम विभाजन करने से व्यक्ति की निजी क्षमता का सदुपयोग नहीं हो पाता ।

जाति -प्रथा एक ओर तो मनुष्य को जीवन भर किसी पेशे (कार्य/व्यवसाय) के साथ बाँधे रखती है तथा दूसरी ओर यदि कभी किसी व्यक्ति को पेशा(कार्य/व्यवसाय) बदलने की आवश्यकता पड़ जाए तो उसके पास भूखे मरने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं छोड़ती ।

श्रम विभाजन के अनुसार व्यक्ति अपने पूर्व निर्धारित कार्य / श्रम को ही कर सकता है । उसको वही कार्य करना पड़ता है जो समाज उसके लिए निर्धारित करता है, चाहे वह कार्य उसकी रुचि के अनुरूप हो या प्रतिकूल ।

इस प्रकार श्रम विभाजन मनुष्य में काम के प्रति अरुचि और उसे टालने की प्रवृत्ति का कारण बनता है । ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो और न दिमाग, वहाँ कोई कुशलता कैसे प्राप्त कर सकता है ?

जाति -प्रथा भारत में बेरोज़गारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है, क्योंकि समाज में अपनी रुचि अनुसार पेशा(कार्य/व्यवसाय) न चुनने की आज़ादी बेरोज़गारी का एक मुख्य कारण है । जाति - प्रथा आर्थिक रूप से भी हानिकारक है ।

जाति प्रथा पर आधारित श्रम विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं होता और न ही मनुष्य की व्यक्तिगत भावनातथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व होता है ।

अतः यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी जाति -प्रथा हानिकारक प्रथा है, क्योंकि यह मनुष्यों की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि व आत्म - शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है ।

मेरी कल्पना का आदर्श समाज

सारांश -लेखक की कल्पना का आदर्श समाज वह हैं जिसमें स्वतंत्रता, समता और भाईचारे का भाव हो | भाई चारे में किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती | समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी वांछित परिवर्तन समाज में तुरंत सब तरफ फैल जाए |

ऐसे समाज में सब कार्यों में सभी की सहभागिता होनी चाहिए,सबकोसबकी रक्षा के प्रति सजग होना चाहिए | सबको सामाजिक संपर्क के साधन और अवसर उपलब्ध होने चाहिए|

<u>मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर निर्भर है</u>

शारीरिक वंश परंपरा

सामाजिक उत्तराधिकार

मनुष्य के अपने प्रयत्न

हालाँकि इन तीनों दृष्टियों से मनुष्य समान नहीं होते | परन्तु तब भी क्या समाज को उनके साथ असमान व्यवहार करना चाहिए ? इसका उत्तर है -असमान प्रयत्न के कारण असमान व्यवहार करना उचित है परंतु उसमें भी सब को अपनी क्षमता विकसित करने के पूरे अवसर देने चाहिए |

<u>वंश और सामाजिक उत्तराधिकार</u>

लेखक मानता है कि वंश परंपरा और सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर असमानता नहीं की जानी चाहिए, इससे केवल सुविधा संपन्न लोगों को लाभ मिलेगा, वास्तव में प्रयास मनुष्य के वश में है किंतु वंश और सामाजिक प्रतिष्ठा उसके वश में नहीं है | अतः वंश और सामाजिकता के आधार पर असमान व्यवहार करना अनुचित है |

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश 1.

जाति-प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्राय: आती है, क्योंकि उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो इसके लिए भूखों मरने के अलावा क्या चारा रह जाता है? हिंदू धर्म की जाति-प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो। इस प्रकार पेशा-परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति-प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए -

(i) जाति-प्रथा पेशे का पूर्व निर्धारण करती हैं। इसका क्या परिणाम नहीं होता है?

(क) बेरोजगार बढ़ जाती है (ख) भूखे मरने की नौबत आ जाती है (ग) लोग पेशे में पारंगत हो जाते हैं (घ) अकुशलता बढ़ती है

(ii) आधुनिक युग में पेशा बदलने की जरूरत क्यों पड़ती हैं?

(क) तकनीक और उद्योग-धंधों में बदलाव के कारण (ख) बेरोजगारी के कारण (ग) स्वेच्छा के कारण (घ) उपर्युक्त सभी कारण

(iii) पेशा बदलने की स्वतंत्रता न होने से क्या परिणाम होता हैं?

(क) बेरोजगार बढ़ जाती है (ख)भूखे मरने की नौबत आ जाती है (ग) कार्य को टालु प्रवृत्ति बढती है (घ) उपर्युक्त सभी

(iv) हिन्दू धर्म में जाति प्रथा की क्या स्थिति है?

(क) हिंदू धर्म में जाति-प्रथा दूषित है। (ख) वह किसी भी व्यक्ति को पेशा चुनने की आजादी नहीं देती

(ग) विकल्प क और ख सही है (घ) विकल्प क और ख गलत है

(v) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ के लेखक कौन हैं?

(क) पंडित जवाहरलालनेहरु (ख) बाबा साहेबआंबेडकर (ग) महात्मा गाँधी (घ) हजारी प्रसाद द्विवेदी

उत्तर	(i) घ	(ii) घ	(iii) घ	(iv) ग	(v) ख

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश 2.

फिर मेरी दृष्टि में आदर्श समाज क्या है? ठीक है, यदि ऐसा पूछेगे, तो मेरा उत्तर होगा कि मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर आधारित होगा? क्या यह ठीक नहीं है, भ्रातृता अर्थात भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वांछित

परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह कि दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है, और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है।

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए -

(i)लेखक ने किन विशेषताओं को आदर्श समाज की धुरी माना है?

(क) स्वतंत्रता (ख) भातृता (ग) समता (घ) उपर्युक्त सभी

(ii)भ्रातृता के स्वरूप की विशेषता नहीं है

(क) दूध-पानी का मिश्रण (ख) सबकी रक्षा के प्रति सजग (ग) भाई-भतीजावाद (घ) बहुविधि हितों में सबका भाग

(iii)अबाध संपर्क'से लेखक का क्या अभिप्राय है?

(क) बाधा रहित के संपर्क (ख) बाधा सहित के संपर्क (ग) अबोध संपर्क (घ) कोई नहीं

(iv) 'वांछित' शब्द का विलोम शब्द है ?

(क) इच्छित (ख) अवांछित (ग) बिना इच्छा के (घ) स्वेच्छा

(v) 'लोकतंत्र' शब्द का समास विग्रह है?

(क) लोक का तंत्र (ख) लोक में तंत्र (ग) लोक से तंत्र (घ) लोक के लिए तंत्र

उत्तर	(i) घ	(ii) ग	(iii) क	(iv) ख	(v) क

पाठ पर आधारित प्रश्नोतर (2 व 3 अंक वाले)

प्रश्न1-डॉ० भीमराव अंबेडकर जातिप्रथा को श्रम-विभाजन का ही रूप क्यों नहीं मानते हैं ?

उत्तर -

१- क्योंकि यह विभाजन अस्वाभाविक है |

२- यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है |

३- व्यक्ति की क्षमताओं की उपेक्षा की जाती है |

४- व्यक्ति के जन्म से पहले ही उसका पेशा निर्धारित कर दिया जाता है |

५- व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलने की अनुमति नहीं देती |

प्रश्न२- दासता की व्यापक परिभाषा दीजिए |

उत्तर - दासता केवल कानूनी पराधीनता नहीं है| सामाजिक दासता की स्थिति में कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा तय किए गए व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने को विवश होना पड़ता है | अपनी इच्छा के विरुद्ध पैतृक पेशे अपनाने पड़ते हैं |

प्रश्न३- मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर रहती है ?

उत्तर -मनुष्य की क्षमता मुख्यत: तीन बातों पर निर्भर रहती है-

शारीरिक वंश परंपरा

सामाजिक उत्तराधिकार

मनुष्य के अपने प्रयत्न

लेखक का मत है कि शारीरिक वंश परंपरा तथा सामाजिक उत्तराधिकार किसी के वश में नहीं है परन्तु मनुष्य के अपने प्रयत्न उसके अपने वश में है | अत: मनुष्य की मुख्य क्षमता- उसके अपने प्रयत्नों को बढ़ावा मिलना चाहिए |

प्रश्न४- समता का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि राजनीतिज्ञ पुरूष के संदर्भ में समता को कैसे स्पष्ट किया गया है ?

जाति, धर्म, संप्रदाय से ऊपर उठकर मानवता अर्थात् मानव मात्र के प्रति समान व्यवहार ही समता है। राजनेता के पास असंख्य लोग आते हैं, उसके पास पर्याप्त जानकारी नहीं होती सबकी सामाजिक पृष्ठभूमि क्षमताएँ, आवश्यकताएँ जान पाना उसके लिए संभव नहीं होता अतः उसे समता और मानवता के आधार पर व्यवहार के प्रयास करने चाहिए ।

पूरक पुस्तक वितान भाग-2 (10 अंक)

सिल्वर वेडिंग

लेखक - मनोहर श्याम जोशी

पाठ का सार- " सिल्वर वेडिंग" कहानी की रचना मनोहर श्याम जोशी ने की है । यह लंबी कहानी लेखन की अन्य रचनाओं से कुछ अलग दिखाई देती हैं । इस पाठ के माध्यम से पीढ़ी के अंतराल का मार्मिक चित्रण किया गया है । आधुनिकता की ओर बढ़ता हमारा समाज एक और कई नई उपलब्धियां को समेटे हुए हैं तो दूसरी और मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने वाले मूल्य कहीं घिसते चले गए हैं । अर्थात आधुनिक दौर में यशोधर बाबू परंपरागत मूल्यों को हर हाल में जीवित रखना चाहते हैं उनका उसूल पसंद होना ओफिस एवं घर के लोगों के लिए सर दर्द बन गया था। दिल्ली में अपने पांव जमाने में किशन डा ने मदद की थी,अतः वे उनके आदर्श बन गए । दफ्तर में विवाह की 25वीं सालगिरह के दिन दफ्तर के कर्मचारी, मेनन और चड्ढा उनसे जलपान के लिए पैसे मांगते हैं। यशोधर बाबू उनको यह पैसे बड़े अनमने ढंग से देते हैं क्योंकि उन्हें फिजूल खर्ची पसंद नहीं है । यशोधर बाबू के तीन बेटे हैं बड़ा बेटा भूषण विज्ञापन कंपनी में काम करता है। दूसरा बेटा आई ए एस की तैयारी कर रहा है और तीसरा छात्रवृत्ति के साथ अमेरिका जा चुका है। बेटी भी डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए

अमेरिका जाना चाहती है। वह विवाह हेतु किसी भी वर को पसंद नहीं करती। यशोधर बाबू बच्चों की तरक्की से तो खुश हैं किंतु परंपरागत संस्कारों के कारण वे दुविधा में है । उनकी पत्नी ने स्वयं को बच्चों की सोच के साथ ढाल लिया है। आधुनिक ना होते हुए भी बच्चों के जोर देने पर अधिक मॉडर्न बन गई हैं ।

बच्चे घर पर सिल्वर वेडिंग की पार्टी रखते हैं जो यशोधर बाबू के उसूलों के खिलाफ था यशोधर बाबू को लगता है कि किशन द आज भी उनका मार्गदर्शन करने में सक्षम है और यह बताने में भी की मेरे बीवी बच्चे जो कुछ भी कर रहे हैं उनके विषय में मेरा रवैया क्या होना चाहिए ।सिल्वर वेडिंग पार्टी के दिन संध्या पूजा कर रहे यशोधर बाबू की पत्नी ने वहां आकर झड़कते हुए पूछा कि आज पूजा में ही बैठे रहोगे । मेहमानों के जाने की बात सुनकर बी लाल गमछे में ही बैठक में चले गए बच्चे किस परंपरा के सख्त लाभ थे । उनकी बेटी इस बात पर बहुत झल्लाई । टेबल पर रखे प्रेजेंट खोलनेह की बात कही। भूषण उनको खोलता है कि यह यूनी ड्रेसिंग ग्राउंन है। सुबह दूध लाने के समय आप फटा हुआ पुलोवर पहन कर चले जाते हैं ।वह बुरा लगता है ।बेटी पिता का पजामा कुर्ता उठा लाई इसे पहनकर गाउन पहने। बच्चों के आग्रह पर वे गाउन पहन लेते हैं। उनकी आंखों की कोर में जरा सी नमी चमक गई है यह कहना कठिन है कि उनको भूषण की यह बात चुभ गई कि आप इसे पहन कर दूध लेने जाया करें वह है स्वयं दूध लाने की बात नहीं कर रहा।

पाठ पर आधारित पांच अंकों के प्रश्नोत्तर-

1. यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ दल सकते में सफल होते हैं लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर- यशोधर बाबू के बचपन में ही उनके माता-पिता का देहांत हो जाने की वजह से वह जिम्मेदारियां के बोझ के तले दब गए । वे सदैव पुराने ख्यालों वाली लोगों के बीच रहे, पले, बड़े। यशोधर बाबू अपने आदर्श घर संस्कारी किशन दास से अधिक प्रभावित हैं और आधुनिक प्रवेश में बदलते हुए जीवन मूल्यों और संस्कारों के विरुद्ध है अतः वे उन परंपराओं को चाह कर भी छोड़ नहीं पाते । इन्हीं सब कर्म से वहां परिवार की सदस्यों से उनके मतभेद बना रहता है जबकि उनकी पत्नी अपने बच्चों के साथ खड़ी दिखाई देती हैं विवाह के बाद उसे संयुक्त परिवार के कठोर नियमों का निर्वाह करना पड़ा इसीलिए वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से जल्दी ही प्रभावित हो गई। वे बेटी के कहे अनुसार नए कपड़े पहनती हैं और बेटों के किसी मामले में दखल नहीं देती। यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ परिवर्तित हो जाती हैं लेकिन यशोधर बाबू अभी भी किशनदा के संस्कारों और परंपराओं से चिपके हुए हैं। वे बदलते समय को समझते तो हैं किंतु पूरे मन से स्वीकार नहीं कर पाने के कारण असफल रहते हैं।

2- "जो हुआ होगा " वाक्य की आप कितनी अर्थ छबियां खोज सकते हैं?

उत्तर- जो हुआ होगा एक भाव है उसे बात को समाप्त करने का जिसमें आपका मन नहीं लगता है । जो हुआ होगा के मेरे अनुसार निम्नलिखित अर्थ छबियां हो सकती हैं-

- जो बीत गया वह लौट कर नहीं आता
- मनुष्य का आत्मसम्मान समाप्त हो जाता है ।
- मनुष्य अपने जीवन में निराशा का भाव के साथ अपने को असहाय व एकाकीपन का अनुभव करता है।

3. समहाउ इंप्रोपर वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के आरंभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं । इस वाक्यांश से उनके व्यक्तित्व और कहानी के तथ्य का क्या संबंध बनता है?

उत्तर- यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में संभव प्रॉपर शब्द का प्रयोग तकिया कलाम की तरह करते हैं उन्हें जो अनुचित लगता है तब अचानक यह वाक्य कहते हैं इस बातें का प्रयोग निम्नलिखित संदर्भ में हुआ है
- दफ्तर में सिल्वर वेडिंग की पार्टी देने की मांग पर।
- साधारण पुत्र को असाधारण वेतन मिलने पर
- स्कूटर की सवारी पर पत्नी एवं पुत्री के पहनावे पर डीडीए फ्लैट का पैसा न भरने पर खुशहाली में रिश्तेदारों की उपेक्षा करने पर छोटे साल के पहुंचे पान पर केक काटने की विदेशी परंपरा पर ।
इन संदर्भों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यशोधर बाबू सिद्धांत वादी हैं यशोधर बाबू आधुनिक प्रवेश में बदलते हुए जीवन मूल्यों ...
4. यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में कृष्ण द की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । आपके जीवन को दिशा देने में किस का महत्वपूर्ण योगदान रहा और कैसे?
उत्तर-जिस प्रकार यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में कृष्ण द की महत्वपूर्ण भूमिका रहे हैं ऐसे ही मेरे जीवन को दिशा देने में मेरी मां का हाथ रहा है मैं यह हत्या नहीं कर पा रहा था कि मैं दसवीं के बाद किस विषय पर आगे पढ़ाई करूं । भाई बहन और सभी सभी संबंधी मुझे मेडिकल के लिए तैयार करना चाहते थे लेकिन मैं मेडिकल के लिए स्वयं को उचित नहीं पाता हूं । तब मुझे मां ने समझाया की झूठी उम्मीद देने से अच्छा है उन्हें वह उम्मीद दो जो तुम कर सकते हो उनकी यह बात मेरे दिल को छू गई मैं अपने भाई बहनों को बताया कि मैं आगे चलकर शिक्षक के लिए तैयारी करना चाहता हूं मेरी बात से भी बहुत प्रसन्न हुए और तैयार हो गए आगे चलकर मैंने मां को अपना आदर्श बनाया उनके विचारों तथा जीवन शैली को समझने का प्रयास किया और जो मुझे अच्छा लगता चला गया आज मैं बहुत खुश हूं जो मैंने निर्णय लिया था वह सही था ।
5. वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी (सिल्वर वेडिंग) से कहां तक मेल बिठा पाते हैं?
उत्तर- इस पाठ के माध्यम से पीढ़ी के अंतराल का मार्मिक चित्रण किया गया है ।आधुनिकता के दौर में यशोधर बाबू परंपरागत मूल्यों को हर हाल में जीवित रखना चाहते हैं। उनका उसूल पसंद होना दफ्तर एवं घर के लोगों के लिए सर दर्द बन गया था। यशोधर बाबू संस्कारों से जुड़ा रहना चाहते हैं और संयुक्त परिवार की संवेदनाओं को अनुभव करते हैं। जब कि उनके बच्चे अपने आप में जीना चाहते हैं। वह पुरानी मान्यताओं को नहीं मानते हैं। इन सब वजह से उनके और उनके परिवार के बीच हमेशा मतभेद बना रहता है । अतः मेरे मन से पुरानी पीढ़ी को कुछ आधुनिक होना पड़ेगा और नई पीढ़ी को भी पुरानी परंपराओं और मान्यताओं का ख्याल रखना होगा,यह तभी संभव है जब दोनों पक्ष एक दूसरे का सम्मान करेंगे एवं सुख सुविधा का ख्याल रखेंगे ।
6. "सिल्वर वेडिंग "कहानी के पात्र किशनदा के उन जीवन मूल्यों की चर्चा कीजिए जो यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे हैं ।
उत्तर-सिल्वर वेडिंग कहानी के पात्र किशन द के अनेक जीवन मूल्य ऐसे थे जो यशोधर बाबू की सोच में हमेशा बने रहते थे उनमें से कुछ जीवन मूल्य निम्नलिखित हैं-
*सादगी व सरलता- यशोधर बाबू अत्यंत सादगी पूर्ण जीवन जीते थे विश्व विद्या की साधनों के फेर में नहीं पढ़ते थे वे साइकिल पर ऑफिस जाते थे तथा फटा फ्लावर पहनकर दूध लाते थे ।
*अपनी संस्कृति से लगाव- यशोधर बाबू को भारतीय संस्कृति से गहरा लगाव है जबकि उनके बच्चों पर पाश्चात सभ्यता का प्रभाव दिखाई देता है। वे पुरानी परंपरा और भारतीय संस्कृति के पक्षधर हैं ।

*पारिवारिक जीवन शैली- यशोधर बाबू सहज पारिवारिक जीवन जीना चाहते हैं बे निकट संबंधियों से रिश्ते बनाए रखना चाहते हैं तथा यह इच्छा रखते हैं कि उन्हें परिवार के मुखिया के रूप में जाने ।

*आत्मीयता- यशोधर बाबू अपने परिवार के सदस्यों के अलावा अन्य लोगों से भी आत्मीय संबंध रखते हैं।

7. यशोधर पंत की तीन चारित्रिक विशेषताओं को उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर - यशोधर बाबू के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

(i) परंपरावादी- यशोधर बाबू परंपरावादी हैं उन्हें पुराने रीति रिवाज अच्छे लगते हैं वह संयुक्त परिवार के समर्थक हैं उन्हें पत्नी व बेटी का संवरना अच्छा नहीं लगता घर में भौतिक चीजों से उन्हें चिढ़ है ।

(ii) चरित्र नायक- यशोधर कहानी के नायक हैं वे सेक्शन ऑफिसर हैं परंतु नियमों से बंधे हुए वस्तुतः वे नए प्रवेश में मिसफिट हैं देने को ले नहीं सकते तथा पुराने को छोड़ नहीं सकते ।

(iii) असंतुष्ट - यशोधर असंतुष्ट व्यक्तित्व के हैं उन्हें अपनी संतानों की विचारधारा पसंद नहीं है वह घर से बाहर जानबूझकर रहते हैं उन्हें बेटों का व्यवहार वह बेटी का पहनावा अच्छा नहीं लगता घर में उनसे कोई राय नहीं लेता ।

8- क्या पश्चात संस्कृति के प्रभाव को सिल्वर वैडिंग कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है? तर्क सहित उत्तर दीजिए ।

उत्तर -सिल्वर वेडिंग कहानी में युवा पीढ़ी को पश्चात रंग में रंगा हुआ दिखाया गया है ।इस पीढी की नजर में भारतीय मूल्य व परंपराओं के लिए कोई स्थान नहीं है। वे रिश्तेदारी रीति रिवाज वेशभूषा आदि सबको छोड़कर पश्चिमी रूप को अपना रहे हैं, परंतु यह कहानी की मूल संवेदना नहीं है। कहानी के पात्र यशोधर पुरानी परंपराओं को जीवित रखे हुए हैं ,भले ही उन्हें घर में अकेलापन सहन करना पड़ रहा हो ।वह अपने दफ्तर व घर में विदेशी परंपराओं पर टिप्पणी करते रहते हैं ।इस से तनाव उत्पन्न होता है। पाश्चात संस्कृति का प्रभाव पीढ़ी अंतराल के कारण ज्यादा रहता है ।

9. "सिल्वर वेडिंग" में उपहार में मिले ड्रेसिंग ग्राउंन को पहनते हुए यशोधर पंत की 'आंखों ' की कोर में जरा सी नमी चमक आई ' इसका कारण आप क्या मानते हैं?

उत्तर -सिल्वर वेडिंग में यशोधन ने उपहार में मिली ड्रेसिंग गाउन को पहने तो उनकी आंखों में नमी आ गई इसका कारण यह था कि बे किशनदा के आदर्शों पर चल रहे थे। किशनदा अकेलेपन से भरे थे ।जबकि यशोधर के साथ उनका पूरा परिवार था ।वह अकेलेपन की मौत मनाना नहीं चाहते थे। नई पीढ़ी से सहमति के बावजूद भी उनके साथ रहना चाहते थे ।

10. यशोधर बाबू के बारे में आपकी क्या धारणा बनती है? दिए गए तीन कथनों में से आप इसके समर्थन में है अपने अनुभवों और सोच के आधार पर उसके लिए तर्क दीजिए-

1- यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह से पुराने हैं और वह सहानुभूति के पात्र नहीं है ।

2. यशोधर बाबू मैं एक तरह का द्वंद है जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचना तो है पर पुराना छोड़ना नहीं इसलिए उन्हें शांति के साथ देखने की जरूरत है ।

3. यशोधर बाबू एक आदर्श व्यक्तित्व हैं और नई पीढ़ी द्वारा उनके विचारों को अपनाना ही उचित है ।

उत्तर- यशोधर बाबू में एक तरह का द्वंद है जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचना तो है पर पुराना छोड़ना नहीं इसीलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है प्रसिद्ध पाठ में अनेक ऐसे प्रसंग आए हैं जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है मेरा मेरे छोटे भाई के साथ भी कुछ यही अनुभव है मेरा छोटा भाई मुझे 7 साल छोटा है उसकी और मेरी सोच में अभी यह अंतर देखने को मिलता है मैं जहां आठवीं कक्षा में कंप्यूटर सीखना आरंभ

किया था वहां 8 साल में लैपटॉप पर काम कर रहा है वह मुझसे ज्यादा आधुनिक चीजों के विषय में जानकारी रखता है आज वह 11 साल का है उसकी बातें मेरी बातों से अधिक रोचक होती हैं मैं उसके साथ बातें करना चाहता हूं लेकिन मेरा बड़पन मुझे उसकी ओर जाने नहीं देता अतः में है यशोधर बाबू की स्थिति को समझ सकता हूं ।

11. अपने घर और विद्यालय के आसपास हो रहे उन बदलावों के बारे में लिखे जो सुविधाजनक और आधुनिक होते हुए भी बुजुर्गों को अच्छे नहीं लगते। अच्छा न लगने के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर -हमारे घर व विद्यालय के आसपास निम्नलिखित बदलाव हो रहे हैं जिन्हें बुजुर्ग पसंद नहीं करते-

- युवाओं द्वारा मोबाइल फोन का प्रयोग करना ।
- युवाओं द्वारा पैदल ना चलकर तीव्र गति से चलते हुए मोटरसाइकिल आदि का प्रयोग ।
- लड़कियों द्वारा जींस व शर्ट पहनना ।
- लड़के लड़कियों की दोस्ती व पार्क में घूमने ।
- प्रातः काल में देर से उठाना ।
- खड़े होकर भोजन करना हुआ अपने रीति-रिवाज के प्रति अलगाव होना।

जूझ

लेखक का नाम -आनंद यादव

पाठ का सारांश- यह मराठी के पश्चात कथाकार डॉक्टर आनंद यादव का बहुत चर्चित एवं बहु प्रशंसति आत्मकथा आत्मकथात्मक उपन्यास का एक अंश है। यह एक किशोर के देखे और भोगे हुए गवाई जीवन के खुरदरे यथार्थ और उसके रंगारंग परवेश की अत्यंत विश्वसनीय जीवंत गाथा है ।इस आत्मकथात्मक उपन्यास में जीवन का मर्म स्पर्शी चित्रण तो है ही ,अस्त-व्यस्त अलमस्त निम्न मध्यमवर्गीय ग्रामीण समाज और लड़ते जूझते किसान मजदूर के संघर्ष की भी अनूठी झांकी है । उपन्यास के इस अंश में हर स्थिति में पढ़ने की लालसा लिए धीरे-धीरे साहित्य ,संगीत और अन्य विषयों की ओर बढ़ते किशोर के कदमों की आकुल आहट सुनी जा सकती है जो निश्चय ही किशोर होते हुए विद्यार्थियों के लिए हमदम बन सकती हैं।

पाठ पर आधारित पांच अंकों के प्रश्नोत्तर-

1. "जूझ "शीर्षक के औचित्व पर विचार करते हुए या स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को बताता है?

उत्तर- जूझ का साधारण अर्थ है जूझना अथवा संघर्ष करना यह उपन्यास अपने नाम की सार्थकता को सिद्ध करता है उपन्यास का कथा नायक भी जीवन भर स्वयं से और अपनी परिस्थितियों से जूझता रहता है यह शीर्षक कथा नायक के संघर्षशील भारती का परिचय देता है हमारे कथानायक में संघर्ष की भावना है वह संघर्ष करने के लिए मजबूर है लेकिन उसका यह संघर्ष ही उसे एक दिन पढ़ा-लिखा इंसान बना देता है इस संघर्ष में भी उसने आत्मविश्वास बनाए रखा है यद्यपि परिस्थितियों उसके विरुद्ध होती हैं तथापि वह अपने आत्मविश्वास के बल पर परिस्थितियों से जूझने में सफल हो जाता है वास्तव में कथानक की संघर्ष शीलता ही उसकी चारित्रिक विशेषता है शीर्षक से यही केंद्रीय विशेषता उजागर होती है ।

2. स्वयं कविता रक लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

उत्तर- लेखक की पाठशाला में मराठी भाषा के अध्यापक न.ब. सौदलगेकर कविता के अच्छे रसिक व मर्मज्ञ थे।वे कक्षा में सस्वर कविता पाठ करते थे तथा लय, छंद ,यति-जति, आरोह- अवरोह आदि का ज्ञान कराते थे।

लेखक इनको देखकर बहुत प्रभावित हुआ। इससे पहले उसे कवि उसे दूसरे लोक के जीव लगते थे ।इसके बाद आनंद को यह विश्वास हुआ कि कवि उसी की तरह आदमी ही होते हैं ।एक बार उसने देखा कि उसके अध्यापक ने अपने घर की मलती लता पर ही कविता लिख दी ,तब उसे लगा कि वह अपने आसपास के दृश्य पर कविता बना सकता है ।इस प्रकार उसके मन में स्वयं कविता लिख लेने का आत्मविश्वास पैदा हुआ।

3. आपके ख्याल से पढ़ाई लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का। अपने विचार व्यक्त कीजिए|

उत्तर- मेरे ख्याल से पढ़ाई लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया बिल्कुल सही था क्योंकि लेखक को पढ़ने की इच्छा थी जिसे दत्ता जी राव ने सही पहचाना। उसकी प्रतिभा के बारे में दत्ता जी ने पूरी तरह जान लिया था ।वैसे भी लेखक को पढ़ाने के पीछे दत्ता जी राव का कोई स्वार्थ नहीं था। जबकि लेखक के पिता का पढ़ाई लिखाई के बारे में रवैया बिल्कुल गलत था ।वास्तव में लेखक का पिता अपने स्वार्थ के लिए अपने बेटे को नहीं पड़ना चाहता था। उसे पता था कि यदि उसका बेटा स्कूल जाने लगा तो उसे ऐश करने के लिए समय नहीं मिलेगा। इसीलिए हमें दत्ता जी राव और लेखक का रवैया पढ़ाई के संबंध में बिल्कुल ठीक लगता है ।

4. पांचवी कक्षा में दोबारा पढ़ने आए लेखक को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा? जूस कहानी के आधार पर लिखिए ।

उत्तर- जो लड़के चौथी पास करके कक्षा में आए थे लेखक उनमें से गली के दो लड़कों के सिवाय और किसी को जानता तक नहीं था ।जिन लड़कों को वह कम अक्ल और अपने से छोटा समझता था उन्हीं के साथ अब उसे बैठकर पढना पड रहा था। वह अपनी कक्षा में पुराना विद्यार्थी होकर भी अजनबी बनकर रह गया। पुराने सहपार्ट तो उसे सव तरह से जानते- समझते थे ,मगर नए लड़कों ने तो उसकी धोती ,उसका गमछा उसका थैला आदि सब चीजों का मजाक उड़ाना आरंभ कर दिया। उसके मन में यह दुख भी था कि कितनी कोशिश करने के बाद पढ़ने का अवसर मिला । इस प्रकार के व्यवहार से उसके आत्मविश्वास में कमी आना।

5. "जूझ "कहानी में पिता को मनाने के लिए मां और दत्ता जी राव की सहायता से एक चाल चली गई है। क्या ऐसा कहना ठीक है?

उत्तर- जूझ कहानी में पिता को मनाने के लिए मां और दत्तजी राव की सहायता से एक चाल चली गई है यह कहना बिल्कुल ठीक है। लेखक के पिता उसे पढ़ना नहीं चाहते थे यह खुद अय्याशी करने के लिए बच्चों को खेती के काम में लगाना चाहते थे पढ़ने की बात करने पर जंगली सूअर की तरह गुर्राते थे ।उन पर दत्ता जी राव का दाबाव भी काम कर सकता था ।अतः लेखक की मां व दत्ता जीराव ने मिलकर उन्हें मानसिक तौर पर घेरा तथा आगे पढ़ने की स्वीकृति ली। यदि यह उपाय नहीं किया जाता तो लेखक कवि शिक्षित नहीं हो पाता ।

6. जूझ कहानी में चित्रित ग्रामीण जीवन का संक्षिप्त वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

उत्तर- जूझ कहानी में ग्रामीण जीवन का यथार्थ पारक चित्रण किया गया है। गांव में किसान, जमीदार, आदि कई वर्गो के लोग रहते हैं ।लेखक स्वयं कृषि कार्य करता है। उसके पिता बाजार में गुड़ के ऊंचे भाव पाने के लिए गन्ने की पेराई जल्दी कर देते हैं। गांव में पूरा परिवार कृषि कार्य में लगा रहता है, चाहे बच्चे हो, महिलाएं हो या वृद्ध।गांव में कुछ बड़े जमींदार भी होते हैं जिनका गांव पर काफी प्रभाव होता है ।गांव में कृषक बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर कम ध्यान देते हैं ।ग्रामीण स्कूलों में बच्चों के पास कपड़े भी पर्याप्त नहीं होते। बच्चों को घर व पाठशाला का काम करना पड़ता है । पढ़ने के लिए उन्हें अवसर भी नहीं मिलते ।

7. बसंत पाटिल कौन है? लेखक ने उससे दोस्ती क्यों हुआ कैसे की?

उत्तर - बसंत पाटिल दुबला पतला परंतु होशियार लड़का था। वह स्वभाव से शांत था तथा हर समय पढ़ने में लगा रहता था ।वह घर से पूरी तैयारी करके आता था। तथा उसके सभी सवाल ठीक होते थे। वह दूसरों के सवालों की जांच करता था ।उसी कक्षा का मॉनिटर बना दिया गया था। लेखक भी उसकी देखा अच्छी मेहनत करने लगा उसने बस्तर व्यवस्थित किया किताबों पर अखबारी कागज का कवर चढ़ाया तथा हर समय पढ़ने लगा। उसके सवाल भी ठीक निकलने लगे ।वह भी बसंत पाटिल की तरह लड़कों के सवाल जांचने लगा ।इस तरह दोनों दोस्त बन गए तथा एक दूसरे की सहायता से कक्षा के अनेक काम करने लगे ।

अतीत में दबे पाँव - ओम थानवी

पाठ सार:- इस पाठ में लेखक ओम थानवी जी ने सिंधु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल "मोहनजोदड़ो" की यात्रा का वर्णन किया है। यह लगभग 5,000 साल पुरानी सभ्यता की अद्‌वितीयता और इसकी खुदाई में मिली वस्तुओं के माध्यम से उस समय के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की झलक प्रस्तुत करता है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा को दुनिया के सबसे पुराने नियोजित शहरों में माना जाता है। इनकी खुदाई में इमारतें, सड़के, मूर्तियाँ, चित्रित भांडे, मुहरें, साजो-सामान और खिलौने मिले हैं। मोहनजोदड़ो की विशेषता उसकी उन्नत जल निकासी प्रणाली और नगर नियोजन है। यहाँ की खुदाई में मिले अवशेष उस समय की सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नति का प्रमाण देते हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता को लगभग 5,000 साल पुरानी सभ्यता माना जाता हैं। इसमें दो सभ्यताएँ हड़प्पा सभ्यता (पंजाब प्रांत) और मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित) प्रमुख हैं।सिंधु घाटी सभ्यता को विश्व की सबसे पुरानी सुनियोजित नगरीय सभ्यता माना जाता है। हड़प्पा में तो रेल लाइन बिछने की वजह से ज्यादा खुदाई नहीं हो पायी मगर मोहनजोदड़ो में विस्तृत खुदाई की गई । मोहनजोदड़ो की खुदाई का कार्य सन 1922 में राखलदास बनर्जी ने उस समय के पुरातत्व विभाग के निदेशक सर जॉन मार्शल के कहने पर किया।

मोहनजोदड़ो (मुर्दो का टीला) उस समय की ताम्रकालीन सभ्यता का सबसे बड़ा शहर था । जो करीब 200 हेक्टर क्षेत्र में फैला था और जिसकी आबादी लगभग 85,000 रही होगी । ऐसा माना जाता हैं कि अपने समय में मोहनजोदड़ो , घाटी की सभ्यता का केंद अर्थात राजधानी रही होगी। लेखक जब मोहनजोदड़ो घूमने गए तो वहाँ घूमते हुए उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे कि वो चुपके - चुपके 5,000 वर्ष पूर्व की सभ्यता में पहुँच गए हैं। लेखक कहते हैं कि ताम्रकालीन शहरों का सबसे बड़ा शहर अपनी बड़ी-बड़ी गलियों और इमारतों के बल पर , आज के महानगरों को भी मात देता हुआ नजर आता है।

मोहनजोदड़ो शहर "टीलों" पर बसाया गया है। ये टीले प्राकृतिक नहीं है बल्कि छोटे-छोटे मानव निर्मित टीले हैं जो कच्ची - पक्की ईंटों के बने हैं। ऐसा सिंधु नदी के बाढ़ के पानी के प्रकोप से बचने के लिए किया गया था। यहां की चौड़ी -चौड़ी गलियाँ एक दूसरे को समकोण पर काटती है। यहाँ के लोगों को ड्रेनेज सिस्टम (जल निकासी) के बारे में अच्छी जानकारी थी। हर घर में जल निकासी की उत्तम व्यवस्था देखने को मिलती है। जल निकासी के लिए नालियां बनाई गई हैं जो ढकी हुए हैं।

यहाँ के सभी घर पक्की ईंटों व लकड़ी से बनाए गए हैं जिनकी दीवारों काफी मोटी हैं। घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर न खुल कर पीछे की तरफ खुलते हैं । मुख्य सड़क पर बैल गाड़ियां चला करती थी। संयोग वश हमारा चंडीगढ़ शहर भी इसी तर्ज पर बना हुआ हैं।

पूर्व दिशा में "अमीरों की बस्ती" बनी हुई हैं जिसमें बड़े - बड़े घर , चौड़ी सड़कें , अधिक कुएँ आदि हैं । यहां के लोग अपने सभी कार्य आपसी तालमेल से करते थे। लेखक के अनुसार यहां के लोग व्यापार करते थे। इन्हीं लोगों ने दुनिया को उन्नत खेती करना सिखाया। यहां पर एक विशाल कोठार भी हैं जिसमें कर के रूप में प्राप्त

अनाज रखा जाता था। यहां कपास , गेहूं , जौ , ज्वार , सरसों , बाजरा , चने , खजूर , खरबूज , अंगूर आदि की खेती के प्रमाण भी मिले हैं।

इस सभ्यता को अधिकतर विद्द्वान "खेतीहर और पशुपालक सभ्यता" मानते हैं । यहां लोहा नहीं पाया गया लेकिन पत्थर (सिंध) व तांबे (राजस्थान) के इस्तेमाल से कृषि के औजार बनाने के सबूत मिले हैं।

माना जाता हैं कि यहां के लोग बड़े ही शांतिप्रिय थे क्योंकि यहाँ हथियार जैसे कोई उपकरण नहीं मिले हैं। सैनिकों के सबूत भी नहीं मिले हैं । दुनिया का दूसरे नंबर का सबसे प्राचीन कपड़ा (सूती कपड़ा) यहीं से प्राप्त हुआ है। पहला प्राचीन कपड़ा जॉर्डन से प्राप्त हुआ था।

नगर में एक 40 फुट लंबा और 25 फुट चौड़ा व सात फुट गहरा जलकुंड भी है। माना जाता है कि यह किसी विशेष अनुष्ठान के लिए प्रयोग किया जाता होगा। इसकी दीवारें पक्की ईंटों से बनी हुई हैं। इसके पास ही आठ स्नानागार भी हैं। जलकुंड में गंदा पानी न जाये , इसकी भी व्यवस्था की गई है यानी साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा गया हैं।

जलकुंड के पास ही एक कुआँ भी हैं जहां से शायद जलकुंड में पानी आता होगा। इसके अलावा यहाँ 700 कुँए व कई तालाब भी मिले हैं जो पक्की ईटों से बने हैं। यह संसार की पहली सभ्यता हैं जिसने कुँए खोदकर भूमिजल निकाला। इसीलिए सिंधु घाटी सभ्यता को "जल संस्कृति" भी कहते हैं।

लेकिन सिंधु घाटी सभ्यता में न तो कोई भव्य राजमहल मिला और न ही कोई भव्य मंदिर या पिरामिड मिला। इस संस्कृति की खास बात यह थी कि यहां पर किसी तरह की कोई भव्यता या दिखावा नहीं दिखाई देता हैं। यानि मोहनजोदड़ो , सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा नगर है फिर भी इसमें भव्यता और आडंबर का नामोनिशान नही है।

यहाँ धातु एवं पत्थर की मूर्तियां एवं बर्तन मिले हैं जिसमें चित्रकारी की गई हैं। मोहरे , खिलौने व अन्य साजो सामान आदि की वस्तुओं भी मिली हैं। यहाँ पर मिली एक नर्तकी की मूर्ति , राष्ट्रीय संग्रहालय (नई दिल्ली) में रखी हैं। यहाँ पर मिली 50, 000 से अधिक चीजों दुनिया के अलग - अलग संग्रहालयों में रखी गई हैं ।

मोहनजोदड़ो में एक प्राचीन बौद्ध स्तूप भी है मगर यह कनिष्क कालीन है। इसी के बारे में जानकारी लेने राखलदास बनर्जी यहां आए थे। लेकिन जब इसे खोदा गया तो इसके नीचे उन्हें 5,000 साल पुरानी सभ्यता मोहनजोदड़ो का नगर देखने को मिला जिसकी नगर योजना अद्भुत व लाजबाब थी।

प्रश्न 1.अतीत में दबे पाँव' पाठ में सिंधु सभ्यता के सबसे बड़े नगर 'मुअनजोदड़ो' की नगर योजना आज की नगर योजनाओं से किस प्रकार बेहतर थी? उदाहरण देते हुए लिखिए।

उत्तर : 'मुअनजोदड़ो' की नगर योजना की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं -

यहाँ सड़कें चौड़ी व समकोण पर काटती थी। जल निकासी की व्यवस्था उत्तम थी। मकानों के दरवाजे मुख्य सड़क पर नहीं खुलते थे। सड़क के दोनों ओर ढकी हुई नालियाँ मिलती थीं। हर जगह एक ही प्रकार की ईंटों का प्रयोग किया जाता था। हर घर में एक स्नानघर होता था। कुएँ पकी हुई एक ही आकार की ईंटों से बने हैं। यह पहली संस्कृति है जो कुएँ खोदकर भूजल तक पहुँची थी।

प्रश्न 2. लेखक के मुअनजोदड़ो की नगर योजना की तुलना आज के नगरों से किस प्रकार की है?

उत्तर: - नगर नियोजन की मोहनजोदड़ो अनूठी मिसाल है; इस कथन का मतलब आप बड़े चबूतरे से नीचे की तरफ देखते हुए सहज ही भाँप सकते हैं। इमारतें भले खंडहरों में बदल चुकी हों, मगर शहर की सड़कों और गलियों के विस्तार को स्पष्ट करने के लिए ये खंडहर काफ़ी हैं। यहाँ की कमोबेश सारी सड़कें सीधी हैं या फिर आड़ी। आज वास्तुकार इसे 'ग्रिड प्लान' कहते हैं। आज की सेक्टर-मार्का कॉलोनियों में हमें आड़ा-सीधा 'नियोजन'

बहुत मिलता है। लेकिन वह रहन-सहन को नीरस बनाता है। शहरों में नियोजन के नाम पर भी हमें अराजकता ज़्यादा हाथ लगती है। ब्रासीलिया या चंडीगढ़ और इस्लामाबाद 'ग्रिड' शैली के शहर हैं जो आधुनिक नगर नियोजन के प्रतिमान ठहराए जाते हैं, लेकिन उनकी बसावट शहर के खुद विकास करने का कितना अवकाश छोड़ती है इस पर बहुत शंका प्रकट की जाती है।

प्रश्न 3. सिंधु सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था, कैसे?

उत्तर:- सिंधु-सभ्यता के शहर मुअनजो-दड़ो की व्यवस्था, साधन और नियोजन के विषय में खूब चर्चा हुई है। इस बात से सभी प्रभावित हैं कि वहाँ की अन्न-भंडारण व्यवस्था, जल-निकासी की व्यवस्था अत्यंत विकसित और परिपक्व थी। हर निर्माण बड़ी बुद्धमानी के साथ किया गया था; यह सोचकर कि यदि सिंधु का जल बस्ती तक फैल भी जाए तो कम-से-कम नुकसान हो। इन सारी व्यवस्थाओं के बीच इस सभ्यता की संपन्नता की बात बहुत ही कम हुई है। वस्तुत: इनमें भव्यता का आडंबर है ही नहीं। व्यापारिक व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है, मगर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। संभवत: वहाँ की लिपि पढ़ ली जाने के बाद इस विषय में अधिक जानकारी मिले।

प्रश्न 4. पुरातत्त्व के किन चिह्नों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि - "सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।"

उत्तर -हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रसाद मिले हैं, न मंदिर। न राजाओं, महंतों की समाधियाँ। यहाँ के मूर्तिशिल्प छोटे हैं और औज़ार भी। मुअनजो-दड़ो 'नरेश' के सर पर रखा मुकुट भी छोटा है। दूसरी जगहों पर राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना-स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि मिलते हैं। यहाँ आम आदमी के काम आने वाली चीजों को सलीके से बनाया गया है। यहाँ नगरयोजना, वास्तुकला, मुहरों, ठप्पों, जल-व्यवस्था, साफ-सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि में एकरूपता देखने मिलती है। इन आधारों पर विद्वान यह मानते है कि 'सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।'

प्रश्न 5. लेखक को मुअनजो-दड़ो में राजस्थान की याद क्यों आई?

उत्तर - लेखक को मुअनजो-दड़ो का इलाका राजस्थान से बहुत मिलता-जुलता लगा। यहाँ केवल रेत के टीले की जगह खेतों का हरापन है। बाकी यहाँ वही खुला आकाश, सूना परिवेश; धूल, बबूल और ज़्यादा ठंड, ज़्यादा गरमी। परन्तु यहाँ की धूप का मिजाज़ राजस्थान की धुप से अलग है। राजस्थान की धूप पारदर्शी है। सिंध की धूप चौंधियाती है। मुअनजो-दड़ो की गलियों या घरों में लेखक को राजस्थान का खयाल आ गया। क्योंकि (पश्चिमी) राजस्थान और सिंध-गुजरात की दृश्यावली एक-सी है। और भी कई चीजें हैं जो मुअनजो-दड़ो को राजस्थान से जोड़ जाती हैं। जैसे हजारों साल पुराने यहाँ के खेत। बाजरे और ज्वार की खेती आदि ।